—॥ ओ३म् ॥—

ऊंमर काव्य

जगत् भेष हितोपदेश

जिसको

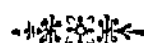
अर्जुनसिंह वर्म्माण्ने कई एक सज्जनों की सहायता से संग्रह करके प्रकाशित किया



वैदिक यन्त्रालय अजमेर में मुद्रित हुआ

संवत् १९६४ विक्रमी श्रावण कृष्णपक्ष



प्रथमावृत्ति १०००		मूल्य प्रतिपुस्तक ।) आना

☞ पुस्तक मिलने का पता—

आर्य्यसमाज जोधपुर (मारवाड़)

॥ ओ३म् ॥

विषय सूचीपत्र ।

संख्या		पृष्ठसंख्या पंक्ति
१	भूमिका	
२	ईश्वरोपासना	१—०
	संत महिमां ॥	
३	दरिया साकी महिमां	१०—०
४	श्रीहर रांमदासजी रो सुजस	१४—०
५	वीर विनोद	२१—०
६	जोधा रां रो जस	२३—०
७	छन्द नाराच तोपां रो	२९—०
८	राजपुरुषों के बत्तीस लक्षण	३६—०
९	वर्तमान समय के राजपूतों में प्रायः निम्नलिखित पसुओं के गुण पाए०	३७—०
१०	क्षत्रियों के सच्चे गुण	३७—१६
११	वर्तमान क्षत्रिय धर्म	३८—११
१२	अन्न्य ग्रन्थों के श्लोक	३८—१८
१३	नसा निवारण—अमल रा ओगण	४१—०
१४	तम्बाकू रो खण्डन छप्पय	४८—२१
१५	दारू रा दोस	५१—५
१६	व्यभिचार की बुराई	५४—०

संख्या	पृष्ठसंख्या पंक्ति
१७ छप्पनारी छोरा रोल	५८—०
१८ सन्तासन्त सार की भूमिका	८६—०
१६ सन्त असन्त सार के दोहे	६१—०
२० छन्द गगर निसांणी	६२—५
२१ खोटे सन्तों का खुलासा	१००—०
२२ असन्तां री आरसी	१०४—०
२३ सन्तांरी सोभा	११०—०
२४ कवी के मर्सिया	११६—०
२५ गीत सावझड़ो	११७—०
२६ राग सोरठ पश्चिमी	१२६—०
२७ श्रीमान् स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज का संक्षिप्त जीवन चरित्र	१३०—०
२८ भजन घुड़ दोड़	१३३—१६
२६ राग भैरव प्रभाती सन्त विषय	१३४—२०
३० राग आसा	१३६—४
३१ राग सारंग	१३७—११
३२ राग प्रभाती	१३८—७
३३ कलदार करामात	१३६—३
३४ (ढूंढाड़ का ढंग) मसकरी की मा	१४४—०

संख्या	पृष्ठसंख्या पंक्ति
३५ कवित मूर्तिपूजा	१४६–१७
३६ अनार्यों के लक्षण	१४८——०
३७ किसनिया रा सोरठा	१४६–१६
३८ राजिया रा सोरठा	१५०–७
३६ दानिया रा सोरठा	१५१–११
४० महाराजा श्री १०८ ईडर नरेश की प्रशंसा में ४ दोहे	१५२–२
४१ छप्पय-विदेशियों की चतुराई	१५२–१२
४२ चारणां रो धर्म	१५२–१६
४३ फुटकर विषय	१५३–११



॥ ओ३म् ॥

भूमिका

महाशय गणों ! इस पुस्तक के छापने का मुख्य कारण यह है कि कविवर शिरोमणि महाशय श्री ऊमरदानजी की काव्य रचनां (जिस में व्यभिचारादि दुर्व्यसनों का खण्डन और शूरवीरतादि शुभगुणों का मण्डन हास्यरस पूरित अच्छी प्रकार से किया हुवा है) जो जगत् में जाहिर होकर लोगों को लाभकारी होवे। इसको हमारे दूरदर्शी कतिपय सज्जनों ने छपवाना अति उपयोगी समझ कर भण्डारीजी श्री चादरमलजी साव की हवेली पर श्रीयुत कविवर महाशय श्री नवलदानजी कवि के ज्येष्ठ भ्राता के निमन्त्रण से निम्नलिखत सज्जनों ने जो के भण्डारीजी श्री चादरमलजी, कविवर नवलदानजी, हाकम साहब कृष्णलालजी, स्वांमी श्री रघुनाथपुरीजी महाराज, लोढा हणवतचन्दजी साव, महाशय श्री लक्ष्मणजी आर्य्य वर्म्मा आदि उपस्थित हो कवि के सर्व काव्य को देश हितकारी समझ कर एक कमेटी द्वारा कमेटी के चन्दे से छपाना निश्चय किया था। परन्तु नजानें किस कारण से उपरोक्त सर्व सज्जन महानुभावों ने इस देश-

हितैषी कार्य्य में विलम्ब कर सर्वथा ही छोड़ दिया। इस पर मैंने वडे २ श्रीमान् राजा महाराजा सेठ साहूकार वो साधारणजनों की रुचि देख कर विचार किया कि इस महोपकारी कार्य्य को शिथिल डालने का कारण क्या है। इस विचार को लेकर कतिपय कमेटी के सभ्यों हीं से प्रश्न किया कि आपने अपने विचार को शिथिल क्यों डाल रक्खा है? यदि कोई उसका विशेष कारण न हो तो मुझे आज्ञा दें। क्योंकि कवि ने अपनी उपस्थति में मुझे केईवार कहा था कि यदि मेरे सच्चे मित्र हो तो मेरा काव्य यदि में न छपा सकूं तो तुम (कोई छपा) देना तो क्या में छपाडालूं इसपर उन्होंने हर्ष प्रगट कर अपनी सम्मति प्रकाशित की और कहा कि तुम छपादो। तव मैंने उन्हीं की सहायता से संग्रह कर के अथ३ा कविवर श्री नवलदानजी सींघवी श्री परागराजजी आर्य्य लक्ष्मणजी वर्म्मा थांनवी श्री शिवदानमलजी सांड मोहनलालजी वोरूंदा निवासी श्री जुगतीदानजी के सुपुत्र सवलदानजी वो मेसदानजी आदि महाशयों को मेरी ओर से अतिशय धन्यवाद है कि जिन्होंने ग्रन्थ का संग्रह कराया है। और विशेष धन्यवाद है श्रीमान् पूज्य स्वामी रघुनाथपुरीजी महाराज को कि जिन्होंने तन मन से सहायता देकर इस पुस्तक की पूर्ति की=शम् ॥

पाठकों से प्रार्थना ॥

सज्जनों इस पुस्तक में मेरी अयोग्यता से अथवा छापे की भूल से अति ही अशुद्धियें रह गई हैं यहां तक की कहीं २ तो अर्थ का अनर्थ हो गया है इस के लिये मैं सब से करबद्ध क्षमा मागता हूं । क्योंकि इस पुस्तक की काव्य रचना अपने ढंग में अनोखी है यादि कोई विद्वांन् पाठक मेरी अशुद्धियों को सुधार कर पढेंगे तब तो कवियों के कंठ का श्रृंगार हरी जनों के हृदय का हार और जाति उन्नति चाहनें वाले क्षत्रियों के लिये तो खास नीति का नमूना हैं । फिर तो इस पुस्तक की प्रशंसा करनां मानों सूर्य्य भगवान् को दीपक लेकर देखना है ॥ इति शम् ॥

द० अर्जुनसिंह वर्म्मा



ओ३म्

अथ ईश्वरोपासना।

छन्द शिखरिणी।

हरी ओ३म् प्रांनी जुगति नहिं जांनी धृग हहा।
मनां हांनी ठांनी मुगति नहिं मानी मृग महा।
विहांनी वो वानी विमल विलखानी वक वृथा।
कथी ना कल्यानी। कुटिल कालि खानी कवि कथा॥ १॥
अनादी एश्वर्य्य व्रतति वर वर्य्य व्रति बुधा।
महेश्वर्य्या भागी कवन वल त्यागी श्रुति मुधा।
परा निष्ठा २ विपादि सु अनिष्ठा पग परी।
परा काष्ठा २ वह कवन काष्ठा मग परी॥ २॥
नमांमीं सांमर्थ्य प्रवल वल व्यर्थ्य प्रभुविनां।
विसुद्धि रुद्धिसी चकत ममबुद्धि विभुविनां।
विनादी वादी तें विकृतप्रतिवादी नहँ वदें।
मदादी मन्वादी प्रथम पति आदि मथ मदें॥ ३॥
न जानामी नामी विहस वर वामी वल वदें।
अनादी स्रष्टी ये सुगम यह वृष्टी कम सदे।
स्वरस्वत्या दिव्योती सुर गुरु प्रव्रत्ती यश सभें।
अहम्भो वव्दयामी सकल जगस्वांमीं अस अभे॥ ४॥

निदांनीं निद्नांनि निगम गम छांनीं नित नई ।
दिवांनी दिव्यांनी देव गत जांनी गत दई ।
त्रया नेता राखे असत नहिं भाखे अतत्रपा ।
कवि को वाखांनें कछुक हम जांनें तव कृपा ॥ ५ ॥
सुखार्थी स्वार्थी जे स्व सुख दुख प्रार्थी वच सदें ।
चढे जी विद्यार्थी विसद परमार्थी वच वंदें ।
प्रचन्ड ब्रहमन्डः प्रचुर भुविमण्डः प्रद प्रभो ।
वितन्ड प्रोदन्ड प्रनत दुख खन्ड प्रद विभो ॥ ६ ॥
ध्वनातीवागधारा धर्म धुनिधारा धपधपें ।
सुनाती स्वीसारा सगुन गुनि सारा सप सपें ।
तनाती निस्तारा त्रगुन विस्तारा तपतपें ।
जनाती जोगारा जगत उजियारा जपजपें ॥ ७ ॥
दिगन्तां लों दोरें सचल मन मोरें मुदमुदी ।
विदान्तो भंभोरें विषय विष वोरें वुदवुदी ।
पछारें पापों को त्रृतप तापों को त्रुटितले ।
मिलावें मेधा को विधि विधि निसेधा को फत मले ॥ ८ ॥
निकाई छाई तें प्रगर प्रभुताई सिख नखा ।
समष्टी व्यष्टी तें सजन दिव्य दृष्टी ऋपि सखा ।
धरे तूं धारे तूं परज प्रत पारे धन धनी ।
सबहि को सहारे प्रलय लय धारे करसनी ॥ ९ ॥
अखन्डा ब्रह्मन्डा अखिल इकदेसी तव अगे ।
जराहा आहा तूं अखल सब देसी सब जगे ।

रचे तूं ढाहे तूं नियम जुत चाहे फिर रचे ।
नचावे जीवों को निडर निज वाह्यान्तर नचे ॥ १० ॥
अणूं तें व्याणूं तें ब्रहदल विभूतें अति विभू ।
तुजे नहिं जानें को सुहृद स्वसु जांने भलत्रभू ।
कहें क्या ध्यावेधी कहनन आवे कुल कुले ।
मदादो मायावी तुम रुहम भावी सम तुलें ॥ ११ ॥
नमांमी तो माया चलत नहिं दाया सुदनरो ।
धुरो पाया शाया अटल मठ छाया धर धरो ।
गजारोही वाजी पदन हथ आजी गत लगे ।
अयोशा योशाजी अनग जिम वाजी गर अगे ॥ १२ ॥
तुंहीं करता धरता भवन त्रिय भरता हित तुंहीं ।
तुंहीं नाही मरता अभय भयहरता नित तुंहीं ।
तुंहीं ग्याता ज्ञेय प्रकतिव विग्याता पद तुंहीं ।
तुंहीं ध्याता ध्येय व्रति मति विख्याता प्रद तुंहीं ॥ १३॥
तुंहीं धू विख्याता उदर ग्रभ त्राता अन तुही ।
तुंहीं भूसो भाता मुदर अनदाता धन तुही ।
तुंहीं माता ताता भईन निज भ्राता भल तुंहीं ।
तुंहीं दाता खाता अचल अनदाता वल तुंहीं ॥ १४ ॥
न भाग्नी वायू लों जल धरानि आयू इन नहीं ।
महात्मनु तेरे हें अवर नहिं मेरे इन मही ।
धरा काया माया दुलभ कर दाया दुत धनी ।
घरी नहिं भूलूं तूं जन्म भर भूलो कृलघनी ॥ १५

रशोनादी गादी विलसनरमादी हितरख्यो ।
लग्यो स्वादो स्वादी उपकृत प्रमादी नहि लख्यो ।
दई तेरी देही विषय वपुने ही नित भज्यो ।
कृताघ्नि मोसो को परमप्रिय तोसो पति तज्यो ॥ १६ ॥
लजा जी आती हे स्वमति घबराती सब लरें ।
रहे जाकी रोकी त्वरित अयलोकी तथ तरें ।
अरूं में एकाकी थुरन मत थाकी इन अगें ।
लखूं में खांचूं तो प्रबल ठग पाँचूं भग लगें ॥ १७ ॥
भई कष्टी यामा व्यशन मन भांमां श्रुत भरे ।
महा अराती मारें अतन तन जारें नहँ मरें ।
तज्यो जान्यो २ तिमहिं हम मांन्यों दुख तथा ।
बड़ाई तेरी हे इम हिंकर मेरी गत पथा ॥ १८ ॥
हितू सेवा पूजा अवर नहिं दूजा अहम में ।
नहिं नेमा प्रेमा यम नहिन तेमा हित दगन में ।
नियन्ता यन्ता ना चपल चित चिन्ता भन चुके ।
प्रचेता चेताना जियत हम प्रेता बन चुके ॥ १६ ॥
अवे खुलि आंखें अधम मुख भांखें विस अचें ।
गोविन्दो ना गायो प्रगट फल पायो पिख पचें ।
चिते होतो चेतो गहन नभ देतो मन गसा ।
रशाधी क्यों रोती ह. ह. ह. किम होती दुरदसा ॥ २० ॥
कृसीकारी बोवें सिटल घर सोवें सुख करें ।
जने वालें रोवें जुलख सुख जोवें दुख दरें ।

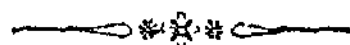
करी जेसी पाई अकल अब आई जब कहें ।
दिधा काई धाई दुकृत दुखदाई कब दहें ॥ २१ ॥
क्षुधा प्यासा त्रासा दुसह कुर आसा दुख खगें ।
अधर्मी धारी हें सर्व सुखकारी मुख अगें ।
अकेला वेलाया करत नहिं केला दम दमें ।
रहे नैनों रेला तुमरु हम भेला कबरमें ॥ २२ ॥
सियालू उनालू विमल वरसालू सब सुखी ।
दयालू हुं देवा भजन विन भेवा द्रप दुखी ।
महा खूंनी मूंनी अकल अच भूंनी इन दिनां ।
धरा धूनी २ सकल जग सूंनीं विधु विना ॥ २३ ॥
छिता आयू छीजे कवन गत कीजे तुम कहो ।
रजा व्हे सो भाखो सरम मत राखो सब सहो ।
जरा लारे जारे सुमति नहिं सारे कवि कही ।
कृपा वेगी कीजे अलख लख लीजे सब सही ॥ २४ ॥
अबें स्वथा अर्थी वकत नह व्यर्था अति यही ।
अयोनी योनी की विरती चित होनीं रचियही ।
सभी अच्छे सांई हमहिं भल नाहीं हरि सुनों ।
गुनें गारी भारी बकश हितकारी मुझ गुनों ॥ २५ ॥
रसा रूठो २ अलख इक रूठो मत रहे ।
हमारी देखे ना विरुद निज लेखे वठ वहे ।
तिहारे द्वारे पें पल २ पुकारें तन तचें ।
विना तेरी घेरी मुरख मति मेरी नहिं वचें ॥ २६ ॥

जरासी जाखुं में हुषिक नहिं राखूं जिय जरे।
महा वैरी मेरो घमड घन घेरो मन मरे।
विले हें मोहादी विशम विशयाशी विष विलें।
मिलें मोज्ञांनादी विमल मति ध्याना दिक मिलें॥ २७॥
वधे भक्ती श्रद्धा भवतर्न स्पर्धा धृति वधे।
वशेत्रो जिज्ञासा अगम गम आसा वृति वधें।
व्यभ्यासी वेराग्य प्रनत अनुराग्य प्रति वधें।
वधें धेर्य्या लम्भी तव चरन लम्भी व्रति वधें॥ २८॥
गुनाली गाऊंमैं पुनः नापिछता ऊंपथ परूं।
कुपथ्यादि कार्टू धर्म पथ थार्टू गथधरूं।
प्रातिज्ञा लेता हूं पुरुष ब्रह्म वेत्ता श्रुत पगूं।
भगा सक्ती वक्ती पिशुनकुल व्यक्ती द्रुत भगूं॥ २९॥
किसी की हांनी में मनुष्य पन जांनीं नह करूं।
प्रमानीं पांनी को धर्म अभिमानीं पद धरूं।
स्वईशरो सा शूरा विघन कर चूरा वस वनी।
भरोसा पूराहे दुलभ नहिं दूरा दृढ मनी॥ ३०॥
वसे तूं रोमाली कवन थल खाली तुज विनां।
लखां सें चोलाली कल कि वल शाली अज किनां।
स्वइच्छा शच्छा तें इतर नई इच्छा सद सुखी।
अभे दिच्छा दीजे समुख मुख भीच्छा उन मुखी॥ ३१॥
समाधी साधूं में अवर न अराधूं उर अरू।
नउंनारें लाधूं दसम निज द्वारे धुन धरूं।

प्रथा प्रज्ञा पागे मगन मन आगे पुनि पकी ।
विभू नाहिं बीसारू टिकट जिम सारू इकटकी ॥ ३२ ॥
सधे जात्री सीठी सुदिन हम मीठी धुनि सुनें ।
गुनें स्टेशन जातें इमहिं हम आतें गुन गुनें
दुरेना दे सुर्मी दहन पट ऊर्मी दुस मनां ॥।
रविन्दू परातें श्रवत सुभधारा सुख मनां ॥ ३३ ॥
महात्मा आत्मा ए परम परमात्मा हिल मिलें ।
झिलें जीवोद्योती झगमगत ज्योती झिलमिलें ।
मुनी ताके छाके सुख रु दुख थाके चलमही ।
अपूर्वी आभावो लखत ऋत पूर्वी फल लही ॥ ३४ ॥
चंहूनाष्टोंसिद्धि निलज नव निद्धी नह चहूं ।
कहूंनां रिधीकी विविध बल बुद्धि नह कहूं ।
विड़ोजा खोजा सो नहिंन हम बोझा सह सकें ।
सम्म्राटी माटी सी विषम दुख घाटी कह बकें ॥ ३५ ॥
लगेना कोशैया मलन सुभ शैया मन लगें ।
पटीरा परादी नहिंन चित चीरादिक पगें ।
नहिं मोती माला नहिन छक हाला सुचि नहीं ।
नाहिं नारी प्यारी बचन छिन्दगारी रुचि नहीं ॥ ३६ ॥
त्रवर्गा स्वर्गा नहिन अपवर्गा दिक तकें ।
न नरका धरकाती दुगत नहिं छाती धक धकें ।
मरे सो जन्में हे जगतगत जन्में फिर मरें ।
तुझे नहिं जानें तें मरन भय मानें डर डरें ॥ ३७ ॥

महा मोका आया मनुष्य तन पाया बुध मिली ।
हरी तोरी ओरी हुलस हिय मोरी सुधहि ली ।
हितो पाशी आशी दास अभि लासी हिय हर्‍यो ।
परूंनां पासी में अलख अविनासी लख पर्‍यो ॥ ३८ ॥
हमें भव उतरनो है नहिंन कछु करनों हित कहें ।
चिदानन्दी चन्नों मरन पुल शन्नो चित चहें ।
तिहारी अष्टी पें अमिय कर वृष्टी तन तजूं ।
कुदीष्टी दिष्टी को भसम कर इष्टी हरि भजूं ॥ ३६ ॥
नमो शान्ताकारी अमर अघहारी हरि नमो ।
नमो चान्ताकारी अजर जर हारी जरि नमो ।
नमो दन्तापाती धर्म धुर जाती धव नमो ।
नमो ध्वान्ताराती दलद दुखघाती तव नमो ॥ ४० ॥
नमामी सर्वेसा सिलख लय शेषाच्चर नमो ।
नमो सर्वज्ञात्मा परम परमात्मा वर नमो ।
नमो सृष्टा स्वष्टा अगम उतकृष्टा अह नमो ।
नमो श्रेष्टी जेष्टी मुदित परमेष्टी मह नमो ॥ ४१ ॥
नमो अग्राह्ययारू श्रवन पुट सारू सत नमो ।
नमो लोका ध्याचा भूत विजय लच्या पत नमो ।
नमो विश्वाधारी अनल अघहारी विस्वन्तर नमो ।
नमो भूर्भुव स्वः प्रवन सुत विस्वम्भर नमो ॥ ४२ ॥
निराकारो कावे कहत नहिं आवे तन नमो ।

नरि धारो धारो जपत जस गावे जन नमो ।
नमो भेवा भेवा शरन भव देवा मुनि नमो ।
नमो गर्वाहारी नृगुन गुनधारी गुनि नमो ॥ ४३ ॥
प्रभू अज्ञा दीनी ग्रहन कर लीनी स्तुति पढी ।
विषे शान्ती २ कव उंमर शान्ती हिये बढी ।
नृभेस्तुती जागी लगन धुन लागी जक नहीं ।
स्वयं भू ध्याऊं में परमपद पाऊं सक नहीं ॥ ४४ ॥





ओ३म्

संतमहिमा ॥

(दरिया सा की महिंमां)

छन्द त्रोटक—वस राह्यण वास सुवास विभु,
प्रगटे दरिया निजदास प्रभु ।
भवतारन कारन नेंह भरी,
धुनिया कुलमें धिन देह धरी ॥ १ ॥
सुखमां वरणू सुखसागर की,
अपनी रुख भेख उजागर की ।
चित चाह उछाह पथा चुनिंये,
सब सन्त समाज कथा सुनिंये ॥ २ ॥
वय बाल विहाय युवा वरणी,
कटिबद्ध भयो करनी करनी ।
विमनां अनुराग विराग वह्यो,
चितवृतिये जोग प्रयोग चह्यो ॥ ३ ॥
गुनवांन कुरांन पुरांन गुनें,
श्रुतिवांन श्रुति सब शास्त्र सुनें ।
मत भेदन खेद खुवी मतकी,
सत चूंप चुभी उपनी सत की ॥ ४ ॥
फटकार हलाहल तें फिरगो,
घन आंनन्द अमृत घां घिरगो ।

मुसला पर डार सिला महती,
गुरु कारज आरज वंस गती ॥ ५ ॥
पुनिं पून्य उदय भए पूरव के,
उघरे उर अंक अपूरव के ।
सुरता विकसी सर सायन में,
परी प्रेम पयोनिधि पायन में ॥ ३ ॥
धिन पांन धुनी सिर पें धरिये,
करजोर कह्यो अपनों करिये ।
सत पेस कियो सिष सादर तें,
उपदेस दियो गुरु आदर तें ॥ ७ ॥
परमापति सागति प्रेरक की,
हहराय थके मति हेरक की।
अज एक अखंडित ईश्वर को,
जप जाप सखा जगदीश्वर को ॥ ८ ॥
नहिं ऊंचरु नीच जरा नरमें,
किल ऊर्ध अधो गति हे करमें,
बद वाट सुझावत हें बिकटा,
नर पाट पुजावत हैं नकटा ॥ ६ ॥
चिर सार यही सब प्यार चहो,
उपकार विनां नहिं पार अहो ।
तनतारे हिगो जुगती तिलहें,
मन मार हि गो मुगती मिलहें ॥ १० ॥

प्रभुदास कहायरु हाय पिनें,
निगमागम की गम नाहि जिनें,
अनखाय कमायन अंगन तें,
मरजाय भलो जग मंगन तें ॥ ११ ॥
घट दीन दरिद्र घुमावत क्यूं,
पुरुशार्थहीन पुमावत क्यूं ।
जन पें जन जाकर जोरत क्यूं,
वस विप्र पति गृह बोरत क्यूं ॥ १२ ॥
धर बाहर धारन धावत क्यूं,
कुल क्षत्रिये चोर कहावत क्यूं।
बदलाह सलाह बधारत क्यूं,
पदताह कुराह पधारत क्यूं ॥ १३ ॥
निर गर्व अखर्व न भावन में,
कृत प्रस्तुत हस्थ कमावन में।
सब धर्म जग्यो सुख सन्तन तें,
भव भरम भग्यो मुख भासन तें ॥ १४ ॥
मन शूद्र समूद्र न मापत क्यूं,
थिर शूद्र उपद्रव थापत क्यूं ।
गुरुदेव विनां नहिं पार गती,
भव भेव विनां फल फारगती ॥ १५ ॥
लिपि लापर लेख लिखावन की,
दुनियां विधि देख दिखावन की ।

परमातम को नाहिं पावन की,
बक वृतिय ब्रह्म बतावन की ॥ १६ ॥
पुनि पारन पाठ पठावन में,
गुनज्ञांन न रागनि गावन में,
चित चेन न घंट चलावन में,
हित हे नाहिं घंट हिलावन में ॥ १७॥
धुन धुर्तन में बुत धारन की,
मन मुर्तिन में सिर मारन की।
चित चेतन वहे जड़ हेत चहे,
रस हीन यथार्थ दीन रहे ॥ १८ ॥
उर संखन को टुर आवन की,
विबुधालय संख बजावन की।
घनघोर नंगारन घोरन की,
ठनकार टकोरन ठोरन की ॥ १९ ॥
तिलका कृति गारन तोरन की,
किल कंठिय का ठकठोरन की,
डफ डूंम डफोलन की रचि हें,
सुर बुद्धि सदा बिनतें चचि हें॥ २० ॥

श्री हर रामदास जी रो सुजस ॥

(छिन्द मोती दाम)

सदा सुभ सीथल धांम सुथांन,
स्वरालय शंकर धांम समान ।
वली वल वाणिज वाट विराट,
हुई हर रांम हरी जन हाट ॥ १ ॥
हरी निज चीज धरी निज हाथ,
समृद्धिय ऋद्धिय सिद्धिय साथ ।
भरे भर पूर कुबेर भंडार,
दयानिध दोसत के दरबार ॥ २ ॥
वृथा सब से बधि पच्छ विधांन,
नवों निधि ह नहिं नांम समांन ।
विना श्रम बेठत व्योम विमांण,
जनार्दन प्रेरक पुस्पक जांण ॥ ३ ॥
जपे जगदीश सजीवन जुक्त,
महा धन जे जन जीवन मुक्त ।
असन्तन जांणत अन्ध अजांण,
सनातन जांणत सन्त सुजांण ॥ ४ ॥
रसासुर सूगति में सुख रास,
दसा मिलगो गुरु जेमलदास,
सदा चित चेन हरी पद सेव,

दया कर सेन करी गुरुदेव ॥ ५ ॥
दई सुर दुर्लभ मानव देह,
अई सिख वारम् वार न एह।
नहीं थिर देह न गेह न नेह,
सही थिर थप्पहु रांम सनेह ॥ ६ ॥
अनांकर साकर आखर अन्त,
भलो भव भाग भजे भगवन्त।
भजे नहिं मूरख जे भगवांन,
सही नर शूकर श्वांन समांन ॥ ७ ॥
सखा जगमें सत संगत सार,
विनां सत संग न ब्रह्म विचार।
धरा सतसंग विनां नहिं ध्यांन,
विना सतसंग न ज्ञान विज्ञान ॥ ८ ॥
रहे सतसंग हरी अनुराग,
विनां सत संग न त्याग विराग।
सदा सत संगत लच्छण सीख,
असद् गुरु सद् गुरु लच्छण ईख ॥ ९ ॥
जरे मनसा मथणी मथ जांण,
करे कथणीं कथ कै गुजरांण।
कुजीव कुसंग कहां कुसलात,
विजोगण पीव सजोगण वात ॥ १० ॥

महातम धेव रती नहिं गम्य,
गती निगमागम गेय अगम्य ।
अलौकिक लौकिक सार असार,
हरी जन जांणत जांणण हार ॥ ११ ॥
अजोंणिय जोंणिय जाणिय ईश,
सुरासुर स्वांमिय कांधर शीश ।
नरोत्तम उत्तम तार नितार,
चराचर चिन्तन हार चितार ॥ १२ ॥
निरन्तर अन्तर में निज नाथ,
स्वयं धर ध्यांन धनन्तर साथ ।
जरा रिपु भेसज के ढिग जाय,
महाजन जांमण मर्ण मिटाय ॥ १३ ॥
वधा वपु जाहिर पथ्य विवेक,
अनर्गल बाहिर भीतर एक।
विनां दुख भजन नीच विहार,
निरञ्जन अञ्जन बीच निहार ॥ १४ ॥
सदा क्षणभंगुर जांण सरीर,
सखा सुख सागर सूंकर सीर ।
हिय धर नांम अमोलक हीर,
विस्वम्भर सम्बर बांधव हीर ॥ १५ ॥
तुरातुर नींसरजा भवतीर,
विषे विष वीसर जावर बीर ।

हमें गुरु वायक मां बुधहार,
सभे निज नायक की सुध सार ॥ १६ ॥
मनी मन माह रकार मकार,
लगा धक धूंनन की ललकार।
स्वभाविक ज्ञान गरीबिय साज,
नमो पद रांम गरीब नवाज ॥ १७ ॥
पिता मह नामहिं नांम प्रचार,
अहर्निस रांमहिं रांम उचार।
महाशय आशय नासय मूढ,
गहो गुरुशब्द गिराशय गूढ ॥ १८ ॥
गुरू गम अन्तर में गल तांन,
धरयो हर रांम निरन्तर ध्यान।
तपी तपतें सुरता इकतार,
धपी रसनां रस अमृत धार ॥ १९ ॥
बध्यो बलधी गल कंज विकाश,
प्रभा परि पूरण प्रेम प्रकाश।
हृदे हुय नांम हली हम गीर,
सवी रग रोम खुली सुख सीर ॥ २० ॥
लग्यो मग मांह जलंधर लीण,
पग्यो पुरुषारथ मेरु प्रवीण।
युंही खट चक्कर भेद अथाव,
पंळे त्रिपुटी तुरिया पद पाव ॥ २१ ॥

अजीत लगी जिय जोग अगाध,
सुजीत लगी धुन ध्यांन समाध।
समाधिय में सब साधन सिद्ध,
परा पतऽहे पर ब्रह्म प्रसिद्ध ॥ २२ ॥
सिली सुरता घस सिद्धि सँमंद्ध,
पिली प्रभुता वस बुद्धि प्रवंद्ध ।
हिली जुगती जस वार हजार,
मिली मुगती दश द्वार मंझार ॥ २३ ॥
परीणत स्वास उसास प्रभाव,
प्रिया प्रिय पास पलोटत पाव ।
रमें रस रास विलास सुरंग,
परस्पर प्रीतम प्रीत प्रसंग ॥ २४ ॥
व्यथा विरहाग वियोग विहाय,
सवागण भाग संयोग सुहाय ।
अनाग्रह भुल्लित आंन उपाय,
प्रफुल्लित ज्यूं पतनी पति पाय ॥ २५ ॥
सही सुख जोत ही जोत समाय,
रही नहिं अन्तर में अँतराय ।
करे निज हंस दुहु निज केल,
मिल्यो परमातम आतम मेल ॥ २६ ॥
तज्यो त्रिगुणातमको त्रक तंग,
सज्यो निज स्वांमिय सेवक संग,

उदे हुये पूरव पुराय अंकुर,
दुरी दुवधा दुख दालद दूर ॥ २७ ॥
समा पत भोग न रोग न सोग,
जपन्त निकेवल केवल जोग ।
प्रत्यागम भो लिव भक्ति प्रदीप,
समागम सो शिव शक्ति समीप ॥ २८ ॥
क्रतू करुणां मय धू करतार,
भणें भव भाजन भू भरतार ।
उधारक धारक लोक अपेप,
सुधारक तारक शेप विशेष ॥ २६ ॥
स्वभाविक साश्वत स्वच्छ स्वरूप.
अनिच्छ अभिच्छ प्रतच्छ अनूप ।
अधोत्तज अत्तज आदन अन्त,
अखंड प्रचंड अनादि अनन्त ॥ ३० ॥
अनन्त पराक्रम तेज अनन्त,
अनन्त हि वीरज ओज अनन्त ।
महा वल सागर मेह मुदार,
उजागर नागर नेह उदार ॥ ३१ ॥
न गोचर रूप न रंग न रेख,
अगोचर अमृत कूप अलेख ।
थिरा नभ थावर जंगम थांन,
महा पद आपद मांन अमांन ॥ ३२ ॥

प्रभा कर प्राणिय मातर प्रांण,
विभा कर थांणिय ते निरवांण ।
अचंभ लस्यो परचे घट एह,
वस्यो हर राम स्वदेह विदेह ॥ ३३ ॥
जठे जम काल जरा नहिं जोर,
घुरे घट नाद अनाहद घोर ।
दुरास दुमार न त्रास दुकाल,
सुधा जल बारह मास सुकाल ॥ ३४ ॥
अनंग न अंग उमंग इलोल,
हरी पद संगम गंग हिलोल ।
निरा लिय नीति उदंगल नय,
मुनी किये मंगल जंगल मांय ॥ ३५ ॥

—o—

॥ ओ३म् ॥

(वीर विनोद)

(छन्द त्रिभंगी)

अंजनी ग्रभ आयो. सुमन सुहायो गुनि गुन गायो ग्यान गती,
पावन सुत पूरो दूसन दूरो समहर सूरो जन्म जती।
करनीं सुभकारी धर जस धारी भव भयहारी भीम भुजा,
ले लाल लङ्गोटी काछकछोटी धारन मोटी लाल धजा ॥ १ ॥
सुग्रीव सहाई दृढ सुखदाई प्रभु रघुराई संग पुरयो,
बाली से बंका देरन डङ्का किस्कन्दा में जंग जुरयो ।
अंगद दल अन्दर कूधर कन्दर बन्दर जुत्थन में विचरयो,
सम्पाति निसंका धरीन सङ्का पुनिलङ्का में कूदिपरयो ॥ २ ॥
छविसौधन इच्छन मिल्यो भभिच्छन वोध करयो,
धरपावन धोकन आय असोकन हिय सिये को सोक हरयो।
मुन्दरी ढिग मेली ईख अकेली कंचन वेली सरसकरी,
काया कुमलांनी जाहर जानी है सहना नी हाथ हरी ॥ ३ ॥
वन बाग विध्वंसक भोफल भक्षक राक्षस रक्षक मार रुप्यो,
जयकार जमायो अक्षय आयो कुल रावन क्षयकार कुप्यो ।
दस मुख सुत मारयो दन्त विदारयो वीरहकारयो कटक वली,
वपु पास बन्धानों सरन सन्धानो जाहर जानो ज्वाल जली ॥४॥
जब लङ्का जारी परज पुकारी देख शुरारी दाह दह्यो,

सीता सुध लायो स्यांम सुनायो काम कमायो वाह कह्यो।
नृप सेतु वन्धाई करी चढाई सेना आई पारसुखी,
गढ लंका घेर्‍यो खल वल गेर्‍यो पुरदल पेर्‍यो दार दुखी ॥५॥
सुर भये सुखारे दैन्त दुखारे राक्षस हारे राररची,
ललकार लगाई सार सँभाई वार वजाई मार मची।
दस कन्धर दाट्यो कुल कुल काट्यो फिर मुख फाट्यो हीय हर्‍यो
सुत भट संहारे मुगदर मारे त्रिहस वकारे जीय जर्‍यो ॥६॥
घिर चर लंका पुर कंपत थर थर घर २ असुरन कीर घली,
संकट के साथी प्रवल प्रमाथी विकट भयानक वीर वली।
लिछमन के लागी अंग अभागी सक्ति सुभागी सहायकरी,
द्रोणागिर लायो उर धर दायो धीर सजीवन आंन धरी ॥७॥
जय २ छित छायो मृतक जिवायो कंठ लगायो काकु सती,
रंग राज रिझायो हिये हुल सायो मोदन मायो डर असथी।
गुन केते गाऊं चित सकुचाऊं पार न पाऊं ताकत क्यों,
रघुवर के संगी हे वजरंगी छन्द तिभंगी छाक छक्यो ॥८॥

ओ३म्

(जोधारां रो जस)

(छन्द नाराच जोधां रो)

कहूं भटा समत्थ कै दया समत्थ सत्थदे,
समत्थ अत्थ साधने समत्थ में समत्थ जे ।
अखंड ब्रह्म चर्ज के सिखंड खंड अज्ज के,
सधीर ही हमीर से गंभीर भीर गज्जते ॥ १ ॥
धुरा सुघाट २ के कपाट छाति के धरें,
घनं प्रतच्छ तच्छ के प्रदच्छ स्वच्छ के घरे ।
सुसील सभ्य साच्छरं श्रुति प्रमान सोहनें,
अभंग पुत्ति ओज के मनोज मूर्ति मोहनें ॥ २ ॥
अमोल तोल मोल के प्रचोल चोल अंख के,
अडोल डोल कन्ध के विडोल ने असंक के ।
विसाल भाल कन्धरा रसाल छत्ती सुत्थरे,
रहें पदग्ग रेखतें सुदेशतें अरी डरे ॥ ३ ॥
प्रचंड बाहु दंड के व्हे प्रचंड पिंड में,
घमंड को घटायदे मिलन सो भूमंड में ।
डरेन सिंघ डोलते स्व डोलते करावने,
करोल टोल २ कोल २ ते करावने ॥ ४ ॥
प्रगल्भ कंठ पेल देत कंठ कंठि राव को,
दुहत्थ हत्थ ठेल देत हत्थल प्रदाव को ।

ऊनें न भीत और को अभित व्हेन् त्यां अगे,
भगेन वाह जान दे नवाह नावरे भगे ॥ ५ ॥
मिलेन मीढ २ के अरीढ रीढते अरी,
करेन ईढ और की ऊने न ईढ को करी ।
चरित्र में विचित्र ज्यूं पवित्र में पवित्र जे,
अमित्र के अमित्र त्यूं सुमित्र के सुमित्र जे ।। ६ ॥
अद्वेस और ऐश्वरीय्य जीवना जरयोकरे,
मान्याकरे मंतव्यकी कर्त्तव्य को करयो करे ।
श्रम प्रत्यूह व्यूहपें समश्नु भ्रूह लों भिरी,
क्रमें प्रत्यूह ओपमा दुरूह दन्त लीं किरी ॥ ७ ॥
प्रमांन शास्त्र मात्र को स्वपंडतं स्वयम् पढे,
गुनीन अग्ग मन्यव्हे व्यभ्यास अन्य में वढे ।
प्रकांड पाठ २ के त्रकर्म कांड को करे,
तने त्रई उपासनां ब्रह्मांड ज्ञान तें तरे ॥ ८ ॥
अधर्म कोन आदरे सुधर्म कों सदादरे,
करे नहीं अन्यायकर्म धर्म न्याय को धरे ।
सुसीख हेति सीखके तमाम तीख आत में,
भले सरीक ईख के न भीख मांगते भमें ॥ ९ ॥
चिराय नव्य २ नम भव्य २ में चहे,
द्विजन्म पाय हव्य कव्य हव्य वाट में दहे ।
धरा सुधेनु क्रूय २ दूय २ भूधरे,
क्रतूस मान राज सूय भूय २ भूकरे ॥ १० ॥

उचार काट अन्य वाट वेद वाट में बहे,
निराट दाट घाटकी नहीं सम्राट की सहे।
बिठोर बाहु दंड कों उदंड ठोरते वहें,
बिघोर शस्त्र अस्त्र झाट टाट फोरते वहें ॥ ११ ॥
विजत्त बांन जेत के निसांन घोरते बहे,
रसा अरे तरे तको मुखग्ग टोरते रहें।
अगोट चोट देन कों सघोट गोट पें अटे,
हँसे प्रखोट मोट को विफोट कोटतें हटें ॥ १२ ॥
खरां कहे खरा २ धरा धुजावते बहें,
विकारि हें कुजा २ भुजा खुजावते वहें।
विवक्रि वक्रह्ले अवक्र चक्र चेंठते बहें,
बिवक्र लंब कन्न के दुकन्न एठते वहे ॥ १३ ॥
नटालि दे भटालि की जटालि एंचते नृभें,
अरीन मुच्छ २ दें स्वमुच्छ खेंचतें अभें।
चलाक रूठ पूठ के अंगूठ चांपते चलें,
हरांमखोर संड मूंड झूड कंपते चलें ॥ १४ ॥
निनाद बन्ध अन्ध के दुकन्ध त्रोटते नदें,
महांन लंठ संठ के कुकंठ घोटते मदें।
हलाकुझेल सेलते सदा उथेलते हलें,
चितार पेट भेट के चपेट मेलते चलें ॥ १५ ॥
विलोक लोक लोक को प्रलोक लोकको वदें,
तृलोक सोक मेट देत फेट दे जदे तदे।

लखान मान जान के समांन सस्त्रतें लरें,
अमान थान आंनतें प्रमांन अस्त्रतें परें ॥ १६ ॥
स्व वंस को सुधारनें विजाति को विगारनें,
मनें सु मृत्यु वारलों त्रनें समांन मारनें ।
दयालु ह्वैन सर्वथा वृथा दया मया दटें,
मिलेजु गुंड मुच्छ मुंड थुंड ऊठ कें थकें ॥ १७ ॥
सनिद्धि स्वामिं के सदा पिनिद्ध पां परथा करें,
लरें नहीं सुलोक तें कुलोक तें लरथा करें ।
अरेंन ओर के अगें अराकतें अरथा करें,
डरेंन तीन काल दीन बाल तें डरथा करें ॥ १८ ॥
बडे सरोस जोस में भरोस अथनें वहें,
रसा अरोस कोसजों भरोस ओर के रहें ।
थिरा उथत्थ थत्थ तें विथत्थ थत्थतें वहें,
अ्सी प्रतत्थ तत्थ के प्रतत्थ तत्थते रहें ॥ १९ ॥
वसू प्रचंड दंडतें प्रचंड दंडतें वहें,
वितंड चंड दंड दें अदंड छंडते वहें ।
विमोह मोह २ में विद्रोह द्रोहिपें वढे,
कृतांत भांत कोह में कुकोह कोहिको कढें ॥ २० ॥
सुचाल चाल २ के कुचाल चालहैं कदा,
अरी विचाल चाल हैं अचाल चाल हैं अदा ।
त्रकाल तें त्रकाल से त्रकाल काल हैं तदा,
सुकाल में दुकाल से अकाल काल हैं सदा ॥ २१ ॥

ठठोर सत्रु गोठ की जबांन गोठलें जबें,
वडी मठोठ में वहें दुहोठ दन्त तें दवें ।
चलेंन पून दून तें स्वऊंन लूंन तेलचें,
वचैन लून्न भून्न तें स्व खून्न चून तें वचें ॥ २२ ॥
सिकार सूर सिंघ की हकार हत्थतें हनें,
वनें अतुल्ल जोध पें न कुल्ल गोध से वनें ।
हटी पुमाय हत्थतें हलें घुमाय हत्थि को,
अखेल अन्त खेल में खिलाय दें प्रमत्थि को ॥ २३ ॥
बिसाद तोप साद में वहेन हत्थि हत्थतें,
हसें समत्थ कामदेय हत्थिको स्वहत्थतें ।
हलें हमल्ल मल्लकों करीन ढल्लपें हलें,
वहेन ढल्ल घल्लकें स्वढल्ल और की वनें ॥ २४ ॥
घिरें मथोल घोलतें न ओल २ में घल्लें,
चिरें चन्दोल गोलतें चमूह रोल में चलें ।
अनत्थ नत्थ २ लें अनत्थकों निभायलें,
रजैं करे निहालरें खिजें खुधाल खायलें ॥ २५ ॥
मुरें अतोल झोलदें अमोल वोल मिट्ठतें,
दुखी पिछांन दान दें अखे विहांन इट्ठतें ।
विद्वांन दांन मांन दें विधानव्हे विज्ञानतें,
निदांन रीझ खीजतें सुचीज दे निधांनतें ॥ २६ ॥
वहेजु वाट २ में पिता २ महा वहें,
सुखी सुवाटतें सदा दुखी दुवाट में दहें ।

सरीर संसकार सार नीर छीर से सनें,
विध्वंस वेरि वंस को प्रसंस नीयतें वनें ॥ २७ ॥
धरा सुजांन पाव फूंक फूंक के धरा करें,
लखे समीप काल को न कालतें डरा करें ।
निकाम आम भांम को अनुंग्गिया भजे नहीं,
निदांन प्रांन दांनलों प्रतग्गिया तजें नहीं ॥ २८ ॥
रसा विधान ध्यान के विज्ञांन ज्ञांन के रहें,
वपू अधीर पीर में न नीरनैंन तें वहें ।
दुकार ब्रह्म द्वार व्हें हकार इक्क हत्थदें,
दुराग्रही विवाद वाद को सवाद सत्थदें ॥ २९ ॥
परीश्रमीं परास्त दें विजेतव्हें परीश्रमीं,
परीश्रमी न नास्तव्हें अजैतहें परीश्रमीं ।
करें पलाप जाप के त्रताप में अनुंद्यमीं,
लगें दरिद्र लच्छपें समुद्र लुद्र उद्यमीं ॥ ३० ॥
स्वतन्त्र मन्त्र तन्त्र सें युरोपियन्चदावदी,
खराव अज्ज २ के खुसांमदी खुसांमदी ।
कहां ब्रटेन भूतिहा जनें प्रसूति केसरी,
असेस अस देस की विसेस ख्यातिवेसरी ॥ ३१ ॥
सुभग्ग देस को जहां सुभग्ग अवतरे सही,
अभग्ग अज्ज देसको अन्देस औतरे अही ।
इला अधिक्क अच्छ की गुनी गुनावलीं गही,
वतीस लच्छ वच्छ की कवी वतीसका कही ॥ ३२ ॥

ओ३म्

(छन्द नाराच = तोपांरो)

विसाल भाल तोप को विसाल जाल विस्थुरे,
धमंक भूधुजावनीं धमंक मेघलों धुरे।
महांनरञ्ज दव्बुनी अरीन दव्बुनी मही,
कथे कवीर कही चिराव की चही चही ॥ १ ॥
तनू प्रवन्धतोपके तुरंग कन्धतेतनें,
भुजालि आलि भोलितें वहे विभा विभावनें।
धरिट्ठ में वरिट्ठ जे वहेक तिव्र सालितें,
गरिट्ठमें गरिट्ठ ते गुरे कती गजालितें ॥ २ ॥
प्रधांन गोलकप्र मोर सोर को ससंग्रहे,
उदग्ग खग्ग मग्ग में विवग्ग अव्व की गहे।
चमूय शस्त्र अस्त्रलेय दिव्य दिग्विजे चढें,
असुद्ध ऊम्म रेसकी विसुद्ध भारती वढ़े ॥ ३ ॥
घन वरोल वाहनी हरोल हीय हारसी,
हलें हयन्द हेसतें सजें गयन्द सारसी।
खलांत केतु पन्थिदान्ति पन्तिपेत्र भेघ्रुलें,
तुखार पक्यू रेखरे अत्तक्यूरेन्नभेतुले ॥ ४ ॥
उडे तुरंग तें रजी समग्ग धावती अटे,
छके छकांन छावती छिता विछावती छटे।
नहे निसांन नादत्यूं तमाम धांम में तनें,

वितांन आंन रेनु को अचांन भांन केवने ॥ ५ ॥
दिसा २ नमानलोप मान नीय की दगे,
अड़ोल चक्र नक्र मक्र आंन नीय व्हे अगे ।
विपत्थ पत्थ २ से विपत्ति को वहावनी,
खिजे समत्थ मत्थ पें समत्थ अत्थ खावनी ॥ ६ ॥
खरे अराति खेत चेत हेत कों खतावनी,
सदा अवोध वोध २ सोध कों सतावनी ।
चजें कुचार वार कों सुचार में चलावनी,
हलें हसन्ति हिक्कली हरम्म को हलावनी ॥ ७ ॥
गिनो मदन्ध सोख जोख गोख को गिरावनी,
फवें फिसाद मन्द कों सू फेट दे फिरावनी ।
हरांम खोर चोर कों कुहक्क दे हरावनी,
कराल कंठ कंकनीय डंक्कनी डरावनी ॥ ८ ॥
घुराय गेल की छटा कटी घटा घुमावनी,
पराति धार छार में पछार के पुमावनी ।
तमाम शत्रु संग की प्रतापतें तपावनी,
खलांन कोम भोम खोम तोम को खपावनी ॥ ९ ॥
लसें प्रताव तावदे लदाव को लदावनी,
सदैव वेरि मींच बीच मींच कों सदावनी ।
भिरे अभित्ति भित्ति को सवुज्ज के भवावनी,
विनां प्रस्वेद वित्त कों करोर हां कमावनी ॥ १० ॥
निमग्ग ठग्ग बूतियग्ग अभको गमावनी,

जहांन आंन मांन जोर सोर ते जमावनी।
रही प्रतछ रच्छसी दुगच्छ गच्छ दव्वनी,
लगें विपच्छ लच्छपें भुजाग वच्छ भच्छनी ॥ ११ ॥
घुमाव लोल गोलकी प्रघत्त बोलती घलें,
हरोल गोल धोलदें चन्दोल चोलती हलें।
विथ्यं जनेच्छनी प्रचोल गोल घोलती वहें,
सतोल तोल २ सें वितोल तोलती वहें ॥ १२ ॥
दुसो अमोल खोल देत झोलते खगोलको,
भ्रमाय तोल मोल लेत गोल दे भुगोल को।
प्रसिद्ध पोल पार हेत टोल दे पहार में,
अडोल डोल टोल लेत अप्पनें अहार में ॥ १३ ॥
चलें चन्दोल चेंन में हरोल दग्गती चलें,
दरारहेत दुग्ग को चिरार चुग्गती चलें।
प्रकोट चोट मार कोट लोट पोट ह्वेजहां,
प्रवेस कोट रोक देन वप्य वप्परे कहां ॥ १४ ॥
उडें कपार काटतें विलग्ग अग्गला अटें,
फवें वुरा लचालतें अकाल खुप्परी फटें।
अवज्ज बुज्ज के अरें सुबुज्ज बुज्ज वेरला,
कहे इला भली सला बचें नहीं किला किला ॥ १५ ॥
वना विहार ते वहे मना कियन्हे मनें,
अभत्त भेडनी अयांन नित्त रंडनी जनें।
इसा महा अभग्ग भग्ग रग्ग गावते रमें,

नमें सुसील आवते दुसील जावते नमें ॥ १६ ॥
अनेक पें अनेक हत्थ इक्क सत्थ अच्छटे,
पहार छार २ वहे प्रवी प्रहार पच्छटे ।
भुजम्ब अम्ब खासकें प्रवम्ब वम्ब की भरें,
प्रलम्ब लम्ब थम्ब पें प्रपत्त सम्ब सो परें ॥ १७ ॥
पिनिद्ध वद्ध २ रे अनुद्ध अद्धरे परे,
दुसार पार दुग्गव्हे प्रदुग्ग पद्धरे परे ।
अखंड खंड मंड पें अदंड दंड दंडव्हे,
हिकंड खंड दो नहीं अखंड खंड खंड व्हें ॥ १८ ॥
प्रचंड लोट पिंड के धके प्रचंड के परें,
वितुन्ड तुन्ड २ लों भगे व्रभंडव्हे भरें।
प्रजोध जोध कुप्पिके प्रधाव धप्पि देपरें,
महा गरूर फूर शूर दूर २ तें मरें ॥ १६ ॥
अभीति विति कूंड देय चंड मूंड ज्यों अरें,
अकाल चंड चंडिका व्रखंड संड लों तरें।
सुनूर सूर संभके निसंभसे हसेनचें,
कृपालि कालिका अगें न वालि वालिका वचें ॥ २० ॥
महा गंभीर धीर वीर इकतीर तें मुरें,
दुखी अमीर नेंन नीर मीर पीर तें दुरें ।
चलन्ति फेर २ पें विलैर जैर की चलें,
हठी अमीर से प्रवीर हैर ठैर के चलें ॥ २१ ॥

धरा प्रचार धूर में समग्ग वग्ग कों धरें,
मुरें अराति मग्ग में न पग्ग अग्ग में परें।
कृपा कटाच्छ गोलकी विलोल जाहि धांक में,
रजै विक्रांत सान्त में कृतान्त आन्तमें रमें ॥ २२ ॥
प्रयाति चोल गोल की भनंक पोल में परें,
धपे प्रसूर पूरलें वियांन थांन में धरें।
चिरे वहित्थ हत्थि के चिकार चूर चूर ह्वै,
भिरे भटालि भाल में भिखार भूर भूर ह्वै ॥ २३ ॥
छिता अफंड छंड के प्रचंड ज्वालतें छिपें,
चंडाल चोर अरीन पें महा चिंडाल सी चिपें।
भगें कनूर भूरिभैंस तूर तूर ह्वै भजो,
मरे विशूर शूर के मकूर कन्न ले मजो ॥ २४ ॥
वगोव गोहहाँ अबैन वाह वाहते वनें,
भगो २ अहासु भीरु चाह चाहतें भनें।
मुरें अवांन वांनले प्रयानमें कठा मठा,
अरेन प्रांन फायदें विफायदे सठा सठा ॥ २५ ॥
धुरीन तोप की अलात घोर सोर पें धरें,
प्रदीपमान हेति अच्छ स्वच्छ अच्छ में परें।
दुदान्ति कामनी धरे जरे अरी जुदा जुदा,
हमन्ति ह्वै मुदामनी गुदांत मीह सें गुदा ॥ २६ ॥
धुनान्ति सोर घोर तें असिम्म अग्गि उच्छरें,

जरे अगालि ज्वालतें तथा तरावली तरें ।
अभग्गि अग्गि के अगे सुभग्ग भग्गते सुनें,
उदग्ग पग्ग विग्गि आसु पग्ग लग्गति उनें ॥ २७ ॥

दुजीह क्रूर मूर को प्रदूर दूरती दहें,
विधांन वक्र चक्रतें प्रचक्र चूरती वहें ।

निपांन थांन २ में विघूर पूरती वहे ॥ २८ ॥

विशाल गोल कावली कपाल झम्पती ह्वे,
विसाल व्याल व्याल २ में विहाल दम्पती ह्वे ।
मदे अमांन मांनतें विमांनु ढप्पती ह्वे,
वदें पसू वसू मती विनम्म कम्पती ह्वे ॥ २९ ॥

गिराव गड्ड २ को विगड्ड छड्डती ह्वे,
वकारि बैरि वृन्दको डकार डड्डती व्हे ।
वडे निसंक बंक की विबंक कढ्ढती व्हे,
रेहसु संक रंक की विसंक वढ्ढती व्हे ॥ ३० ॥

चिदन्ध मन्द कन्ध के सुवन्ध खोलती चले,
हिलोल अन्ध धुन्ध के प्रवन्ध डोलती हले ।
वृथा अजुज्ज जज्जतें प्रजुंज्ज जंडती वहे,
विसाद पूंज्ज २ के प्रभूंज्ज गुंज्जती वहे ॥ ३१ ॥

छली विजत्ती तात्तिकी सुछत्ति छोलती वहे,
विजे तनं तरेतपे सजेल बोलती वहे ।

रिपुग्ग देत्य कंससी अजेत सुल्लती रहे,
विजेत वीर बंसकी विनेत घल्लती वहे ॥ ३२ ॥
नरेस देस २ के निदेस मानते रहे,
रुखारनो पहार वा सुसार आमते रहे ।
खरे प्रचीस खेतते करें त्रतीस दे कढ़ें,
प्रतीस का असीस दे कवी त्रतीस का पढ़ें ॥ ३३ ॥

ओ३म्

(राज पुरुषों के ३२ लक्षण)

(चाणक्य नीति से बीस)

श्लोक = सिंहादेकं वकादेकं शिक्षेत् चत्वारि कुक्कुटात् ।
वायसात् पञ्च शिक्षेच्च षडश्वांन् त्रीणि गर्दभात् ॥ १ ॥

सिंह से = प्रभुतं कार्यमल्पं वा तन्नरः कर्तुमिच्छति ।
सर्वारम्भेण तत्कार्यं सिंहादेकं प्रचक्षते ॥ २ ॥

वक से = इन्द्रियाणि च संयम्य वकवत्पण्डितो नरः ।
देशकालबलं ज्ञात्वा सर्वकार्याणि साधयेत् ॥ ३ ॥

मुर्गा से = प्रत्युत्थानं च युद्धञ्च संविभागञ्च बन्धुषु ।
स्वयमाक्रम्य भुक्तञ्च शिक्षेच्चत्वारि कुक्कुटात् ॥ ४ ॥

वायस से = गूढमैथुन चारित्वं काले कालेच संग्रहम् ।
अप्रमत्तमविश्वासं पञ्च शिक्षेच्च वायसात् ॥ ५ ॥

श्वान से = बह्वाशी स्वल्प सन्तुष्टः सनिद्रो लघु चैतनः ।
स्वामि भक्तश्च शूरश्च षडेते श्वांन तो गुणः ॥ ६ ॥

खर से = सुश्रान्तोऽपि वहेद् भारं शीतोष्णं न च पश्यति ।
सन्तुष्टश्चरते नित्यं त्रिणि शिक्षेच्च गर्दभात् ॥ ७ ॥

दोहा = कोयल कीर कच्छप कुर्ज, मोर हंस मृग मींन ।
मधुमाखी कीडी सिंनी, लख कपोत गुण लींन ॥ १ ॥

———o———

(वर्तमान समय के राज पुरुषों में निम्न लिखित) पशुओं के गुण पाए जाते हैं ॥

(छप्पय)

कुकड़ारो गुण काम काक गुण भक्षण कीनों,
जुध करण रो जोध श्वान गुण सांप्रत लीनों।
अण पढियां में आंण खरो गुण लीनो खर रो,
धाड़ा चोरी धर्म घमड गुण कीनों घर रो।
मद पांन मगन मांदा रहे देय हकीमां दानजु,
परणी तज पातर रखे खरा गुण री खांनजु ॥ १ ॥
पढे फारसी प्रथम मलेच कुल में मिल जावे,
अङ्गरेजी पढ अवल होटलां में हिल जावे।
पच्छ ग्रहे प्रालब्ध नहीं पुरुपारथ नेडो,
चोखे मत नहिं चाय भाय आवे मत भेडो।
नित असल त्याग सीखे नकल छाजन व्हे व्हे छाणणी।
कुलखवणां मांय मोटी कसर आदत खोटी आंणणी ॥२॥

(क्षत्रियों के सच्चे गुण)

दोहा = काछ दृढ़ा कर वरपणा, मन चङ्गा मुख मिट्ठ।
रण शूरा जग वल्लभा, सो हम चाहत दिट्ठ ॥ २ ॥
रंगलक्षण रज पूत बात मुख झूठन बोले,
रंगलक्षण रज पूत काछ पर नार न खोले,

रंगलक्षण रज पूत न्याय धर तुल निज तोले,
रंगलक्षण रज पूत अडर केहरि इम डोले ।
पिरजा पालण पुत्री सम केहण प्रांण कपूतरा,
मादक अलीण मेले न मुख प्रिय लक्षण रज पूतरा ॥३॥
हरष सोच नहीं हिये सुजस निन्दा नहीं सारे,
जीवण मर्ण जिहांन लग्यो हे प्राणीं लारे ।
पाप पुन्नरो पूर अनादी चलियो आवे,
कमज्या जेड़ी करे भली भूंडी भुगतावे ।
रथ रूपी पिञ्जर रचक सकल नियन्ता सांम रो,
और रो डर नहीं डर अवस रात दिवस उण रांमरो ॥४॥

(वर्तमान क्षत्रिय धर्म)

दारू मांस दपट्ट अमल अण माप अरोगे ,
चमड़ पोसरे चींठ भँवर मादक सुख भोगे ।
परणीं नें पर हरे गेर सुत गोदी धारे,
जोवन मद में जौध सटक सुर लोक सिधारे ।
शशशिकार तीतर सुभट कुर्जा चिड़ी कबूतरा,
भायां सूं नित उठ भिड़े परम धर्म रजपूतरा ॥ ५ ॥

(अन्य ग्रन्थों के श्लोक)

नात्यन्त सरलै भाव्यं गत्वा पश्य वनस्थलम् ।
छिद्यन्ते सरलास्तत्र कुब्जास्तिष्ठन्ति पादपा ॥ १ ॥

ऋण शेष श्चाग्नि शेषः शत्रु शेषस्तथैव च ।
पुनः २ प्रवर्तन्ते तस्माच्छेपं न रक्षयेत् ॥ २ ॥
आदरात् संग्रहते शत्रूणां शत्रुमुद्दरेत् ।
पादलग्नं करस्थेन कण्टकेनैव कण्टकम् ॥ ३ ॥
नविश्वसेत्कुमित्रे च मित्रे चापि न विश्वसेत् ।
कदाचित्कुपितो मित्रो सर्व गुह्यं प्रकाशयेत् ॥ ४ ॥
प्रजानां रक्षणं दानमिज्याध्यायन मेवच ।
विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समासतः ॥ ५ ॥
मनु अ० १ श्लो० ८९
शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यम् युद्धे चाप्यपलायनम् ।
दानमीश्वर भावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम् ॥ ६ ॥
भगवद् गीता अ० १८ श्लो० ४३

पर स्त्री मातेव कचिदपि न लोभः परधने न मर्यादा भङ्गः क्षणमपि न नीचेष्वभिरुचिः । रिपौ शौर्यं धैर्यं विपदि नियमस्संपदिसतां इदं वर्त्म भ्रातर्भरत नितरां पालय प्रजाम् ॥७॥

॥ वाल्मीक रामायण से ॥

(चौपाई)

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी ।
सोनृप अवस नरक अधिकारी ॥ १ ॥
रहहु तात अस नीति विचारी ।
सुनत भरत अति व्याकुल भारी ॥ २ ॥

(वर्तमान छन्द पद्धरी)

मिलके लख गोरन मती एक,
इत एक २ की मत अनेक।
तए रेल तार उद्धम अपार,
गौर्व इत विद्या विन गिंवार ॥ २ ॥

॥ ओ३म् ॥

(नसानिवारण)

दोहा= नसां काडलीवी नसां, नसां कियो सब नास ।
नसां नाखिया नरक में, अड़ी नसां में आस ॥ १ ॥

(ईश्वरस्तुति)

छन्द छप्पय=नमहः सच्चिदानन्द भक्त वत्सल भय हरता,
शाश्वत असरण सरण करण कारण जग करता ।
निराकार निरलेप निगम निरदोस निरञ्जन,
दीरघ दीन दयालु देव दुख दालद भञ्जन ।
अखिलेस अनूंपम एक अज अजरामर महिमां अजय,
निरविकार नाथ निरभय निपुण नारायण करुणानिलय ॥१॥

(दोहा)

चालाक तो चंडू पिए, भोला पीए भंग ।
अलीण सूं आगा रहे, रजपूतां नें रंग ॥ २ ॥

रंग देऊं वां नरां कालुरा पूरा काठा,
रंग देऊं वां नरां मालु देवण हिय माठा ।
रंग देऊं वां नरां शधर छाती रा शूरा,
रंग देऊं वां नरां प्रगट वातरा पूरा ।
आंखियां लाज लीधां अडर सारा काज सुधारणां,
मादक अलीण मेले न मुख वांरा लेऊं वारणा ॥ २ ॥

(मोगों से माफी और अमलरा अवगुण)

मोटी माफी मांग अमलदारां सूं अड़स्यां,
देश सुधारण दशा लाख विध थांसूं लड़स्यां ।
करस्यां वात कवूल भली सू भापण सुणस्यां,
गुणरी है नहिं गरज चोज कर औगुण चुणस्यां ।
कर प्रगट दोष खंडण करूं धीठ रोश मत धारज्यो,
आजरो वखत भूंडो अमल वडपण राज विचारज्यो ॥३॥
महांनें गिणज्यो मूढ अमलियां ओगणगारां,
करणा पर उपकार लार थांनें ललकारां ।
निज कीनों थे नास कहो किण रक्षा करस्यो,
वात खरी हे बपण मोत विन नाहक मरस्यो ।
जग नीच कांम कीनों जिको सुख थे लीनों स्वादरो,
दुख दूर हुवे सव देसरो उमर कहे सो आदरो ॥ ४ ॥
धोवां २ धूड़ वगावो अंमलां वांसे,
मती लगावो मैल सैल मन धरो न सांसे ।
मिलै कठै मनवार किनारो भेलो काठो,
ओतो महा अभाग भाग में लो मत भाटो ।
हित अमल कियां भूंडी हुई अकल कठेगी आपरी,
इण मांय कई गाडी अहो वडी हेमांणी वापरी ॥ ५ ॥
देखो विगड़ी देह डोल विगडगो देखो,
विगड़ गई सव वात लारलो ले कुण लेखो ।

समा विगड़गी सँग नीत विगड़गी न्यारी,
देस विगड़गी दसा क्यारी सूं पीगी क्यारी ।
अमलरी आस मांही उलझ समझदार निस दिन सिड़ो,
आ वात अजब उलटी अकल विन विगड़्या क्यूं विगड़ो ॥६॥
सरदा घटगी सँग वेग विरदा पण वलियो,
निकलण रो रथ नहीं कलण ऊंडी में कलियो ।
मगर पचीसी मांय डोकरो वण गो डाकी,
डांगड़ियां निठ डिगे थिगे टांगड़ियां थाकी ।
ऊठगी उमेद बैठण ऊठण भेदन पेला भालियो,
बहु गरथ देरू वांदी विपद करगो अनरथ कालियो ॥७॥
सल पड़ियोड़ा सिथल गोल मुख हे गलियोड़ा,
गलियोड़ी छिक गुमर गिरे ढूंगा गलियोड़ा ।
गलियोड़ो सब गाथ गजब कांधो गलियोड़ो,
अमल खाण नें अजे वल मूंडो वलियोड़ो ।
अण हूंत सरब गलगी उमग भूंडो भलोन भालणों,
गल गयो देस हा हा गजब गजबी तज्यो न गालणों ॥८॥
दिलता २ दोय मिलो मत दुःख सु भाई,
मिल मुरदां मनवार करो मत बुरी कमाई ।
सोचो ऊंडी समज मिनक तन कद २ मिलसी,
काल अगन घृत कली पींड इक दिन पीघलसी ।
अब गरब कियो अमला में तन देखेला तासनां,
जनमान्त फेर जासी नहीं बुरा करमरी वासना ॥ ६ ॥

कँवला लांबा केस जुगत सूं पटी जमावे,
दांतां चूंप दिराय मूंह जुत आंख भमावे,
तेल फूल तम्बोल अतर फूंवो अटकावे,
खांगा पेच झुकाय लार छोगो लटकावे,
नख चख श्रृंगार साजे निलज रांचे गलियां रातरा,
परनार भोगी भोग पुरुष पगधोवे परवातरा ॥ १० ॥
आंदा हिये अजांण गांठरा पूरा गेला,
इण खोड़ा में अवस देख पग अपणो देला ।
पिस्तावेला पूत रात दिन वे रोवेला,
गटका लीनां गले जलम कीनां जोवेला ।
घर मांय पेठ छांनों गिटे लेतही कांनों लागता,
हा जगत मांय हांसी हुसी जासी नरकां जागता ॥११॥
करम फूटगा कहो कवणनें जायर केवां,
दुचया मांहिं दुसह रात दिन धुकतां रे वां ।
जोय २ जी जले कोय नहिं लागे कारी,
इष्ट वडेरां असल नसल विगड़गी न्यारी ।
नागरा झाग पीवे निलज झांक आग चख में झड़े,
अंगरेज मुलक दावण अडे अजूंवां सूं आथड़े ॥ १२ ॥
जूंवां सिर में जुले जुले डाडी में जूंवां,
जूंवां कपड़ां जुले मिले छुटकारो मूवां ।
मरे नहीं झकमार तिके जीवणनें ताता,
मारे जूंवां मसल रहे रंगिया नख राता ।

तावड़ वेठ तिग २ तिरे रमों सिकारां रावतो,
ऊतरे अमल बस व्हे नहीं जूंवांरो ईजावतो ॥ १३ ॥
ध्यांन न विद्या धरे ध्यांन नहीं देस सुधारे,
धर्म ध्यांन नहिं धरे अलवता ध्यांन उधारे ।
धनरो धरेन ध्यांन ध्यांन जसरो नहिं धारे,
ध्यांन न वैरी धरे ध्यांन दुख हू नहिं धारे,
सत्थरां सोय सारा सुखी चवरी ढुलतां चोसरां ।
तन लगन तीसरां रीतिकां संगत ध्यान मन मोसरां ॥१४॥
सूली दार सुभाव त्रिशूल दार तैयारी,
मरज दार होय मांग आंणी कहुं दार उधारी ।
जमींदार हुय जमीं करज दारी में कलगी,
ईजत दार अन्धार गरज दारी में गलगी ।
छलदार होय छाती छड़े अमल दार मुर दाररी,
और तो दार सब आमिले कमी एक कलदाररी ॥१५॥
होको हींडे हाथ लटक तो खाड़ियो लारे,
पड़ २ पादे पाद नोक जिम पड़ी नगारे ।
चिलम पोस चालतां बाजे टोकर बादोड़ा,
खिणें हालतां खाज धुन्धक आफू ऊगोड़ा ।
घर त्याग करण पर घर विघन आठों पहोर ऊंघारिया,
जीवनें देत गोता जिके पोते दार पधारिया ॥ १६ ॥
घेता वाले बाड बागरां वाले बेता,
गात्रा गूदड़ गहर रातरा वाले रेता ।

मूंछां डाढी मूंह फूकदे वाले फींटा,
धुक २ दे नित धुवां कालजा करदे कीटा ।
चिलमियां करण चित चाहसूं टलण हार नहिं टालणां,
अमालियां तणां सिधान्त आप वले जठा तक वालणां ॥१७॥
कपड़ा काला कीट नीठ ऊठ निरोधे,
मींट अमलरे मांय शींठ कुचरे जुंसोधे ।
भलेन उतरे भींट धीठ जद सीस धुणावे,
प्रात भाट पादरी सार पांवडा सुणावे ।
कर कांम इसो मानें कुसल लाजन आवे लेसरी,
अमलियां करी देखो अवे दुसह दसा इण देसरी ॥१८॥
मित्र जाणियों अमल हुवो दुसमण हतियारा,
किसा २ में कथूं थिरा में ओगण थारा ।
अङ्ग में उठे अनङ्ग लगन खोटी पुल लागी,
मारिया जीयां मांय एक नहिं रिया अभागी ।
दिनरात दार कारा करें वहे कलेजा वीचरे,
जो पला हूं जांण तो नेड़ो न जातो नीचरे ॥ १६ ॥
माजी रोवे मांय बापजी रोवे बारे,
भाई रोवे भला सुणें नहिं किणरे सारे ।
वद २ कड़वा वेण सेण रोवे सिर खावे,
दुसमण ताली देत हँसे जीवे हरखावे ।
जिण अमल कियो देखो जुलम कांमण रोवे कांमनें,
गांव गिणे नहिं गेले नें ज्यूं गेलो गिण न गांव नें ॥२०॥

धारी अन्धा धून्ध अन्द आदत आलियांरी,
दपट उडे दुर गन्ध गन्ध नासे गलियांरी ।
समजाऊं सो वार समज रा घाटां शांई,
जगत कमावण जाय मुरड़ बठे घर मांई ।
आखरी लाख मांने न ओ खाक करी म म खालरी,
कुण सुणें साल मोटी कथा हाय व्यथा में हालरी ॥२१॥
करेन अच्छर करम धर्म नहिं कुलरा धारे,
पलेन राखे परम सरम नहिं किणरे सारे ।
मन खावण नें मरे ढेढरी हांडी ढूंढे,
उडे नहिं असलाग माखियां वैठे मूंडे ।
परवार गयो पिस्तावणों करूं न मूंवां कन्थरो,
मांरो महा दुःख मेटवे भलो हुवे भगवन्तरो ॥ २२ ॥
गहर आंखियां गीड झपक नीचो झड़ जावे,
नाकन पूंछे नींच मांय माख्यां मरजावे ।
मूंछां सेडे मांय भरी चिपके भीनोड़ी,
अलगी कोई उघड़ी कठण कम ज्याकी नाड़ी ।
हायरे हाय फूटो हियो जतन न दीसे जेणरो,
मरजाय जदे जोखो मिटे ओधोको हे ऐंणरो ॥ २३ ॥
झरणां नासां झरे पड़े आंसू अणपारां,
अंगरे दोली आय हुवे माखियां हजारां ।
वासे कपड़ा वकन्द सर वतन जुंवां सतावे,
दस दस पेंड दुगन्ध उड़े अलगां सूं आवे ।

सेजरो नहीं एक तार सुख कहो कन्थ की कांमजी,
भवमांय इसे भरतार सूं रांड भली ओ रांमजी ॥२४॥
पिंड पर लालां पड़े तज विन गई देह तज,
सेडा सूं घर सेंग लोलथें दियो खोखलज ।
राख पछाड़ी रहे गीरख भरियोड़ा गेला,
मूंत २ नित मिती रात दिन चालत रेला ।
कहूं तो जोर लागे किसो हूं तो दुख सूं हारगी,
भरतार मती भुगतावरे निलज जीवतां नारगी ॥ २५ ॥
चोखो ओढूं चीर लाल मांहीं लुल जावे ,
अतर लगाऊं अंग पाद आगे पुल जावे ।
मेंदी देऊं सुलक मेल सूं करदे मोली,
दिवालीरे दिवस हिया में ऊठे होली ।
हाथ भटक भिभिकार हँस नाथन लेऊं नांमजी,
भव भांड इसे भरतार सूं रांड भली ओ रांमजी ॥२६॥
पीस २ पीसणों हाथ घस गया हाथा सुं,
लाय २ ईनणी माल उडगया माथा सुं ।
सींव २ सीवणों नेण आंदा हुवा न्यारा,
कात २ कातणों रातरा गिण २ तारा ।
को अमल पूर त्रों कठा सुं लाऊं कांईक लाड में;
पर वात पिह २ जास्यूं परी खावंद पड़ ज्यो खाड में ॥२७॥
छप्पय = पातर भगतण पेख परम मन में सुख पाई,
मिलियां मच्छी मार करे ज्यूं मोद कसाई ।

नकटे बूचो निरख अंग २ में उफणायो,
बोले गूंगो बोल सबद गुण इधक सुणायो ।
न्यात मेतरां मिल निपुण पांमर सांसी परखिया,
अमलिया देख भारी अधम होका धारी हरखिया ॥ १ ॥
तारत को निज तनय नारदो और सनाती,
मार अमो लक मित्र सदा उलटी संगाती ।
पादतणों परधांन गादरो सांप्रत गेटो,
असुभचले को अनुग मूतरो भाई मोटो ।
हिया सूं भीड़ होको हमें राज भलेंई राख लो,
आप सूं अरज इतनीं अवस चुपके पांणीं चाखलो ॥२॥
भरियो भरियो भणें प्रथम आरम्भ पहिचांणों,
झाड़ो झाड़ो जपे जुगत आखर में जांणों ।
चुगल सुरन्दर रो चाव टहल नारी घरटूंटी ,
मोरो माथो मेल फेर हिरदेरी फूटी ।
रांम सूं विसुख रोवण रसा धूम्रपांन मुख में धरे,
तूं देख सिकल हो के तणी क्यूंरि अकल हांणी करे॥३॥
गृद्ध नियारथो गूद चील बूथां पर चाली,
हरियो दीठां हेप हरस तीडियां हाली ।
कुत्ते दीठो करक जरख दिस खर रुख खांची,
ढोले पड़ियो ढोर कागलां दीठो कांची ।
तन अखत रोड डोले तिके. उर अन्तर सूं आफले,
इम पिमण धूंट पेछ्र उमग होका दीगं हाफले ॥ ४ ॥

कुंडलिया ॥

समज तमाकू सूगली कुत्तो न खावे काग,
ऊंट टाट खावेन आ अपणो जाण अभाग ।
अपणो जाण अभाग गजब नहिं खाय गधेड़ो,
शूकर भूंडी समज निपट निकल नहिं नेड़ो ।
बुरा पशु बच जाय अहर निस खायन आखू,
बड़ा सोचरी बात तिका नर खाय तमाकू ॥ १ ॥

छप्पय ॥

जरदो पिवण न जोग नासिका नरक निसांणीं,
मांन कलू मनवार उत्तम सब रीत उडांणीं ।
तम्माकू में तुरत धरम धन होवे हांणी,
खाणों बडो खराब बात जाहर जग जांणी ।
श्रीमुख सिंड़े सेद खानां जिसो नाक झरेज्यूं नारदो,
भव जांण नरक भोगे जकानें लांनत दे ललकार दो ।५॥

(ब्रह्मांड पुरांण देखो)

प्राप्ते कलियुगे घोरे सर्वे वर्णाश्रमेंतराः ।
तमालं भक्षितं येन स गच्छेन्नरकार्णवे ॥ १ ॥ श्लोकार्थ ॥
इस घोर कलियुग में जो तम्बाकू पीता है वह नर्क को जाता है ॥ १ ॥

(पदम पुरांण देखो)

धूम्र पानं रतं विप्रं दानं कुरुवेतियो नरः ।

दातारो नरकं यान्ति ब्राह्मणो ग्रामशूकरः ॥ २ ॥

जो मनुष्य तम्बाकू पीने वाले ब्राह्मण को दान देता है वह नरक को जाता है और ब्राह्मण गांव के शूक का जन्म पाता है ॥ २ ॥

(दारू रा दोष)

(दोहा)

दारू पर दारा दोहूं, हे तन धन री हांण ।
नर सांप्रत देखो निजर, नफो और नुकसांण ॥ १ ॥

(कवित्त)

पीथल के तोख पार्‍यो मह मुंद को मांन मार्‍यो,
बुद्ध सिंह का विगार्‍यो नीके निरधारू में ।
खून विन जेत खोयो डूंग सिंह कां डवोयो,
जोर को मरन जोयो हिये मोज हारूं में ।
तगत कां कियो तंग सज्जन कां मृत्यु संग,
कोटा पती कां अपंग ऊमर उचारूं में ।
तोप पोप ओप मारू काय अपशोप कोप,
हाय दारू तेरे दोप कांहांलां पुकारूं में ॥ १ ॥
रोग को भवन ज्यूं कुजोग को समन जानो,
दया को दमन ओ गमन गर्वाईको ।
हिम्मत को हासकारी विद्या को विनाशकारी,
तितिचा को तास कारी भीरू भरवाई को ।
ऊमर विचार सिख पाप रिख आपन में,

विपय विप व्यापन में पवन परवाई को ।
भगतन को भाई औ कसाई निज काम नीको,
शत्रू सुखदाई शूरा हेतू हरवाई को ॥ २ ॥

(श्लोक)

ब्रह्म हत्या शुरापानं स्तेयं गुर्व गना गमः ।
महान्ति पातकान्याहुः संसर्गश्चापि तैस्सह ॥
मनु अ० ११ ॥ श्लोक ५४ ॥

श्लोकार्थ—ब्रह्म हत्या शराव पीना चोरी करना गुरू की स्त्री से विषयभोग करना और ऐसे काम करनेवालों के साथ मित्रता करना यह पांच कर्म करनेवाले महापातकी हैं ॥ १ ॥

मांसभक्षं शुरापानं मूर्खाश्चाक्षरवर्जिताः ।
पशूभिः पुरुषाकारै र्भाराक्रान्तास्ति मेदिनी ॥ २ ॥

श्लोकार्थ—मांस खानेवाला शराव पीने वाला मूर्ख अर्थात् विना पढ़ा—यह मनुष्याकार के पशु हैं । ऐसे पुरुप संसार के भाररूप हैं ॥ २ ॥

(छप्पय)

चंडू चरस चलाक भंग मद पिय सो भंगी,
गांजो अमल गिंवार कांम मिल करे कुसंगी ।
धूम्र पांन मुख धरे धर्म जड़ काटे धरणी,

आठूं नसा अलीण वात सत पुरुषां वरणी।
फल पाके घर २ फिरे ठांव हाथ में ठीकरो,
पय जाटा घर ना पिये खोलण पिये खटीकरो ॥ १ ॥

(श्लोक)

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति ॥ १ ॥



(व्यभिचार की बुराई)

दोहा

विभचारी विभचार कर, कुल ध्रम खोय कुमोज ।
खूट गया इण खलक में, खुड़को हुवो न खोज ॥ १ ॥

छप्पय ॥

कीचक· वाली· कदिन· पुरुर्वा· श्रो पविपाणी,
लम्पट भये लंकेस जूत खाया जग जाणी ।
पीथल· जयचंद· प्रगट मार खाई रण मीठी,
नवरोजी परनार दिल्ली गल् गई सह दीठी ।
श्रांख हिये खोल देखो अब· जगत न सोभा जाररी,
कोटरा कोट ढहगा किता चोट लगी विभचाररी ॥ १ ॥
जिण लागां हुय जाय न्यायकारी अन्याई,
जिण लागां हुय जाय भाई रो दुसमण भाई ।
जिण लागां हुय जाय बुद्धि वाळो वे बुद्धी,
जिण लागां हुय जाय सुद्धि वाळो वे सुद्धी ।
पिण्ड रे श्रांण लागां पछे पडे सीस पेजाररी,
मेट रे मेट मोगा मरद बुरी फेट विभचाररी ॥ २ ॥
हुवे प्रथम धन हांण घणों तन पांण घटावे,
कोई न राखे कांण मांण परतीत मिटावे ।
अपजस छावे श्रांण अवल अवसांण न आवे,
जाणत होय अजांण वांण नररी विसरावे ।

तार रो नहीं सुख तेड़ में पावे दुःख अपाररो,
सार रो बांण खटके सदा नेह पराई नाररो ॥ ३ ॥
कुल नें लागे काट खाट में जूता खावे,
अंग में होय उचाट जाट जोगी बण जावे ।
घर २ ओघट घाट टाट निस दीह कुटावे,
दिल नहिं लेवे दाट लाट गंज हाट लुटावे ।
निज थाट खोय फीटा निलज साट न बूझे साररी,
आट ही वाट भागे अकल चाट लगे विभचाररी ॥ ४ ॥
गरमी होवे गात जदे वेदां घर जावे,
ओखद मूंडे आंण छेल लालां छिटकावे ।
तेल हींगरो त्याग वृद्ध नारी विल गावे,
निज इन्द्री करनास ग्यांन विन जन्म [illegible]
कांमथें इसो नीचो कियो च्यार पगां [illegible],
भज भांम गाल वट को भरयो [illegible] ॥ ५ ॥
अपणायो अपणेह पुरुष कद [illegible]
तूं कदरी पति ब्रता कन्थ [illegible] ।
ठाकर हूंतो ठीक पावड़ी [illegible],
हुं जांण तो इसी विटल [illegible] ।
अगाड़ी थूंजा आगड़ा [illegible],
एक नें एक देखो [illegible]
मात पितारो मोह [illegible]
धरे पतीव्रत [illegible]

जीमें नित्य जिमाय ताप देवे तोई तूठे,
आज्ञा जुत अरधंग रांड कवण सूं रूठे ।
नित नेम हिये भूले नहीं चाले सदा सचेत नें,
भोग नांफूट परत्रिये भजे हाय तजे इण हेत नें ॥७॥
पिंडरी गई प्रतीत मांण मिटग्यो मरदांमें,
ग्यांन मिल गयो गरद दांम रुलग्यो दरदां में ।
लात घूथ लाठियां बणी आछी वरपा वल,
जूत भेट व्हा जठे नाक हुइग्यो निछरा वल ।
विभचार मांय पायो विभो जातां जुगां न जावसी,
नित स्वाद लियो पर नार में याद घणा दिन आवसी ॥८॥
वेद न सुणियों विमल खेद पाई तन खोयो,
सांड हुय रह्यो सदा रांड रांडहि कर रोयो ।
न्याय न जांणयों नितुर निलज जांणी नहिं नीती,
निज नारी व्रत नेम रुगड आंणी नहिं रीति ।
परदार प्यार हुयगो प्रमत बिन सींगांरा चेलियां,
भौगरे मांय भँवतां भवर गयो जनम सब गेलियां ॥६॥

(दोहा)

रजपूती रई नहीं, पूगी समदां पार ।
पातरियांरा पाद में, सीज गया सिरदार ॥ २ ॥
रंड पोखांरा राज में, रुलगी भूखां रेत ।
सूंकां नित सीरा करे, दण्डन चूकां देत ॥ ३ ॥

(मोर्चा)

तीरथ जात समस्त सकल साधां मिल संगा,
रास तमासा रमें हुलस नाचे हुड़दंगा ।
सांजी मेला सांग देव राखी चन्दोली,
मिन्दर मंडी मसांण होलिका फाग हरोली ।
भागवत कथा भूतावली हिरण दरस हींडोरचा,
परवीण होय जांणे पुरुष माल जदांरा मोरचा ॥ १० ॥

(श्लोक)

न पश्यति च जन्मान्धः कामान्धो न पश्यति ।
मदोन्मत्ता न पश्यन्ति ह्यर्थी दोषो न पश्यति ॥ १ ॥

क्षुधातुराणां न बलं न बुद्धिः कामातुराणां न भयं न लज्जा ।
चीन्तातुराणां न सुखं न निद्रा, अर्थातुराणां न कुटुम्बबन्धू ॥२॥



॥ ओ३म् ॥

(छप्पन्नारी छौरा रोल़)

———o———

॥ श्लोक ॥

निरभय नारायण सुद्धी सिर नाऊं,
पर हर संशय भय बुद्धी वर पाऊं ।
सम्बत् छपनें रो केवण सिरलोको,
लोकिक लेवण ने सांमल़ ज्योलोको ॥ १ ॥
पांचो आठो दस पनरो खू पड़िया,
सतरे बीसे हय खतरे में खड़िया ।
पुलियो पच्चीसो चोतीसो चुलियो,
अड़तालीसो भी अन्तर आकुलियो ॥ २ ॥
पीढी पर पीढी पोतो जी पाया,
अगले काल़ांरा दादोजी आया ।
काल़प चावी कर भावी भुज भेटी,
मोटा गोटांरी मावीती मेटी ॥ ३ ॥
सुखसूं सूती थी पिरजा सुखियारी,
दुष्टी आतां ही करदी दुखियारी ।
जग में ऊसरियो खापरियो जेरी,
वाला विछोड़ण वापरियो वेरी ॥ ४ ॥

मांणस मुरधरिया मांणक सम मूंगा,
कोडी २ रा करिया श्रम सूंगा ।
डाडी मूंछाळा डळियां में डुळिया,
रळियां जायोड़ा गळियां में रुळिया ॥ ५ ॥
आफत मोटी ने खोटी पुळ आई,
रोटी रोटी नें रैय्यत रोवाई ।
आडी ओखळियां खायोड़ा आदा,
लाडां कोडां में जायोड़ा लादा ॥ ६ ॥
सारी सृष्टी में कुंडळ छळ करियो,
भारी हा हा रव भूमंडळ भरियो ।
वसुदा काळीरी ताळी तड़ बागी,
भिड़ियां सोनांरी चिड़ियां पड़ भागी ॥ ७ ॥
महनत मजदूरी मासक घण मोला,
बिलखा विगताळू आसक अण बोला ।
वांठां बांठां में ठांठां ठां ठरिया,
भूकां मरतोड़ा मरिया गुण भरिया ॥ ८ ॥
खांचे शूकरवत कूकर भिनखावे,
जोगा कांपण तन खांपण विनजावे ।
मुरदा मरघट में पड़िया नहिं मावे,
सिड़िया वासे सब भकरन्द भभकावे ॥ ९ ॥
आडा खाडां में भोडक अड़ चड़ता,
सन्तां आसण ज्यूं तूंवा तड़ चड़ता ।

मिढ्ढां गणणावे लावे तन लांचे,
रांम दवारा में रांडां ज्यूं रांचे ॥ १० ॥
धूम मुसांणां में निसवासुर धावे,
अन्तेष्टी आसर लख टांणां सर आवे ।
गुड़दा पेचां हुय पांमल गुण गावे,
मुड़दा मुरदां में सामल मिल जावे ॥ ११ ॥
वाका फाटोड़ा मरणो टुक वाकी,
डेहली जुलियोड़ा डुलियोड़ा डाकी,
सासा सणकावे नासां निरतावे,
जिता मरिया जुग भिभरो भररावे ॥ १२ ॥
छोरा रोलां में छपनें रस रुलिया,
पहुमीं खटरस नस दसहूं दिस पुलिया ।
तरुणी सर तंडल तरुणा पण तायो,
छोणीं मंडल में करुणां रस छायो ॥ १३ ॥
सतियां महा सतियां केतां तन सोहे,
मधुरी वांणी मुख प्रांणी मन मोहे ।
रजपूतांणी रुच शिंचांणी सिरखी,
नेंणां जल भरती सेणां थल निरखी ॥ १४ ॥
सुंदर सुकुलीणी झीणी साड़ी में,
जुलफां सपणीं जिम अपणी आड़ी में ।
सूंनी ठांणीं में सोठांणीं सोती,
रेगी विरियांणीं प्रांणीं नें रोती ॥ १५ ॥

जंगल २ में जूंनीं जणियांणीं,
धोलां धोरयांरीं धूंनी धरियांणी ।
खोटे तोटे नग कणियां वीखरगी,
माहव मोटे दुख जाटणियां मरगी ॥ १६ ॥
वेरण रसणां वस तृसणां तनताई,
आभा आंगणरी अन्न मांगण आई ।
साम्प्रत पूछी नहिं किणहीं सुख साता,
अन २ करताड़ी मरगी अनदाता ॥ १७ ॥
भूकी कीजी में सिसकारा भरती,
नांखे निसकारा धीमें पग धरती ।
मुखड़ो कुमलायो भोजन विन भारी,
पय २ करतोड़ी पोढी पिये प्यारी ॥ १८ ॥
सूकी सुदराणीं झाड़ांरे सारे,
लादी विदरांणीं बाड़ांरेलारे ।
सद व्रत करतोड़ी वर्णाश्रम सेवा,
काडे मरतोड़ी रेवा तट केवा ॥ १९ ॥
विडरी हिरणीसी फिरणी बिजकाती,
मुखड़े मुसकाती जोरो जतलाती ।
ओले भक आटा कोले ज्यूं कुयगी,
हावर भांमाणियां घर २ री हुयगी ॥ २० ॥
इत्यादिक अबला कथितार्थ ऊणी,
पहुंची प्रमदा पथ परमारथ पूर्णी ।

वांसूं कद व्हांला अगले भवऊरण,
चारूं वर्णांरी शर्णागत चूरण ॥ २१ ॥
छपनें छोरागत कीनी कुटलाई,
उलटा पलटी कर दुनियां उलटाई ।
कीरत छपनेंरी गुणिये कविराजा,
महिमां छपनांरी सुणिये महाराजा ॥ २२ ॥
धुर धर आसाड़ां अम्बर घर हरियो,
घोरा डम्बर में सम्बर घर हरियो ।
साई सर सरिता आई इकरारां,
धोरां जल़ धर सूं धाई जल़ धारा ॥ २३ ॥
भूरा भुरजाल़ा अम्बुद भल़ हलिया,
खाला नन्द नाल़ा वाल़ा खल़ हलिया ।
अवनी आधोलण अवल़ा ओसरिया,
पिड़ भिड़ प्लासी पर गोला जिम गुड़िया ॥२४॥
काल़ी कांठल़ में दांमाणियां दमको,
घण हर घेरा के घणणाटे घमके ।
छुटी आसारां कासारां छिलती,
पड़ती परनाल़ां पहुमी पिल़ २ ती ॥ २५ ॥
सम्मां २ रा जल़ कूंडल जोया,
धारा सम्मांरा महि मंडल़ धोया ।
लूवां मगलागी धरणी लल़ धायां,
मुसला मिटगा ज्यूं अंगरेजां आयां ॥ २६ ॥

धुर वालग धरणाँ लोढांले धावे,
जीमण २ नैं मोडा मनुं आवे ।
मोरां अनु मोदित लोरां लड़ लागी,
निजरां नव नीरद भ्रमनां भव भागी ॥२७॥
हरकण छाई दिस चिलकारो हरियो,
करसण करसाणियां किलकारो करियो ।
वळण हळ वेडर झळकी तन झांई,
मारिया डेडर ज्यूं हरिया मन माईं ॥ २८ ॥
हळ थळ वाखळ में वळ २ थळ हेरे,
टण मण टोकरिया वळदां गल टेरे ।
पांण पुरांणी ले पापल पुचकारे,
बापू २ कर थापल वुचकारे ॥ २६ ॥
लंगर लाजांरा तल भंगर लाडा,
गोरख गायांरा गायड़रा गाडा ।
भाई भयदाईं लागत हे भारी,
सींगां लज्जा हे सींगालां सारी ॥ ३० ॥
पीहर पतळांरा सेणांरा प्यारा,
तारंग तूटांरा नैंणांरा तारा ।
चखरा चांनणिया वितरणरा वारा,
भीड़ी भूखांरा फूलांरा भारा ॥ ३१ ॥
पाणीं जीतांनैं तूंही नित पावे,
जीवां मरतां नैं तूंही नितपावे,

केणां आखड़िया जूड़ादे खांदे ।
चेणां वलदारे राखड़ियां बांदे ॥ ३२ ॥
घण वे वीजणियां वांदण विग तालू,
लठा धोतारा खूंजा लट कालू ।
राती कोनीरी पोतड़ियां रूड़ी,
ऊनी लोवीड़ियां वगलां में ऊड़ी ॥ ३३ ॥
ओछी अंगर खियां दुपटी छवि देती,
गोड़े वरड़ीतो पूरा गावेती ।
फेंटा छोगाला खांया सिर फावे,
डोडा वेह तोड़ा डिगतो नभथावे ॥ ३४ ॥
हुरे मुरे कर नेता हलकारा,
लांबा छोगांला देता ललकारा ।
मुलके वेली चख पोलछ लख मोजी,
चेली दीठां ज्यूं साधू चित चोजी ॥ ३५ ॥
सूली नाथां सर नासां सणकारी,
फुरणी धूंधायतारासां फुणकारी ।
जूसर धाया गल आवड कड झांके,
नभ २ सा वढ नें नायां वूण नाखे॥ ३६ ॥
गोरी पणिहारी ते जो तन गाजे,
लारेधोरयांरे जणियारी लाजे ।
फोरी खातां ने गाली फटकारे,
तोरे जातां नें हाली त त कारे ॥ ३७ ॥

विनही आरां तुर मूंफाड़ा बाजे,
बेता आंणांरा फूफाड़ा बाजे ।
हाली मूंछांरा लेता हट कारा,
फिरता पूंछांरा देता फटकारा ॥ ३८ ॥
धोरा २ कर दोला विड़दावे,
धोरा धोला पड़ धोलां नहिं धावे ।
बेल़ू बेतड़री ताती बल़ बाल़ी
रेणां धोरांरी राती कराल़ी ॥ ३९ ॥
विकसी भाता ले भतवारां वाली,
चंगी चोदर्यां सतवारां चाली ।
जोवन राय जादी सादी सिणगारी,
नख चख संचा में ढलियोड़ी नारी ॥ ४० ॥
लोई ओढण नें साड़ो लूंबाल़ो,
फूटरलट कन्तो नाड़ो फूंदाल़ो ।
पाय खुराखांची पगराखियां पैरे,
सूरत सिंघणी सी वन जंगल़ चैरे ॥ ४१ ॥
चूड़ो चमकीलो कचबीड़ी चमके,
दांमण दमकीली दांमण सी दमके ।
भँवरयो फुरणी में भवराल़ो भल़के,
पादर चेतीरा पसवाड़ा पल़के ॥ ४२ ॥
कांचल़ कातरिया बाजू में काठा,
भुजतल़ भेटे जिण मेटे अघमाठा ।

कर में कांकणियां जसदा गलकाठी,
अद्भुत मोरां पर लुटतोड़ी आठी ॥ ४३ ॥
ईंडी कवड़ाली माथा पर ओडी,
छेली अलकावल मुखड़ा पर छोडी।
झणके झालरियो झूमरियां झटके,
लूंबी भींगारी खूणी तल लटके ॥ ४४ ॥
गोरी पीड़ी पर ऊगड़ता गोड़ा,
लम्बी वीखां दे लेतोड़ी लोडा।
सेणां साजनियां ऊपर भर साले,
घूंमर देतोड़ी केतां घर घाले ॥ ४५ ॥
हेरे हरियालो भूतलहरखाती,
गहरो ऊंचे सुर हरियालो गाती।
धिन धण छिक जाती छाती लख छाती,
झांझर झणकाती जाती मदमाती ॥ ४६ ॥
भूरा मुखड़ा पर स्वेदण कण भारी,
पहुंची पोलछ में पितम की प्यारी।
नाचे खेला वण मेलावण नाही,
जोवण जोगीवा वेला जगमाही ॥ ४७ ॥
हा ऊण इच्छा पर त्रिच्छागत हांणी,
जग में देव इच्छा किण ही नहि जांणी।
वादल वीजलियां नभ में नहिं नेड़ी,
भेजो भण गायो भलकी पुल भेड़ी ॥ ४८ ॥

फीका चेरा पड़ फीका दृग फेरे,
हा हा ऊंडा दिन भूंडा भयहेरे ।
करता मांचादे लांचा कूतरिया,
उतरत आसाडां मूडा ऊतरिया ॥ ४६ ॥
ललकत झांझलियां वाजण नें लागी,
भूकां मरतोड़ी खलकत पड़ भागी ।
वोरा थल विवणा तिल खलवत तरजे,
वृडी चेली नें साधूज्यूं वरजे ॥ ५० ॥
अपणों वायोड़ो नव वीजन ऊगो,
पेले भवरो हव बदलायत पूगो ।
पूरबा खाड़ा में खाडा में पड़िया,
अगले अनरथरा अंकुर ऊघड़िया ॥ ५१ ॥
वायू आयू हर विवरण विहरावे,
थर २ थिरकत थिर थिरचर थररावे ।
खेहा डम्बर खर अम्बर अरड़ावे,
धरणी सिर धूणों गरधव गरड़ावे ॥ ५२ ॥
लांबां २ घर आंवा अडजावे;
धंड २ वड़ धड़के पींपल पड़ जावे ।
टणका २ तरु जरवे ढुरजावे,
दुरवा २ गुंण गरवा दुरजावे ॥ ५३ ॥
पत्ता झड़ पड़ता खत्ता नहिं खावे,
उडता ऊंमररा पत्ता नहि पावे ।

केकी केका तज ठेकादे ठेरण,
त्रिखमीं भांखड़ियां पांखडियां वेरण ॥ ५४ ॥
झुकियो वेलू झड़ आंधी पर आवे,
हातो ताली हरण लुकियो नहिं लादे ।
कच्छीपो कर २ रच्छी रुल जावे,
तड़फे मच्छी तल पच्छी पुल जावे ॥ ५५ ॥
कर २ हुंम्भाड़ा डांगर चिकलावे,
वाजे भूभाड़ा वासण विचलावे ।
चमके गोडा गल गोडा चिक २ ता,
जन्तू जल सिकता सिकता में सिकता ॥५६॥
धोरा धोरां पर धूंधल धुर धाई,
थल २ ऊथलती वलती वुरकाई ।
पड़ती पुल २ में भुल २ हुय भूंजे,
सरकर सर सोकत गिरवर दर गूंजे ॥ ५७ ॥
फिर २ भोजन कर जोजन जुल जावे,
घर २ निरमल जल वेकल घुलजावे ।
पींगा पूतांर तम्बूतण जावे,
सेजां सूतांरे वजरंग मड जावे ॥ ५८ ॥
अम्बर सम्बर विन सम्बर अकुलावे,
जलहर मिलियां विन जलिया जिय जावे ।
खोरां लेलोरां मोरा ललकारे,
पांसू पड़ियोड़ा आंसू पलकारे ॥ ५९ ॥

खालड़ खे खारो घाटो घर खोवे,
दोसत ऊदारो आटो नहिं देवे।
दाल़िया रांदे दलवल़िया हल़वांणा,
वेचण वीनाणियां ईनाणियां आंणा ॥ ६० ॥
विलखी अन जल़ विन वे वेराजी,
भीनीं भांपणियां आवे घर भाजी।
घांनर वीखरिया ओडणियां आडे,
डावर नेंणांरी टावर ज्यूं डाडे ॥ ६१ ॥
भाये भल़ हाल़िया भुरटांरा भारा,
अध अंग ऊलल़िया उरगांरा आरा।
फूंकण नव कोटी झंडा फरहरिया,
घर २ जाती रा टांमक घर हरिया ॥ ६२ ॥
खाली जल़धर थी जल़धर जल़ खूटो,
तत छिन जीवन विन जग जीवन तूटो।
खूटो वीजणकण लांचे खड़ खूटो,
छपनें प्रलया गत पावन पड़ छूटो ॥ ६३ ॥
चहुंघां चख चूरण खूरणा खे चडती,
मसलत महिमाहि मंडल नभमंडल मंडती।
रेणूं रवि मंडल़ रसमी रवरोकी,
तन मन प्रिज कांपत ढांपत त्रियेलोकी ॥६४॥
काल़ी पील़ी सहे सील़ी ककुभाल़ी,
कांठल़ कावल़ कल़ बावल़ वल़वाली।

अवनी उलटाती कुलटा कृतिआवे,
　　खें खें कर तोड़ी मरतोड़ी खावे ॥ ६५ ॥
आंधी ख खाटा करतोड़ी आवे,
　　फटके मूंफाटा चेता चूल जावे ।
सेंणां संकट में वंकट सब राया,
　　घांटा घुटियोडा घूंघट घबराया ॥ ६६ ॥
थोथा गह डम्बर सम्बर बिन थाया,
　　छपनें सूंमांसा आडम्बर छाया ।
तुरत तिजोरी में जल नें जड़ दीनो,
　　दे दे खांडेला खड़ने खड दीनो ॥ ६७ ॥
दुरभिख निकटासण किणनें नहिं दीदो,
　　नगटे नगटा पण कृपणां सय कीदो ।
निस दिन निस नायक नभनहिं नखताली,
　　करदी पूनम नें अम्मावस काली ॥ ६८ ॥
मिलगा धूलीमे जेष्टाश्रम जूना,
　　साले सूली में श्रेष्टाश्रम सूना ।
हा हा दुखदाई छपनां हथियारा,
　　सज्जन सुखदाई सांवल सथियारा ॥ ६९ ॥
गोलू गायांले गांवां गल गाहे,
　　दुखिया दुखिया मिल दोनूं दल दाहे ।
खत्याखेस लिया भाकलिया खांदे,
　　वेजड़ दामोदर चामोदर वांदे ॥ ७० ॥

ढाला ढालां तल सांतर ढलियोड़ा,
बेठा नीरान्तर आन्तर वलियोड़ा ।
बाटी बोटे नहिं खाटी खड़ बूजे,
फिर २ फर फाटी साटी नहिं सुजे ॥ ७१ ॥
गोवांचर तोड़ी पेंडा थिग गेडी,
में में कर तोड़ी भेडां ढिग भेडी ।
ऊणां ऊरणिया खरसाणियां ओले,
टरड़ा नरड़ा विन अरड़ा देटोले ॥ ७२ ॥
सांड्यां जेरावे सेडांरे सारु,
बेरे बेठा कर हेरे हतवारु ।
भेंस्यां रिडके नें गायां रम्भावे,
प्रांणी तिरखातुर पाणी कुण पावे ॥ ७३ ॥
निरबल चोरांडर बासियोड़ा नेंड़ा,
दुरबल मोरां पर कसियोड़ा डेरा ।
हिल्ला कर हिण के इल्लाहुय आधा,
लीला भगवतरी लीला नाहिं लाधा ॥ ७४ ॥
खाली खेली में वाजे खणणाटा,
भाजे धापड़ले कोठा भणणाटा ।
बारे २ धन देवे बणणाट,
गांजर खांचर ले पांजर गणणाटा ॥ ७५ ॥
पड़पण कोहिर पर कोहिर पड़ जावे,
खड़ २ करता खर खुद भड़ खड़ जावे ।

सारी कीमत हे करियोड़ा सारे,
हिम्मत भरियोड़ा हिम्मत नाहिं हारे ॥ ७६ ॥
खावण रुण २ धन डण मण मन खूंणे,
धांमण तांमण विन जामण सिर धूणे ।
गायां गोसाल़ा गून्दां गतगल़ती,
ढाल़ां दृग ढलती बूंदा वल़ २ ती ॥ ७७ ॥
अमली ठाकरड़ा डेरां में आवे,
मोटी घसकां घड़ माथा मटकावे ।
ढांढा तांवाड़े केराड़िया ढींके,
रोटी पांणीं नें टींगरिया रींके ॥ ७८ ॥
चित पर घोरारव आकर बरचावे,
घर २ नर नायक लायक घबरावे ।
ज्यादा जीवणरा पडिया जिव ज्यादा,
मांगण टीवण विन पड़िया फिर मांदा ॥७९॥
फेदड़ २ सी नभ में निजराई,
मांखण झांखण री मनसा मुरझाई ।
मावट आवटरी आवट मन मारे,
थरनें पापांरा थर लेगया लारे ॥ ८० ॥
हुयगया हतआसा हकबक सुण हाको,
निरधन धनवालां नीकल़गो नाको ।
खावण पीवण री खासा रग खूटी,
छपनें जीवणारी आस जग छूटी ॥ ८१ ॥

साध सरोधय ले सुखसूं नहिं सोया,
सुगनी सुगनावल रावलवल रोया ।
सिद्धा सिद्धाई धरणी में धसगी,
भोपां भोपाई फांफां में फँसगी ॥ ८२ ॥
भूटा जोतिसियां जोतिस की भूठी,
करसा कलपाया वरशा नहिं वूठी ।
दारां दुर दिन दुति दुगणित दरसाई,
स्रावण आवण में गावण सरसाई ॥ ८३ ॥
निकसी तीजाणियां वणियांधिन हाली,
उपमा घड़ टाली वरली छड़वाली ।
वेणीं वासकसी एणीं द्रिगवाली,
वाली वयवाली वालम वय वाली ॥ ८४ ॥
सादर सांईनीं आदर उमगाई,
उडती परियां सी वरियां धर आई ।
गोरी गज गमणीं हंसा गत हाले,
चम्पा डालीसी राली भुज चाले ॥ ८५ ॥
पदमण पूंगलरी ऊंगल गल आगे,
लंजां हजादे गंजा श्हलागे ।
चंचल चपलासी चितवत चिरताली,
निरणय निगमागम नागम निरताली ॥८६॥
मादा मरजादा ज्यादा मद मस्ती,
वेली अलवेली छेली छंदमस्ती ।

डोला हींडोला होकर हुचकाती,
अणवट ठोकर दे अेडी उचकाती ॥ ८७ ॥
तिण दिन तीजणियां निरखी तन त्यारी,
कंचन वेली सी केसर री क्यारी ।
गहके आरंग सुरसारंग सुर गावे,
चांणक दी ठांई नीठां वण आवे ॥ ८८ ॥
ढूलर भांकल़ त्रिन खांकल़ दिन ढाक्यो,
हींडे हींडण विन हींडे हिये हांक्यो ।
सूकी सेवणारी हेल़ा उरभाई,
मेंदी देवणरी वेला मुरभाई ॥ ८९ ॥
डाई डेडर सी धाईधुर धींणें,
भींणी भेडर भुरगाई सुर भीणें ।
वीणां नारदसी कोयलसी वांणी,
कुरले़ के कीसी काया कुमलाणी ॥ ९० ॥
लोयण लागणिंया ताणियां जल़वाल़ा,
कोयण काजल़िया रल़िया रजवाल़ा ।
जो जो भांकडियां जाती जतवाल़ी,
रोरो आंखडियां राती रतनाल़ी ॥ ९१ ॥
पल २ दीठां विन पांणीं नहिं पीता,
ज्यांरा मीठा मुख जोयर जगजीता ।
माता पितु वेठा वेटा भल मरिया,
प्यारां २ नें मुसकल पर हरिया ॥ ९२ ॥

जातरजर हरणों आभि अन्तर जड़ियो,
प्रीतम प्यारी नें वरहरणों पड़ियो ।
साहिमां परमातम आतम नहिं मालम,
वाली घरतज हह विलखांणो वालम ॥ ६३॥
अगणित अवलावां छावां जुत छाई,
निरमल नैणां जल वल २ विलखाई ।
ढेती ढेलीसी भूली ढंग ढांगे,
मोटी आंख्यांरी रोटी मुख मांगे ॥ ६४ ॥
सासू वहु दोउ मिलके सतवारी,
पातल पेटी निज बेटी समप्यारी ।
वाला वीरा कहे सरमां वतलाती,
आंसू पाती हा छाती भर आती ॥ ६५ ॥
नख नहिं निरखाती नाजुक नखराली,
पियें जिये प्रतपाली जाती पथपाली ।
घूरण नैणां जल काजल जल घूमें,
लल थड़ आखड़ती प्रीतम गल लूमें ॥ ६६ ॥
छिन २ साथी वत छड़ती नित छाती,
मोकल चाकल में कोकल नहिं माती ।
हांडी खांडी में डोई संग हाले,
चखवहे खंजन सें धारोला चाले ॥ ६७ ॥
डोरा डिग मिगता आठी खुल रुलतीं,
तिरछी भांखणियां वरछी सी तुलती ।

दुरबल लज्जालू सालू में दीखे,
भांभण भूखालू व्यालू विन वीखे ॥ ९८ ॥
भूरी भटकूड़ी डरजणियां भावे,
गोरी गटकूड़ी कुरजाणियां गावे ।
छपनों गावे गल नैणां जल छावे,
अपणी उनमुखता सनमुख सुद आवे ॥९९॥
मुड़ २ पड़तोड़ी आंखड़ियां मींचे,
भूखां मरतोड़ी मूंठड़ियां भींचे ।
बाट वटाऊ हुय सांसो डरसाले,
वाट वटाऊ विन हंसो उडहाले ॥ १०० ॥
नींचो नैणां सूं धावां जल धावे,
ऊंचो देखणरो अवलखो आवे ।
गाढी गरणां गण रजले गणणाटा,
सावण सूखो गयो देतो सणणाटा ॥ १०१ ॥
अपनें आसरिये अतलो दिन ऊगो,
पीहर सासरिये पतलो पुन पूगो ।
आखी जगदीश्वर शांधण अभिलाखी,
राखी बांधणरी ईश्वर नहीं राखी ॥ १०२ ॥
फुरियो भादर वो घुरियो नहिं फीको,
मन्दिर दर आगे लागे नहिं नीको ।
द्विज वड तीजां दरसातू ले दोड़े,
खावे जातू खल मारग सूं मोड़े ॥ १०३ ॥

निस दिन जन्माष्टम अष्टमगसनाहीं,
माधव मरियो के जन्म्यो जगमाहीं।
कूड़ा पूजारी कूड़ी कथकीनी,
देवणकांनां में पंजीरी दीनी ॥ १०४ ॥
ऊंधा चूधाकर फेर उरझवे,
वनड़ो वनड़ी वण मनड़ो मुरझावे।
ऊभी आंगणियें ओलोंड़ी आवे,
गद २ सुरमुरली ओलूंड़ी गावे ॥ १०५ ॥
गो गो मोगो हुय गोरांधा गिरियो,
तेजो मोलो पड़नेजोलेतिरियो।
पीरां पतधीरा पेली धरधायो,
उण दिन रांमों डर सामों नहिं आयो ॥१०६॥
लुट २ खीरां में दुनियां लवलाई,
पांचू पीरा मिल खीरां नहिखाई।
भरियो भादरवो खाली पड़ भागो,
लगता आंसू में आंसू झड़लागो ॥ १०७ ॥
घरणी निज परणीं घर बाहर घेचे,
वनिता २ वत निलजा नर वेचे।
धांसू ढोलरिया सखियां धणियाली,
आंसू ओलरिया अंखियां अणियाली ॥१०८॥
ऊंची आंतारा नीया पुन आया,
खोड़ां काडणरी खोड़ां किण खाया।

जोगो नांनांणों दादाणों जोड़ो,
ताजाकुल दोनों पण रोटीरो तोड़ो ॥१०६॥
मांमो भाणेजो हिल मिल मुख मोड़ो,
तोड़ो तार नहीं फुलकांरो फोड़ो ।
काको भत्तीजो साथे दिन काटो,
घर में घाटो नहिं आटारो घाटो ॥ ११० ॥
दुरभिख घमंडी देसनकारी साजी,
भारी भवडीले घरमें भूवाजी ।
कवड़ी २ ले कलियोड़ा कुंगा,
ढाला भूडोड़ा ढलियोड़ा ढूंगा ॥ १११ ॥
धोती धड़चाली सन्धियोड़ा धागा,
तुविया तुणियोड़ा बन्दियोड़ा बागा ।
खटरखल मुंडा छिपियोड़ी छाती,
गोडा गलियोड़ा चिपियोड़ी चाती ॥ ११२ ॥
दारादुर दृष्टी स्रष्टी सुकजावे,
ज्यों ज्यों जल वरसे त्यूं त्यूं तनतावे ।
सूका सरवर सब तरवर सब सूका,
चारूं वर्णाश्रम भय भ्रम क्रम चूका ॥११३॥
गायां भैंस्यांरो कर दीनो गाठो,
लज्ज्या कमज्ज्यारो लेलीनों लाटो ।
प्यारा टोगड़िया पाडा कद परखां,
दूदां दहियांरा चाडा कद देखां ॥ १ ॥

भूरी कीटीरा आसी भव भटका,
गुडली छाछांरा सुपनें में गटका ।
प्येवा पड़तोड़ी रावां घी थीणों,
धापर देखांला दूजे भवधीणों ॥ ११५ ॥
भाई २ तज भूको तज भागो,
पग २ पुरुषांनें लूखो जगलागो ।
आछा २ अनवासी वनवासी,
उठगा डल़गाणां पाछा कद आसी ॥ ११६ ॥
तोता वोत्तां में रेता तुतु ल़ाता,
बातां वीसरगा वेला बतल़ाता ।
जाता गेला जिम झुल़ २ हिम जोता,
रोटी मांगण सूं पलापस रोता ॥ ११७ ॥
नाड़ां नीसरगी जाड़ां तल़ झल़के,
न्यारी २ निज पांसलियां पल़के ।
लवता पंखांरा पहलु लागोड़ा,
भूकां मरतारा भीतर भागोड़ा ॥ ११८ ॥
पिञ्जर पांसलियां भीतर पेठोड़ा,
वोले वोबाता डोबा वठोड़ा ।
कूंची नांगलियां मरता करड़ाटा,
ऊंची आंगलियां करता अरड़ाटा ॥ ११९ ॥
डिगती डोकरियां डोकर ड़ाडोले,
वावा टुकड़ा दोहा वाकर वोले ।

निरदइ नारदसी लाजे मन मेड़ी,
ईश्वर देखाजे मत वेला श्रेड़ी ॥ १२० ॥
गद २ वांणी दृग पांणीं घलूलाटा,
कंगला वंगला में कीना करलाटा ।
ठांठा ठरड़ाया सुख दुख किए सूझे,
विपदा वरड़ाया विपता कुण बूझे ॥ १२१ ॥
चिन्ताहरनागर चिन्ता नहि चीनी,
करुणा शागर हुय करुणां नहि कीनी ।
धरणी तलव्याकुल छेलो सिर धुणियों,
सरणागत वच्छल हेलो नहि सुणियो ॥ १२२ ॥
लिछमां बर छांनो कांनो लेलीनो,
दीननबन्धू हुय दीनन दुख दीनो ।
घट २ घण नांमी स्वामी सुरलाई,
अन्तर जांमी हुय ओलज नहिं आई ॥ १२३ ॥
हा हा जगदीश्वर भेड़ी पुल हेरी,
गाफल दुनियां पर अैड़ी पुलगेरी ।
छपनें छोरा विधलां पर करलीनों,
दांनां २ पण हांने धरदीनों ॥ १२४ ॥
किण ढिग हूकां हमें किण ढिग हम कूकां,
हरदमहीये में ऊठेहरि हूकां ।
सबविध सांम्रथ तूं सब थारे सारे,
मारण वहु मारग अन विन क्यूं मारे ॥१२५॥

ज्ञाता गुण ग्याता दूसण नहिं देणों,
रहणीं करणीं में भूभूसण रेणों ।
विद्या वेदां में वेदिक विध वरणी,
अपणी करणीं सूं जग पार उतरणीं ॥१२६॥
भावी भूलोड़ा भूको क्यूं भाया,
पोचा करमांरा पोचा फल् फल् पाया ।
निकमी नीयतरा सरवर नीतरिया,
वींठा वीजांरा तरवर विस्तरिया ॥ १२७ ॥
निरभय नियता में निवता नरनारी,
करता भासण में भरता सिसकारी ।
भगवत करतानें करतव भूगतावे,
पिछला पापांरा पांमर फल् पावे ॥ १२८ ॥
चतुरां क्यूं उंडी चीन्ता चांपांरी,
अच्छी ईश्वररी भूंडी आंपारी ।
सेंणां २ सब हिल मिल दुख सेणों,
माहो माही में देणो नहि मेंणो ॥ १२९ ॥
वहतो अखिलैश्वर अवगत अनदाता,
तत्सत जगपालक जगपत जगत्राता ।
जग में जीया तो पाछा सुक पास्यां,
वहोरा वतलावो न होरा कर न्हास्यां ॥१३०॥
धुर २ करता नर लागा धीरावण,
सोनां चांदीरो करगा सीरावण ।

पड़्ज्यो कुल्लखणों वहोरां पर पटको,
गेणां गांठारो करगाठग गटको ॥ १३१ ॥
लूटे खावे धन धन में धर लेवे,
च्योडा दूणांरा तिगुणां कर देवे ।
सब धन जाटांरो काटांरे सारू,
वहोरा चोरारो कोई नहि वारू ॥ १३२ ॥
कूकस खावे निस आवे कण काढे,
विखमी विरियां में अत गत खत वाढे ।
अह प्रभू चवदरियां कुल कवण उवारे,
मत्तू अत्तू सर गत्तू देमारे ॥ १३३ ॥
आखी ऊंमर में आंरोकस आयो,
छल बल मुतलब कर बस कर छिटकायो ।
पल में आतांरी चमड़ी नित पीनी,
दमड़ी खरचीरी जातां नहिं दीनी ॥ १३४ ॥
धन्धर वंका भट डंका दे धाया,
उठिया उद्योगी ऊधम उमगाया ।
सरधा बांकी सूं झाकी सुख सेरी,
ढूंढी ढूंढाहर हाडोती हेरी ॥ १३५ ॥
जांणीं जीवण नें जिण तिण मिस जुळिया,
पांणी पीवण नें पूरब दिस पुळिया ।
जाडा धन वाळा सींधूतट जुड़िया,
गाडा तन पाळा गुंज्जर धर गुड़िया ॥१३६॥

कितहेम्समोई उडिया कलकत्तो,
　　　　माऊ सुर धरिया कोलम तक मत्तो ।
थेटू घर सम्बर ऊंडा सर थागे,
　　　　आंरे मायला घर मूंडारे आगे ॥ १३७ ॥
घर २ छपना में घर २ री घाली,
　　　　मोऊ सुरधर री सन मुख में हाली ।
बांदे गांठड़ियां बड़ियां चुगवाले,
　　　　राली गूदड़ ले कांधा पर राले ॥ १३८ ॥
सासा नोली में अटकायां सांसे,
　　　　बालक झोली में लटकायां बांसे ।
माथे ओडी धर साखीणां मांडे,
　　　　छपनें लाखीणां अपणां घर छोडे ॥ १३९ ॥
बलदां गाडां सल पाडांपर बोरा,
　　　　छोटा ढोरां पर रोरा डरछोरा ।
हातां होकलिया लटकन्ता लोटा,
　　　　कुण २ री कन्था सुपनें में रोटा ॥ १४० ॥
लारे बालदरी डेरो लीनोडो,
　　　　दोलो दालदरो घेरो दीनोड़ो ।
फाटा धाबलिया घाघरिया फाटा,
　　　　फरके चोटलिया देता फरराटा ॥ १४१ ॥
जूंवां लीखांरा जमियोड़ा जाला,
　　　　नीचा नमियोडा कड़कोड़ा काला ।

चींचड़ ईत्तां वुग दोला चैंठोड़ा,
आंणे झोली में टुकड़ा अैंटोड़ा ॥ १४२ ॥
ताकत तू टोड़ी तापड़ तूटोड़ा,
खाता पोतां सूं पहला खूटोड़ा ।
छेला छोगाला छक्का छूटोड़ा,
फिरतां २ रा फींफर फूटोड़ा ॥ १४३ ॥
ऊंचा नींचा में आंगल़ नहिं ईखे,
भागल भक भूरा भेला भड़ भीखे ।
मंगण २ सूं पद २ पदपी से,
डूमादेसोतां दल़ जेड़ो दीसे ॥ १४४ ॥
अैठे चूंठने मीठो कर आंणे,
दीठो अण दीठो जीठो करजांणे ।
पोखे काया नें नीसरगा परचा,
चोखे बींठेरी बीसरगा चरचा ॥ १४५ ॥
सांमों सीयालों साखी सरसायो,
वाकी बाचियां ने डाकी दरसायो ।
महिखा २ सुर आशुर कां मारण,
दावो धावोदे ठावो अरिठारण ॥ १४६ ॥
आधी व्याधीरा आदण ऊकलिया,
अंजण मंजण विन संजण दृग उल़िया ।
काती कुरलाती काती निस काल़ी,
होल़ी हीया में दांतां दीवाल़ी ॥ १४७ ॥

खल भल खावण नें मृगसर खल सोधे,
बावल बेफीरी तेफी सूं वेधे ।
पीतल परि करपर चीतल करपर से,
विहल माहितल पर सीतल सर बरसे ॥१४८॥
पालो पड़तोड़ो वरणां जयवीटे,
मालो करतोड़ो करुणां नहि मींटे ।
रातां मोटी हव छोटा दिन रोवे,
हातां पावांरा खोटा दिन होवे ॥ १४६ ॥
धिन २ धनवन्तां थेली ले धायां,
भायां लातरतां झेली भूज भायां ।
लाखां लोकां रो लाखां वर लीनों,
दुरवल वेला में चेला भरदीनों ॥ १५० ॥
धिन २ दातारां सातारां धणियां,
आगल खुलियोड़ी तुलियोड़ी अणियां ।
अवला उद्धारी सवलां कुल आया,
जणणी जसधारी वारी जिण जाया ॥ १५१ ॥
आईयो अंगरेजां अद्भुत गत वालां,
इंगलिस नेसनरां देसन उजवालां, ।
वांटण विनतावां वारी अनवारी,
वालक बूढांरा पालक वलिहारी ॥ १५२ ॥
निरमल गंगा सो गंगा सी नांमी,
जंगल धर में कियो मंगल जग जांमी ।

परदुख काटण धड़ विक्रम धुर पूठो,
　　　　वरसा इम्रत भड़ विक्रम पुर बूठो ॥ १५३ ॥
पुन्न प्रचारणरो परवोदय पायो,
　　　　फवतो आयुस श्री माधव फरमायो।
छपनें जयपुररो जग में जसछायो,
　　　　ओतो अरवनरा वल़ सूं फल़ आयो ॥१५४॥
सायव २ समदेखो दरसा ो,
　　　　हर दम हरियन्द भी सेखो सरसायो।
मूंगो मांखण सूं मिसरी सूं मीठो,
　　　　दृग सूं दोय घड़ी अन वि कतो दीठो ॥१५५॥
लख पुल़ पातल़ जस परचो लिख लीनों,
　　　　दुनियां पाल़ण राेक स कोन्सल दीनो।
धांन दिरावणनें सुख देवो धायो ॥
　　　　पांणी निरमल़ नित सुवलाले पायो ॥१५६॥
पल २ पलकां सूं पड़ता परनाल़ा,
　　　　मोठां मूंगांरी होठां में माल़ां।
भारी नाणां विन दाणां विन भूमें,
　　　　घररी रदनोरी सदनां विन घूमें ॥ १५७ ॥
बन्दोवस्तां में चाकी नाहि वाकी,
　　　　चल प्रत जप्याकी वाकी में चाकी।
पिरजा प्रांणां सूं धनगो धणियांरो,
　　　　वणगो वणियांरो भरणों भणियांरो ॥१५८॥

माख्यां विण मिनखां पाख्यां सूं पोखे,
कुत्ता कोथालियां राखे अणरोखे ।
हा हा ढोले़ पसू कागां कुल हाथे,
मिनकी पोरायत दूधां दहि माथे ॥ १५६ ॥
भूपत तोटा में देवालां भिलि़या,
मोटा मोटांरा कुल मगतां मिलि़या ।
रवि २ धाया नहिं छाया सिररोले़,
घूंटी आयाज्यूं काया चख घोले़ ॥ १६० ॥
मुगधा मध्यानें मोडा मिल़ जावे,
पढ २ प्रारथना प्रोढा पिलतावे ।
हैया २ वण नगटा पणहेवे,
साध्वी दुख देखे कुलटा सुख सेवे ॥ १६१ ॥
बिगड़ी किसमत पर पारायण बांचे,
नाड़ी २ ज्वर नारांयण नाचें ।
वणगा वेदेही श्रेही अभ्यासी,
संकादेही नहीं ग्रेही शन्न्यासी ॥ १६२ ॥
वेसर वैरागी त्यागी तनतावे,
वेला तेला विद सेजां वण आवे ।
सधवणियोड़ा वेवल़ नहिं सोवे,
जर २ कन्था में केवल़ पद जोवे ॥१६३॥
अथीती अभ्यागत टोल़ा ढुल़ आवे,
झोली झंडाले पोलीपधरावे ।

रमता रावलिया रलिया रत रोधे,
धुन में धुन लागी सुन में सत सोधे ॥१६४॥
जय २ जोगेश्वर भोगेश्वर भूल:,
धारण पक्षी धर चक्की नहिं चूला ।
कमडल कापांदा कम्बल गल़ कन्था,
खोखा बांहांरी खुद सीखी सन्था ॥ १६५ ॥
अल़गा एकांयत नींयत निरदावे,
धूणीं अवधूतां दूणी धुकावे ।
पूरा पोमा में रूरा सदसावे,
पीता मरियोड़ा जीता पद पावे ॥ १६६ ॥
गोडा पर गोडा रुपहुमीं पोडणनें,
गावो गलती निस आवो ओडणनें ।
जोखत दत्तातृये गोरख जिम जोता,
त्यागी तित्थंकर संकर जिम सोता ॥ १६७ ॥
तनमन जुगती जन लागी सतकाली,
त्यारी मुखतीरी लागी ततकाली ।
ठरता आंतां में ठांगलियां ठेली,
मरता दांतां में आंगलियां मेली ॥ १६८ ॥

॥ ओ३म् ॥

(भूमिका)

प्रिय सज्जन पुरुषो आज कल संसार में देखा जाता है कि सच्चे साधू महात्मा हूं का श्वांग वनाकर जाट कुमार माली. गूजर. राईका दि अनपढ़ और कमाऊ कोम. अथवा भील. मैने. वावरी. जोगी. ढेढ और भंगी आदि नीच जाती के लोगों नें भी सिर मुंडवा. खाख रमा. कपड़े रंग. कुंकूं आदि किसी प्रकार का सारका लगा हट्टे कट्टे लोगों ने भी मांगकर खानां मानों धन कमांने का एक शुगम पेशा मुकरर कर लिया हैं। और शोटा लंगोटा व तुम्बी आदि चपड़ास धारण करके यमराज केसे कानिष्टेवल विचार भोले मनुष्यों के वावा वन कर नौकरी. धन. स्त्री. पुत्रादि अनेक प्रकार की सिद्धियां देकर उन से धन हरण करके अपने कर्त्तव्य कर्म को सुफल मानते हैं। सद् गृहस्थो इसको लम्बां न करने की कोई आवश्यक्ता नहीं है आप सज्जन पुरुषों ने संसार चक्र के उलट फेरको स्वयम् अनुभव किया होगा कि आजकल नांम के साधवों की कितनी गणनां वढ गई है कि मरदम सुमारी में भी अटाईस करौड़ मनुष्य गणनां में सात

करोड़ मांग कर खानेवाले हैं। इसी का आशय लेकर कविवर ऊमरदांनजी नें "सन्त असन्त सार" अपनीं अनुपम कविता में अच्छा लिखा है। जिसमें "सन्त और असन्तों" के कर्तव्याकर्त्तव्य कर्मों की व्याख्या स्पष्ट रूप से दर्पणवत् कर दिखाया है। अतः मेरी उन देश हितैषी श्रीमान् राजा महाराजा सेठ साहूकार वो सर्व साधारण पाठक तथा श्रोता गणों से सविनय निवेदन है की आप इस "सन्ता सन्त सार" को अवलोकन करके धन हरे धूरतों के धोके से वचें। और सच्चे साधू महात्मा ओं की सेवा करके संसारसागर में अपने मनुष्य जन्म की जीवनीं को सुफल करके सुख के भागी वनें ॥ इति शम् ॥

हस्ताक्षर गायड़ सिंह वर्म्मा

ओ३म्

(सन्त असन्त सार)

(दोहा)

तंडण कर कविता तणों, घालूं चंडण घूव ।
खंडण जोगे भेक रो, खंडण करणों खूब ॥ १ ॥
मोडां दुग्गह मालिया, गावर फोगे गाल ।
भोगे सुन्दर भांमणी, मुफत अरोगे माल ॥ २ ॥
खीरां वांनी ज्यूं खरा, वीरां छांनी व्याध ।
ध्यांनी पग धीरा धरे, सीरां कांनी साध ॥ ३ ॥
मा जाई कहे मोडिया, करे कमाई कीर ।
बाई कहे जिण बेनरा, वणें जँवाई वीर ॥ ४ ॥
आज कालरा साधरो, व्याज बुहारण वेस ।
राज मांय झगडे रुगड, लाज न आवे लेस ॥ ५ ॥
वड़ी हवेली वीच में, हेली सूं मिल हाय ।
वण सतगुरु छेली वखत, चेली सूं चिप जात ॥ ६ ॥
झोटां ज्यूं साधू झपट, जोटां दे जुग टाल ।
चेली सूं चोटां करे, रोटां हित रुग टाल ॥ ७ ॥
जणियां २ नें जिकां, धणियां विन ली धूंस ।
मिल भणियां अब भेट दूं, हुरकणियांरी हूंस ॥ ८ ॥

॥ ओ३म् ॥

(दोहा)

ऊमर सत उगणीस में, वरस छतीसे बीच ।
फागण अथवा फरवरी, निरख्या सतगुरु नीच ॥ १ ॥

(छन्द गगर निसांणी)

तो सतगुरु नें ताया, अरथन आया गरथहि व्यर गमन्दाहे,
पीछे पिछताया ठीक ठगाया भाया भूरि भमन्दाहे ।
मोडां सूं मिलिया भीतर भिलिया सिलिया रस सोढन्दाहे,
मुख तें रट रांम दिल विच दांमां वांमां घट बोढन्दाहे ॥१॥
गुरु आप अज्ञानी जुगतन जानी चेला मुक्त चहन्दाहे,
करणीरा काचा साधन साचा वाचा वहोत बकन्दाहे ।
अन्धे को अन्धा धरके कन्धा चलकर पार चहन्दाहे,
नगटा निरदावे जमपुर जावे खररर खाड खपिन्दाहे ॥ २ ॥
ग्यांनी तन गोरा ठोरस ठोरा चादर में चिलकन्दाहे,
हेम दवा हाथी साथण साथी खाथी चाल चलन्दाहे ।
रस्ते में रस्ता खव्वा खस्ता हस्ता खूब हिलन्दाहे,
मसकरियां मांडे भड़वा भांडे गुंडा चांद गळन्दाहे ॥ ३ ॥
हंसी पर हंसा मुख में संसा आसा स्थित ऊंगन्दाहे,
पोढे परियंका सदा निसंका श्री खंडस सूं गन्दाहे ।
धन लेवत धीठा देतन दीठा मीठा ठग मोहन्दाहे ॥
जग चोरी जारी प्रभु सूं प्यारी स्यारी विध सोदन्दा है ॥४॥

लम्पट खल लुच्चा वीजू वुच्चा टुच्चा पण टोकन्दाहे,
चाकररा चाकर ठाकर वाकर वण वोकन्दाहे ।
लोलुपहुय लड़धा खावण खुड़दा पड़दा में पसन्दाहे,
भायां सूं भागे आयां आगे वायां ढिग वसन्दाहे ॥ ५ ॥
रमणीं वरहीनां निरख नवीनां राम २ रण कन्दाहे,
कन्द्रपरा कीटा फवतन फीटा भंवर गुफा भण कन्दाहे ।
कामी अरु क्रोधी वेद विरोधी परगट नरक परन्दाहे,
भगती नहिं भोगा जुगातन जोगा अद विच सन्त अड़न्दाहे ॥६॥
वेहदरा वासी हद में हांसी आसी विख उफणन्दाहे,
खूटोड़ा खोला गाफन गोला भोला इश्क भणन्दाहे ।
आस्तिक विन इन्दुक नास्तिक निन्दुक सास्तिक मत सोखन्दाहे,
तज धर्म त्रिदंड़ी अधिक अफंडी पाखंडी पोखन्दाहे ॥ ७ ॥
पढिया नहिं पाटी घट में घाटी तल ताटी ड़न्दाहे,
करणी में फिर २ घिरणीं घिर घिर फिर २ सिर फोड़न्दाहे ।
फिरया नहिं फेरू मारग मेरू तेरू पान तिरन्दाहे,
वकवाद विखेरू हिये में हेरू गेरूं रंग गहरन्दाहे ॥ ८ ॥
अनहद नहिं आरी विखम विकारी धन धारी धोकन्दाहे,
अगली धर उंची चेडत चूंची कड़ कूंची को कन्दाहे ।
पावण नें पेड़ा भल पण भेड़ा नेड़ा नहीं निसरन्दाहे,
कुपियां सूं कुपिआ लुपिया २ रुपियां सूं रीजन्दाहे ॥ ९ ॥
विलला ग्रंथ वांचे रसिकनराचे छव छाती छोलन्दाहे,
निकमा नर नारी वारम्वारी वलिहारी वोलन्दाहे ।

नाणों नारायण प्रद परायण रामयण रोसन्दाहे,
छल बल कर छानें मतज़ब मानें मूरख गल मोसन्दाहे ॥१०॥
अज भेक उजागर नर खर नागर गुण सागर गूजन्दाहे,
नाभा कृत नामी कथा निकामी भ्रम गामी भूजन्दाहे ।
करखे चातांणी चूंदी कांणी सुर बांणी सोकन्दाहे,
गद पद गन्धासय मद मन्दाशय छिन्दाशय छेदन्दाहे ॥११॥
गध गाया गावे छापा छावे जेहकाया जेहकन्दाहे,
गुण ओगुण गोफा तरकन तोफा वोफा सुण वहकन्दाहे ।
मणि बन्धम बन्धा बन्धन बन्धा अन्धाधुन्ध अणन्दाहे,
धूरत दे धोका चोड़ा चोखा चोखारस चाखन्दाहे ॥ १२ ॥
जुग तरण जुहारे परण पधारे चरण कमण चूवन्दाहे,
अन्तर अभिमानी गदर गुमानी वक ध्यानी बूवन्दाहे ।
मन फेलन मावे सेल सुहावे डेल वक्र डोलन्दाहे,
कर नवल किसोरी संघर सोरी मरियादा मेटन्दाहे ॥ १३ ॥
विसफल वेरागी त्रि भवनत्यागी भागी भुज भेटन्दाहे,
चेली चिरताली निज नखराली चितवाली चीतन्दाहे ।
करड़ी कर कन्धर वन्धर बन्धर जालन्ध जीतन्दाहे,
खट चक्रन खोले तक्र वितोले एक चक्र ओलन्दाहे ॥ १४ ॥
गलियां में गोता खावत खोता वोता मार वहन्दाहे,
हिल में वड हांणीं जो नित जांणी चित में नार चहन्दाहे ।
विधवां वाला ठीकर ठाला अद काला ऊंगन्दा हे,
साहव मन मोला टोगड़ टोला पोला पग पूजन्दा है ॥१५॥

भांडांरा भाई हांडां हाही रांडां में रोवन्दा हे,
उठतोड़ा आसू फिरता फांसू जिग्या सू जोवन्दाहे ।
पर ब्रह्मन पाया सद सरमाया माया मद मांगन्दाहे,
द्विज वरण दवाया कल पित काय छाया जल छांगन्दाहे ॥१६॥
जग में कहे जोगी भीतर भोगी सोगी सम सोवन्दाहे,
महिलानें मोगी गूंगी गोगी रोगी जिम रोवन्दाहे ।
सांगी सतहींणां हेजत हींणां मत हींणां मांगन्दाहे,
पागल सिस पाया दागल दाया भागल सिर भांगन्दाहे ॥१७।
अति खूंणा ऊंडा थूंडम थूंडा कूडा पन्थ करन्दाहे,
मूंछां विन मूंडा भासत भूंडा भर सूंडा भभ कन्दाहे ।
लड़थड़ गल लंजा हतरस हंजा मन मथ कांम मदन्दाहे,
जारी कर जोरी सठ सिर जोरी कोरी हाय कथन्दाहे ॥१८॥
चेली अरु चेला मांडे मेला कांम विकल किल कन्दाहे,
नित हांजी नांजी पूरा पाजी ताजी रांडत कन्दाहे ।
बातांरा ब्यालू सरब सियालू ऊंनालू ऊंगन्दाहे,
जूता जतलाया मन मत लाया वतलाया बीखन्दाहे ॥ १६॥
लीकां कुल लोपी जगतन जोपी खोपी में खावन्दाहे,
जरकावण जोगा मूंसल मोगा गोगा गुरु गावन्दाहे ।
विसवास वढावे अंट में आवे कंठक मल काटन्दाहे,
बिटरक्त ब्रहावे नहीं निजरावे चुपका वहे चाटन्दाहे ॥२०॥
अव धू अठ मासे नगद निकासे चोमासे चिपकन्दाहे,
भांमण भरमाया गुरु गरमाया सरमाया सिरकन्दाहे ।

चेलीरा चेला अजक अकेला वेला वास वसन्दाहे,
सब धन कर स्वाहा उठता आहा हा हा हाश हसन्दाहे ॥२१॥
जागरणा जागे लाजन लागे ढागांढिग ढूकन्दाहे,
सुर भीणन साजे वीणन वाजे करम हीण कूकन्दाहे ।
गरधव वत गावे डर डस गावे हरखावे ढूकन्दाहे,
विन तप व्रत वसिया कन्द्रप कसिया भगरसिया भूकन्दाहे ॥२२॥
खावण नें खाता मारत माथा गाथा ग्यान गिटन्दाहे,
तन खातां तिवर्ण वातां विवर्ण सिंवण नांम सिटन्दाहे ।
अगहर उद्धारक ते भवतारक खारक दाख खुरन्दाहे,
ले स्वाद लुभावे पाद पुजावे घट में नाद घरन्दाहे ॥२३॥
लखणांरा लाडा ईश्वर आडा पाडा गुरु पोडन्दाहे,
वद सास विकारी एव उधारी इधकारी ओढ़न्दाहे ।
साकर सिरसाली थिर भर थाली अगलाकर ऊगन्दाहे,
जग तृण सम जांणों मोजां मांणे भांणे भोज भरन्दाहे ॥२४॥
वेसुरत विचारा विलखत वारा लुरत पुरी तरसन्दाहे,
केइ अन्धा कूवे वोला वूवे पांगलिया पीसन्दाहे ।
रातूं दे रोडा लूला खोड़ा दुखियारा दी सन्दाहे,
झोली झड़कावे पोली पावे टोली सूंटालन्दाहे ॥ २५ ॥
पासी गर पूरा साजा सूरा भूरारू भाळन्दाहे,
जे आतां जातां पेच पजातां वातां वद वूजन्दाहे ।
वोदा वतलावे खोदा खावे सोदा पण सूजन्दाहे,
जद मोको जोवे सांजां सोवे अर्ध निसा उचकन्दाहे ॥२६॥

अन विन आयोड़ा धन धायोड़ा खायोड़ा खूं दन्दाहे,
प्रथमा पच्चीसो चुप चोतीसो वर्ष गांठ वांचन्दाहे।
हरिजन हथियारा हे हुसियारा न्यारा हुयनाचन्दाहे,
रमणी में राजी कुल में काजी हाजी हुंस हरन्दाहे ॥ २७ ॥
कर खूंन कुपातर सूंन सुपातर लातर कुञ्जलच कन्दाहे,
परब्रत पिमांनां विरगत बांनां कांनां फूस करन्दाहे।
बूढा अरु बाला के मुख काला चालागर चुल कन्दाहे,
खापट गुल खावण गुठ पुल गावण भट से झुलकन्दाहे ॥२८॥
के गूदड़कपटी अँसल अपटी हांडी भेल हिलन्दाहे,
मेंणांरामांजी बेणां वांजी सेणां डर सालन्दाहे।
खूनी खल खंचल ऊनी अंचल मूनी मिल मुलकन्दाहे,
सब सित्यानासी ऊठ उदासी हांसी मुख हिल कन्दाहे ॥२९॥
भगतारी भाजी संगत साजी बावाजी बोलन्दाहे,
रथ में सूं राली बेवण वाली हाली रथ हाकन्दाहे।
राजन के राजा मुढ महाराजा ताजा घर ताकन्दाहे,
वण बाट बटाऊ धण धुन धाऊ घण खाऊ घूमन्दाहे ॥३०॥
बस होत वधावा चोहट चावा भट छा-। भूमन्दाहे,
सखां ढिग संखा अधम असंका फूड़ २ फूकन्दाहे।
रड़ सिंगा रूड़ा आगे ऊड़ा भूड़ २ भूकन्दाहे,
जाखेड़ा जोड़ी घोड़ा घोड़ी पधरावे पुलकन्दाहे ॥ ३१ ॥
चोजां चटकाला गुरुगटकाला मटकाला मुलकन्दाहे,
माथाहद मसले अकेद असले धसले जद धूजन्दाहे।

छित कुल भ्रम छांड गुरुगम गाडे मडिचख मूदन्दाहे,
चामर कर चोला झांमर झोला पांमर पद पूजन्दाहे ॥ ३२ ॥
मेले पग मंडा अग्र अखंडा रंडा प्रिये राचन्दाहे,
पढ दुरस प्रमादी मुरसदमादी महन्त पुरुष साचन्दाहे ।
लेलाभलगोटी अधम अगोटी नाभकवल निरखन्दाहे,
कातीरा कुत्ता वहु दे वुत्ता चिपछाती चीरन्दाहे ॥ ३३ ॥
सीरो सीरावे भ्रम धीरावे निरदावे नीरन्दाहे,
लपसी लपकावे तपसी तावे आपा सीच उठन्दाहे ।
चेली चोलां में मन मोलां में रोला में रूठन्दाहे,
पकवांन परुसे रलपट रुसे फरगट सुख फेंकन्दाहे ॥ ३४ ॥
मांखण मुख मोड़े जगकर जोड़े रोड़े सूंठ सकन्दाहे,
गुरुग्यांन गपोड़े चरचा चोड़े झोड़े झूट झुकन्दाहे ।
पांणीं कुण पावे जांजी जावे चारूं वर्ण चिकन्दाहे,
खाड़ूरा खाडू अनमी आडू लाडू खाय लुकन्दाहे ॥ ३५ ॥
सरणागत सोधे प्रेम प्रबोधे गोधे जिम गाजन्दाहे,
अण भे अण रागी पर भव पागी वग वागी वाजन्दाहे ।
सत गुरु सेनांणी वांचत वांणी पाणीं छाण पिवन्दाहे,
अण छांणयों ओही लावत लोही जोही पाय जिवन्दाहे ॥ ३६ ॥
पर पीडन पेखे दयान देखे लेखे बिन लूटन्दाहे,
परमेश्वर पाखे आ अभिलाखे छदमीं क्यूं छूटन्दाहे ।
सावल नाहिं सांधे कावल कांधे चावल जेर चुगन्दाहे ।
जी फरकन जांणें अरकन आंणे भव २ नरक भूगन्दाहे ॥ ३७ ॥

समजावे सोही वेरी वोही द्रोही हुयदाभन्दाहे,
पिंड में नहिं पांणी निज निरमांणी सठहांणी साभन्दाहे ।
राजा अरु रांणां करहा कांणां दाणां तीन दिखन्दाहे,
इक निजरन आई धुन धीठाई सुन आईन सीखन्दाहे ॥३८॥
क्यूं कांम कमावे तनमन तावे खावे भोग खटन्दाहे,
चिद्वाहा वांसे सोगन सांसे कांसे रोग कटन्दाहे ।
जीतीरो वायां जाय जिमायां शांयां काज सरन्दाहे,
धन्धे में धन्धा अन्धम अन्धा मूरख भाज मरन्दाहे ॥३६॥
पंडित सब पुरखा सींठन सिरखा ग्यानी खाय गपिन्दाहे,
दूजे किण दीठी मिली सो मीठी ए द्रिढ नेम अपन्दाहे ।
वहेणीं सो व्हेला चितदे चेला अबतो मोज उडन्दाहे,
सब वेसंसारी विनां विचारी वारी गृह वूडन्दाहे ॥ ४० ॥
गया सो गुड़का खबरन खुड़का बुड़का नहिं वोलन्दाहे,
जुड़ २ बहु जावे पता न पावे अगला नहिं आवन्दाहे ।
सिख सोचन सूंना ऊठ अभूनां धूना मार धड़न्दाहे,
साहव मन मोहा दुख सूं दोहा लोहां लोह लड़न्दाहे ॥४१॥
गेवर रज गेरे हेंवर हेरे खर घेवर खावन्दाहे,
अब गत अविणासी हे सुख रासी हांसी दुख होवन्दाहे ।
मुरधर में मोडा नीच निगोडा नाहक कान कपन्दाहे,
निरभय नीसांणां सद सेनांणां जन उमरेस जपन्दाहे ॥४२॥

॥ ओ३म् ॥

(खोटे सन्तुं का खुलासा)

(दोहा)

बांम २ बकता वहे, दांम २ चित देत ।
गांम २ नांखे गिंडक, राम नांम में रेत ॥ १ ॥

(छन्द छप्पय)

अे मिलतांई अेंठ भूंठ परसाद झिलावे,
कुल़ में घाले कल़ह माजनों धूड़ मिलावे ।
कहे वडेरां कुता देव करणी नें दाखण,
ऊठ सँवारे अधम मोड चर जावे मांखण ।
मुख रांम २ करज्यो मती म्हांरो कह्यो न मेटज्यो,
चारणां वरण सार्धां चरण भूल कदे मत भेटज्यो ॥१॥

(दोहा)

खल़ तिणरी खोटी करे, पापी अन जल़ पाय ।
मोको लागां मोडिया, चेली सूं चिप जाय ॥ २ ॥

(छप्पय)

मारग में मिल जाय धूड़ नाखो धिक्कारो,
घर मांहीं घुस जाय लार कुत्ता ललकारो ।
झोल़ी मांला झाड़ रोट गिंडकां नें राल़ो,
दो जूतांरी दोय करो मोडां रो काल़ो ।
कुल़ न्यात हीण फीटा कुटल जिके विगाड़ू जातरा ।
मम सेण वात सुणज्यो मती रहण न दीज्यो रातरा ॥२॥

(दोहा)

ग्रह धारी ओड़ां गिणां, नर थोड़ा में नेक ।
भेक लियोड़ा में भला, कोड़ा मां हीं केक ॥ ३ ॥

(छप्पय)

स्यांन छोड वहे साध रसा माता पितु रोवे,
सुत तिरिया दुःख सहे जिकण दिस फेरन जोवे ।
ढूंग उघाड़े ढगल् मूछ मुख घुरड़ मुंडावे,
जन्म भूमि में जाय भीख ले जन्म भंडावे ।
नर देह धार सोचो नरां गोल़ी देके गोररी,
निज लाज सरम पाखे नहीं अेकद राखे ओररी ॥ ३ ॥

(दोहा)

सांडां ज्यूं अे साधड़ा, भांडां ज्यूं कर भेस ।
रांडां में रोता फिरे, लाज न आवे लेस ॥ ४ ॥

(छप्पय)

जिकण लाज नें जीव कांम निस दिवस कमावे,
जिकण लाज नें जीव करज कर भला कहावे ।
जिकण लाज नें जीव धरा पहली उठ धावे,
जिकण लाज नें जीव आज लग देता आवे ।
च्यारही वरन सुण जो चतुर पाज पुकारे पेज में,
आ लाज सरम कुल़री अवे साधगमा वे सेज में ॥ ४ ॥

(दोहा)

खाय खल़ा खर खलक में, पल़ा पापरा पेख ।

सला भलांरी आ सदा, भला न लेवे भेख ॥ ५ ॥

(छप्पय)

रुल्या खुल्या रजपूत विरांमण मिलगा विटला,
वैश्य मिल गया विकल शूद्र कुल रलगा सिटला ।
चोड़े धाड़े चोर ढंग विन ढेढस ढेढी,
जिके नहीं किण जोग मिल्या घर २ रा मेढी ।
चांप ज्यो मती वांरा चरण कांप २ रो कीचड़ो,
फांपरी देर मुख फेर ज्यो खांप २ रो खीचड़ो ॥ ५ ॥

(दोहा)

बोढारे आडा वहे, सोदा मिलनें संग ।
भूकोड़ा भँवता फिरे, लाडू खावे लंग ॥ ६ ॥

(छप्पय)

मारवाड़ रो माल मुफत में खावे मोडा,
सेवक जोसी संग गरीवां दे नित गोडा ।
दाता दे वित दांन मोज मांणें मुरसंडा,
लाखां ले धन लूट पूतली पूजक पंडा ।
जटा कनफटा जोगटा खाखी पर धन खावणां,
मरुधर में कोड़ा मिनक करसा एक कमावणां ॥ ६ ॥

(दोहा)

सांधा जोड़े साधड़ा, साधां तोड़े संग ।
दरसण दे लेवे दिरब, आंदा भींत अनङ्ग ॥ ७ ॥

(छप्पय)

देदे दरसण दोड़ किता घर सूंनां कीनां,
देदे दरसण दोड़ लूट केतां धन लीनां ।
देदे दरसण दोड़ भेद घर रोले भारी,
देदे दरसण दोड़ निलज भागे ले नारी ।
त्यागो फल दरसण तणों करदे खोटी करसणां,
कर जोड़ इतो थोरो करूं दीज्यो मोरो दरसणां ॥ ७ ॥

(दोहा)

बिदर शहेल्यां बीच में हँस २ मारे होड ।
चेली सूं चूके नहीं मोको लागां मोड ॥ ८ ॥

(छप्पय)

फबे जूत सिर फूल पत्र सोई पटक पछाड़े,
फल ढूंगां में फाड तोय वांसां सूं ताड़े ।
धक्का मूंकी धूप दीप लातांरी देवे,
नाक भांग नैवेद साध पद इण विध सेवे ।
घट मार दंड घंटा घुरे ठकि कलेजो ठारती,
उतारे कोईक सेवक इसा आं सन्तांरी आरती ॥ ६ ॥

॥ ओ३म् ॥

(असन्तांरी आरसी)

(दोहा)

आवे मोड़ अपार रा खावे वटिया खीर ।
बाई कहे जिण बेंन रावणों जँवाई वीर ॥ १ ॥
गुरु गुंगा गेला गुरू गुरु गिंडकांरा मेल ।
रूंम २ में यूं रमें ज्यूं जरवां में तेल ॥ २ ॥

(छन्द त्रोटक)

सत बात कहे जग में सुकवी,
कथ कूर कथे ठग सो कुकवी ।
सतकूर सनातन दोय सही,
सत पन्थ वहे सो महन्त सही ॥ १ ॥
सतसङ्गत की महिमां सुनके,
गुरु महातम की गरिमां गुनके ।
रुरु बोलन के विसवास रए,
गुरु गोलन के हम पास गए ॥ २ ॥
फँस गये हम मोडन फन्दन में,
बहु काल रहे तिन बन्धन में ।
हित हांनि हुई हद हीरन की,
निकसी वह खांन कथीरन की ॥ ३ ॥
निरखे गुन औगुन नैंनन तें,
विरखे पुन सोचन वैंनन तें ।

कृपिया सु दयानन्द स्वामियकी,
जसवन्त मया जग जांमियकी ॥ ४ ॥
सुनिये वसुधा धूप साधनकी,
विधवा मृगि मारन व्याधनकी ।
रस भोगिय रोगिय रहवन के,
क्रम लोगिय जोगिय कहवन के ॥ ५ ॥
महि लूटन कां दल मोडन को,
गृह ही जन भंजन गोडन को ।
मुख देखन के अव धूत मती ।
जन पूजत जांन के काछ जती ॥ ६ ॥
तन लाल गुलाल प्रवाल तरे,
भल भोग नितम्ब २ भरे ।
कसिया तन घोट लंगोट कसी,
विषिया रस अन्तर वीच बसी ॥ ७ ॥
तन झीनिय चादर तांनन कां,
मन आस वधे सुख मांनन कां ।
मिल वाह कहे धुन मोरन की,
चित चाह रहे धन चोरन की ॥ ८ ॥
चटका मटका लटका चुगली,
वस अन्तर भाव छटा बुगली ।
अनु रंजन खंजन अंखन में,
झपके लपके त्रिय झंकन में ॥ ९ ॥

मृदु वायक वोध दिये महिला,
प्रिति लागन काल किये पहिला ।
महि पुन्न प्रतापहि साध मिले,
हहरे जम राज निकेत हिले ॥ १० ॥
धुरतें भ्रम भंजन नांम धरे,
भ्रमहीं भ्रमतें मन वह्नि भरे ।
कुल लाज भ्रजाद सुत्याग करो,
सुभ साध समाज सदा सुमरो ॥ ११ ॥
धुर आसत जो अन की धन की,
मिल भेट करो तन की मन की ।
सत भाव कहूं जग या सपना,
अघि अन्तर दाव करे अपना ॥ १२ ॥
कर भाव संसार असार कहे,
गुन नार निहार विकार गहे ।
मुख हाजर वोलत पुन्न मही,
नँह कार करे जस पाप नहीं ॥ १३ ॥
दुत भाव तजो दुनियां पगली,
गुरु ग्यांन गहो समजो सगली ।
सुन स्वार विचार तजो सवही,
अज काम करो सो करो अवही ॥ १४ ॥
ठग नीत सनातन रीत ठहो,
कर भेट अतीत कि देह कहो ।

प्रगटाय सबे मुख रांम पढे,
चित कास समुद्र कि वेल चढे ॥ १५ ॥
सिधवा लख धीरज से निकसे,
विधवा लख वारज से विकसे ।
सब काज भया जग में सिधवा,
बड भागण तूंज भई विधवा ॥ १६ ॥
सत पाय उपाय डिगाय सती,
पद गाय रिझाय छुडाय पती ।
अति ले खग राग त्रिग्राम अटा,
छिव मोहत हे जिन देख छटा ॥ १७ ॥
नित नार वुदार अपार निसा,
जत खोवण जार हजार जिसा ।
चव नार निहार विचार रचे,
निरखे जिम वाद्दर मोर नचे ॥ १८ ॥
भ्रम रांम सने हिय नांम धरे,
क्रम रांम सने हिय भांड करे ।
मुख वाच करे लगनी मगनी,
उर ध्यांन धरे ठगनीं अगनी ॥ १९ ॥
अति द्वार रखे निज आसन में,
मद चंदि लसे रवि मासन में ।
पग महन्त धरे ग्रह पावन कां,
नित आवत नार वधावन कां ॥ २० ॥

सग नीठ चले पग मंडन पें,
डग धीर हले जग डंड नपें ।
मिल जात कुजात जमात मही,
निज वात कथा विन वात नहीं ॥ २१ ॥
पकवांन जले विय पावन कां,
गहरी धुनिं रागनिं गावन कां ।
नव नार सुयार निजारन कां,
धर नूतन वस्त्र सुधारनकां ॥ २२ ॥
मन मोज वेरागिया मांखन में,
चित चोज सु साकन चाखन में ।
खट ही रितु मोज अखंड खरी,
घन आनद की सव जात घरी ॥ २३ ॥
दस गांम ठगे जरसी दरसी,
सत दांमन सी वरसी सरसी ।
अत आग महीं हिय अन्धन कां,
बहु लागिय कंठिय वन्धन कां ॥ २४ ॥
नित पाठक नार नसावन कां,
हिय हाटक हार हँसावन कां ।
छिल गादर कादर छटन में,
बड आदर चादर वंटन में ॥ २५ ॥
सव सोक तजे तरनीं सरनीं,
घर मह सरनीं घरकीं घरनीं ।

कलदार कला धिप भेट किए,
दिल सूं निज सीत प्रसाद दिए ॥ २६ ॥
मुखती समजी झक मारन में,
जुगती सब नार निजारन में ।
बुगला कर बैन पोटाय पती,
कर चेलिय कन्थ बनें कुमती ॥ २७ ॥
कथ कोन करे कटकी कटके,
पग अंक धरें पटकी पटके ।
बन नेटियले पितु बैटन में,
भननेटियले धन भेटन में ॥ २८ ॥
सब भांत कही हम सोगन की,
मिजले सिटले महि मोगनकी।
अन भायन जोयन आड करें,
पुनः आयन कोयन खाड परें ॥ २९ ॥
मत मोडन के मद मेटनकां,
भव भूर कवी जन भेटनकां ।
भ्रम भञ्जन कां भल छक्क भर्यो,
कवि ऊमर त्रौटक छन्द कर्यो ॥ ३० ॥

॥ ओ३म् ॥

(सन्तांरी सोभा)

इतनैं अपलच्छ असन्तन के,
सुनिये अव लच्छन सन्तन के ।
प्रण मुक्क आधपढे अपढे,
चित में सम उत्तम साथ चढे ॥ १ ॥
सनकादिक व्यास वशिष्ठ सखा,
लक्षतां जन लेख अलेख लखा ।
वहु पूत सपूत वधू तन में,
अद् भूत छटा अव धूतनमें ॥ २ ॥
पर पीर विदीरन पीर प्रपा ,
तुलसी तस वीर कवीर कृपा ।
सुधि नांनक वांनक सी सरसी,
दुति दादु दयाल समी दरसी ॥ ३ ॥
गुरु न्याय विधायक गोत में से,
पुन पाय प्रभा पुरसोत्तम से ।
अडिगासन आस अहे स्वर से,
मद नाद अमद्ध महेस्वर से ॥ ४ ॥
हर रांम रु रांम गिनों हर से,
जगमें गुरु जेमल में दरसे ।

सुपनें मन सा नहिं स्वारथकी,
प्रभु प्रारथनां परमारथकी ॥ ५ ॥
कबहु दरियाव कृपा करहें,
तब ही भवसागर तें तरहें ।
तन धारन कारन हां तरसां,
प्रभु प्यारन के पदकां परसां ॥ ६ ॥
अब नेम लगे इन आतमसां,
तब प्रेम पगे परमातमसां ।
हरि के जन हें अरु होवे हिंगे,
ढब पाय धरा दुख धोवे हिंगे ॥ ७ ॥
चिर चीज जरा जन नीन जनें,
निर बीज धरा कबहून बनें ।
अजहां जो प्रबन्ध कबन्ध अरे,
धर्म धारिन को धुर कन्ध धरे ॥ ८ ॥
सब भेख अभेख सुधार करे,
अपनीं अरु और उधार करे ।
अपकार उजार गुजार करे,
कृपिया उपकार अपार करे ॥ ९ ॥
सहु नासत सीवन सोध करे,
बहु आसते जीवन बोधे करे ।
दिल साफ रखे निज दोख दहे,
चित में नित होव न मोख चहे ॥ १० ॥

रसनामृत सार सु सत्य रटे,
कलि काल कराल कुचाल कटे।
थिर वहे हिन वचित धाम थटे,
अन इच्छत गांम हिं गांम अटे ॥ ११ ॥
निज रगरु ध्वेस से काम नहीं,
उर हांम आरांम हरांम नहीं।
गरवे स्तुति निन्द समांन गिनें,
हर वेन वनें नहिं विन्द हनें ॥ १२ ॥
गति ज्ञांन विज्ञांन गुना प्रवहे,
सत्य ध्यान विधान सुसा प्रवहे।
वसु आस निरास सुवास वसे,
लख खास विनास उदा सल से ॥ १३ ॥
तन अञ्जन मञ्जन वास तजे,
भय भञ्जन स्वास उसा भजे।
दृग देख दयालुप देस दिए,
निर वाह विसे सन सेस लिए ॥ १४ ॥
थित दाहन मेलन थेलिय की,
चित चाहन चेलन चेलिय की।
लुब लायन पाय पुजावन की,
सुभ राय सु न्याय सुझावन की ॥ १५ ॥
वन विन्दन गायन वञ्छि वहे,
उन के सुन निन्द सु अञ्छि वहे।

तपु ताप तपेरु अतिन्द्रिय वहे,
जपु जाप जपेरु जितिन्द्रिय वहे ॥ १६ ॥
किल कंचन कांमनिं त्याग करे,
धन संच प्रपंच न रंच धरे ।
तज स्वाद फिरे महि तारन कां,
निरखे नहिं नेंनन नारन कां ॥ १७ ॥
महि मित्र अमित्र मरे मरनीं,
धर पाव पवित्र करे धरनीं ।
विरदाय वडे सतियां वरनी,
कहि जाय नहीं जिनकी करनीं ॥ १८ ॥
सुर नायक सेव्य समृद्धि वहे,
वल वायक तें वज वृद्धि वहे ।
नव नेंनन में नव निद्धि वहे,
सब हाजर रिद्धिय सिद्धि वहे ॥ १९ ॥
बुध व्याधिय आधि उपाधिय में,
सुध लाधिय सुन्य समाधिय में ।
निर भय तन रोग वियोग नहीं,
सुपनें मन संसय सोग नहीं ॥ २० ॥
करुना कर आकर कीरत के,
धर्म चाकर ठाकर धीरत के ।
जक नादरु वीन्द धरे जव वे,
वकवादरु निन्द करें कव वे ॥ २१ ॥

वपु वार विचारन व्है वस में,
दिलदार सु द्वार वसे दस में।
हिये में जिन हेल हमेल नहीं,
जिये में जिन कामनि केल नहीं ॥ २२ ॥
धव के धवि वे धन धूर धरे,
कवके भवके भ्रम दूर करे।
भव बन्धन का भक भूर करे,
चय संसय का चक चूर करे ॥ २३ ॥
जुरती नहिं नहिं आवन जावन की,
फुरती नहिं रांड फँसावन की।
परवाहन पाट पटम्बर की,
अध चाह सु कम्बर अम्बर की ॥ २४ ॥
नित भूधर सीत निवारन का,
धिन जंगल गूदर धारन का।
करले धर लहर कमंडल की,
महिमा हरले महि मंडल की ॥ २५ ॥
खिज खाजन भोजन खोजन की,
मिज मानिय भिच्छन मोजन की।
छिय वन्त उदन्त दिगन्त छये,
भल सन्त महन्त अनन्त भये ॥ २६ ॥
मनदे मरजीवन के मग में,
जन जीवन मुक्त फिरे जग में।

फरियाद हिये धरले फिरले,
चस वह जन हैं सरले विरले ॥ २७ ॥
रखिये चित संपति राखन में,
लखिये इकद्दे त्रिण लाखन में ।
तरणागत हां हम सन्त के,
अरिरूप अनूप असन्तन के ॥ २८ ॥
गिरगये हम ज्यूं नहिं और गिरे,
घिरगये हम ज्यूं नहिं और घिरे ।
तिर गये हम ज्यूं तस और तिरे,
फिर गये हम ज्यूं अस और फिरे ॥ २९ ॥
भल साध सदा सुख भेटन कां,
फिर फीटम देवन फेटन कां ।
भ्रम भञ्जन का भलछक्क भरयो,
कवि ऊमर त्रौटक छन्द करयो ॥ ३० ॥

(दोहा)

कहणी प्रभूरी भेन कछू, रहणी रीझे रांम ।
सुपनें की शो महोर सूं. कोड़ी सरे न कांम ॥ १ ॥
कईही छांनीं कांन में, मांनी नहीं महाराज ।
वांनी पड़ी विवेक में, अनां कांनी आज ॥ २ ॥

(ऊमरदांनजीरा)

(महिंशिया)

(दोहा)

हमे निपट अलगो हुवो, लालस नेह लगाय ।
कागा विच डेरा किया, जागा अबकी जाय ॥ १ ॥

विद्या कविता वीरता, ऊमर तो उपदेश ।
एकणहां फिर आवज्यो, रोवे मरुधर देश ॥ २ ॥

समन जु सोचे कोन को, हँस जो कोन विचार ।
गये सो आवन के नहीं, रहे सो जावनहार ॥ ३ ॥

॥ ओ३म् ॥

(गीत सावझड़ो)

अगहन मास कत्यूग्यो आखो,
पो त्रेताजुग वीतो पाखो ।
द्वापुर माघ महींनों दाखो,
रसा सिधायो आ चितराखो ॥ १ ॥

हिमते सिसहर रितू विहाई,
दह्यो वसन्त वात दुखदाई ।
ग्रीखम पावस सरद गहाई,
अे च्यारूं कलियुग में आई ॥ २ ॥

मकर सक्रांयत वैठी मारी,
क्षत्रिन हित लागी अति खारी ।
भूपर ब्राह्मण भये भिखारी,
हे प्रवेस करगी हतियारी ॥ ३ ॥

वेद दुसाला वालां वूढां,
राली गांमल नांख्या रूढां ।
ग्यांन पथरणों धरियो गूढां,
मेली विद्या रजाई मूंढां ॥ ४ ॥

लगतां फागण लूरां लागी,
अड़े द्रोण अरु द्रुपद अभागी ।
वीरां खाग परस्पर वागी,
जिण सूं ज्वाल लड़णरी लागी ॥ ५ ॥

भिड़े भीम अर्जुण कुरु भारत,
गेहर डांडियां रम कुल़ गारत ।
मरयो सुयोधन गो झक मारत,
आर्य्यवर्त को करगो आरत ॥ ६ ॥
राज कर्म में पड़गी रोल़ी,
सनूं मरम मर जादा मोल़ी ।
झड़ी सरम फूलांरी झोल़ी,
हुयगी परम धर्म की होल़ी ॥ ७ ॥
अस्त्र गुलाव अबीर उडायो,
सस्त्र पिचर कां छिंव सर सायो ।
वीर नाद सोई चङ्ग वजायो,
रंग फाग सम जंग रचायो ॥ ८ ॥
चलतां चेत वांम मग चाल्यो,
घाव सधर वेदां पर घाल्यो ।
अश्वा लम्व गवा लम्ब आल्यो,
झटके गधो सीतल़ा झाल्यो ॥ ९ ॥
जन वांम मचिया चड जोरां,
गहरे सुर आई गिण गोरां ।
छित पर मिल २ छोरयां छोरां,
करदी सांझी च्यारूं कोरां ॥ १० ॥
चोरां जुगती कुगती कीनीं,
भोग भोगणं घण सुख भीनीं ।

कपटी दरसण मूर्ति कीनीं,
दिव्य धर्म बोला वाणीं दीनीं ॥ ११ ॥
वैसाकां में विलखा वांमी,
हुयगा सबला जैन विरामी।
आखा तीजां घणी अमांमी,
सिद्ध जन्मियो शंकर स्वामी ॥ १२ ॥
वेद धर्म सद सुकन वतायो,
अमल नयो वेदान्त अचायो।
प्रीत नीत गलवांणी पायो,
खण्डण जैन खींचड़ो खायो ॥ १३ ॥
शंकर वेगो गयो सिधाई,
परजा दुखी घणीं पिछताई।
मारग लूवां लपट मचाई,
अब ऊपर तिस मारी आई ॥ १४ ॥
तपे भूम अम्मर हुय ताता,
भुर झाई भगती पितु माता।
चागी भाट पिछ दिस वाता,
वंक हुवो सव देस विधाता ॥ १५ ॥
तर धर सूका नदी तड़ागा,
लाज धर्म विद्या मग लागा।
आरज हंसा उडगा आगा,
कपटी दायर रहगा कागा ॥ १६ ॥

संप सु झरणां गया सुकाई,
लोक लीक सुभरीत लुकाई।
झप्प अंगमल अम्ब झुकाई,
कोचर कंठ कुसम्प कुकाई ॥ १७ ॥
सील सन्तोष शूरता सारा,
तूटण लगे दिवस में तारा।
खूटा नीर निवांणां खारा,
चोपायां धर मिलेन चारा ॥ १८ ॥
भूमि मांझ धसगो जस भोगी,
साच सु हस्ती ससके सोगी।
दांन उंठरे लागी दोगी,
जांण अजांण सोई थाको जोगी ॥ १९ ॥
जाचक हिरण तिसाया जावे,
पुन्न नीर सुपनें नाहिं पावे।
धरा जिग्या सू दस दिस धावे,
मृग त्रिसणां गुरु लख मुरझावे ॥ २० ॥
चौर गुरू विच्छू चटकावे,
ग्यांन राच विर्ला गट कावे।
भेक छाछ कारण भटकावे;
लुच्चा वागल ज्यूं लटकावे ॥ २१ ॥
पंखे सम सज्जन कोई पावे,
हेत प्रीत सोई पवन हलावे।

छिमा गुलाव नीर छिड़कावे,
पितु बट छाया कोईक पावे ॥ २२ ॥
सन्त संगत शुर बाग सुकायो,
मिले कहूं वलियो मुरझायो ।
ठंडो जल नहिं ठेरे ठरायो,
भूले ज्ञान सुणयां मन भायो ॥ २३ ॥
आई उमड अविद्या आंधी,
च्यार वर्ण चडगी चख चांधी ।
विरछां धजा तूटगी बांधी,
सदाचार री सधे न सांधी ॥ २४ ॥
कविजन बृन्द कँवल कुमलाया,
गीत कुकवि जण स्यालां गाया ।
मूरख भगतां सोर मचाया,
काली रात जरख कुरलाया ॥ २५ ॥
ओ ऊपर ऊनालो आयो,
दीन जनां दोरो दरसायो ।
पांणी ज्ञान कोई नहिं पायो,
कूके लोक हुवो अति कायो ॥ २६ ॥
उर कन्तर में करुणां आई,
सारे देस करण सुख दाई ।
मिन्दर तीर्थ पोवां मंडाई,
खर पावे खारो जल खाई ॥ २७ ॥

चयार सम्प्रदा जिण हित चाली,
प्रगट हुई ज्यूं झांझी पाली ।
महिला नीर भरण नें म्हाली,
खारो जल़ ऊंडो तल़ खाली ॥ २८ ॥
वल्लभ कूप खिणायो वेड़ो,
भरियो नार भिराव्रो भेड़ो ।
नींवे तलो निकाल्यो नेड़ो,
जिण रो आव नांव रे जेड़ो ॥ २६ ॥
माधव साधन अरठ मंडायो,
खारो मुख ले घणो खिडायो ।
छाक पियो जिण पेट छुडायो,
भारी पाणी जन्म भंडायो ॥ ३० ॥
शंकर सागर हुयगो सुरड़ा,
करण मिले नहिं पांणी कुरड़ा ।
चोभ मांय ठहरे नहिं चुरड़ा,
जिण री पाल़ पड़े दस दुरड़ा ॥ ३१ ॥
दस नांमी दस हूं दिस दोड़े,
थल खोसे धापे नहिं थोड़े ।
मोसे परजा वेगे मोड़े,
ग्यांन ध्यांन सव धस्यो गपोड़े ॥ ३२ ॥
रामा नुज रिद गुपत रखावे,
सिड़ियो नीर वास सरसावे ।

मांहिं सिंवाल् जाल नहिं मावे,
पैसे विन छांटो नहिं पावे ॥ ३३ ॥
महावीर गोतम मुख मोड़ी,
चौतीसों खिणियो मिण चौड़ी ।
जैनी खाड चिड़ी पट जोड़ी,
मोत हुवे सो जाय मकोड़ीं ॥ ३४ ॥
आपी पाव कबीर बणाई,
चोखी ईंटां पकी चणाई ।
मूरख मिल्‌ना रखी मणाई,
घुस खर गिंडक पियो घणांई ॥ ३५ ॥
पालर ठंढो जांभे पायो,
स्वाद अनोखो घणों सरायो ।
दया करी निज ताल दिखायो,
गया पाडिया जल् गिदलायो ॥ ३६ ॥
दीन लोक ठहर्‌या कछु देरी,
घर हित घणा आनंदरी घेरी ।
फिरगो रतनागर चहुं फेरी,
विचरी वासा मीठी वेरी ॥ ३७ ॥
नांनग शरवर भरियो नीको,
झुके लोग पीवण दे झीको ।
ठगवाजी गादीरो ठीको,
फेर सिकां करदीनों फीको ॥ ३८ ॥

हरीदासरो नासज डूणों,
दादूरो सारां सूं दूणों।
सन्त दासरो हुयगो सूनों,
आंतो पाणी पायो ऊनों ॥ ३६ ॥
रामचरण पो ऊपर रहियो,
सीत घांम अपणें शिर सहियो।
कंठ सुं पांणी २ कहियो,
त्रिललां भांग पिलायर वहियो ॥ ४० ॥
आछ रामदे पीवण अटकी,
भांदू नाभे घाली भटकी।
मीरां फोड़ गई जल मटकी,
पापी अेड़ बोवदे पटकी ॥ ४१ ॥
इण पर पड़गी रात अजांणी,
पीवण नें घट में नहीं पांणी।
तिरिया पुरुषां खांचा तांणी,
प्यासां मरता विलखा प्रांणी ॥ ४२ ॥
हिया माझ उटे घण हूंकां,
च्यार वर्ण अपणों मग चूकां।
सासा तिसां मरतां कठ सुका,
ढेढ घरे खेड़ाये ढूका ॥ ४३ ॥
भनण कवण रो हे रे भाई,
जीव तिसां मरतां रो जाई।

पांणी तो हूं देत पिलाई,
ठांव ढेढें रो हे ठकुराई ॥ ४४ ॥
ढेढ नांम सुण पाछा ढलिया,
बाट आवता उण हिंज वलिया ।
टालां अठी उठी नहिं टलिया ।
छली रामले पाछा छलिया ॥ ४५ ॥
अगम भोम सूं में चल आया,
पूरां कारण ब्रह्म पठाया ।
पोची जात हींण घर पाया,
लिछमी वर सूं प्रांण लगाया ॥ ४६ ॥
भजन करूं सुमरूं भगवांनां,
वंस धर्म रो तजिये वांनां ।
छितपर रहूं जगत सूं छांनां,
दिव्य दृष्टि कोई लख सी दांनां ॥ ४७ ॥
सता समाध अगम घर सोऊं,
दस दिस रांम रमैयो दोऊं ।
जगत भोग सपनां सम जोऊं,
हमहीं गाय सिंघ में होऊं ॥ ४८ ॥
सिमरूं जग पति सासो सासा,
तीन लोक जम मनें न आसा ।
देह हमारी जगमें दासा,
वसे जीव अमरा पुर वासा ॥ ४९ ॥

जात पांत सपनें सम जांणूं,
पाप पुराय नहिं एक पिछांणूं ।
वपु तो म्यांन समांन वखांणूं,
सार सनांन जीव सेनांणूं ॥ ५० ॥
वात मांनली लम्प वांढां,
नीत विगाड़ी निलजां नांढां ।
मिलगी जोड़ी जांनां मांढां,
ढेढ कहयो ज्यूं सुणियो ढांढां ॥ ५१ ॥
लीण अलीण गली नहिं लाधी,
बुध विन जगत बूडगी वाधी ।
अकल हियारी रह गई आधी
खोपी में खेड़ापे खाधी ॥ ५२ ॥
चाह नीर मिलगो चित चायो,
हेर भलोहुवो हित हर खायो ।
पेला उंण मीठो जल पायो,
लारां सूं अंठो खल लायो ॥ ५३ ॥
ढीलो मूंडो मेले ढेरा,
टिकगा पांणी पीवण टेरा ।
डलां उठे कर दीधा डेरा,
चाटे हिलगा चाटण चेरा ॥ ५४ ॥
सद विद्या विन राहन सूझे,
उर अन्तर में जीव अमूझे ।

बीजांन फिर २ मग बूजे,
दूजा घाले मारग दूजे ॥ ५५ ॥
सम्पट हुयगो थल़ जल़ साई,
लम्पट हुयगा लोग लुगाई ।
कम्पत लीली डाल़ सुकाई,
चम्पत हुयगी सब चतुराई ॥ ५६ ॥
इतरे लाभ बथूल़ो आवे,
कहर क्रोध डंडूल कहावे,
छितपर कांम धुन्ध नभ छावे ।
पात्र विके क निजर नहिं पावे ॥ ५७ ॥
चाह करीर कली नृप चटके,
भँवर छेल वेश्या घर भटके ।
पत महुवा सम दानीं पटके,
क्षत्रिय वंश वांस मिल खटके ॥ ५८ ॥
वीर पुरुष निज प्रांण विहावे,
जिण उभां निज धर्म न जावे,
मांस मिले नह तो मर जावे ।
खूटो सिंघ घास नहिं खावे ॥ ५६ ॥
अन्त असाड दयाकर आयो,
छोणी ज्ञान घुमड घण छायो ।
सांवण हरिकर सुख सरसायो,
भादो अम्मृत झड़ बरसायो ॥ ६० ॥

वहे व्याख्यांन वळो वल वाळा,
नीर निवांण ताल नद नाला ।
पड़े प्रेम घर २ परनाळा,
जुगती जळ मेटी त्रिस ज्वाळा ॥ ६१ ॥
थिर आसोज वेद मग थाटो,
लम्पट वालि रांवण कुळ लाटो ।
भँवँतां कर्म जोग पड़ भाटो,
काती में मचगो कळ ळाटो ॥ ६२ ॥

॥ ओ३म् ॥

(राग सोरठ पश्चिमी)

टेर—जिवड़ा जुगत न जांणी रे,
मुक्त होवणरी मनमें मूरख उगत न आंणीरे।
ओ३म् अथ अखिलेश्वर अविणासी अज अगवांणी रे।
विश्वम्भर घट २ में व्यापक वेद वखांणी रे॥ जिव० ॥१॥
परमेश्वररी आज्ञा पूरण नहीं पिछांणी रे।
पागलपण सूं फिर २ पूजे पाहण पांणी रे॥ जिव० ॥ २ ॥
भगल भागवत पेट भरणरी कुटिल कहांणी रे।
सत्यार्थ सुणियां विनां सांप्रत होसी हांणी रे॥ जिव०॥ ३॥
परधन हरण परायण पांमर वञ्चक वांणी रे।
ते झूठी बुगलांरी वातां नाहक तांणी रे॥ जिवड़ा०॥ ४ ॥

श्रीमान् स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज का संक्षिप्त जीवनचरित्र ॥

(लावनी)

टेर—कित गयो कल्पनिधि हिये कुमदनि हितकारी,
आर्य्यन को स्वामी दयानन्द उपकारी ।
गौ ब्राह्मण की गरहा गरहित गोस्वांमी,
करुणांनिधांन करुणांमय नित निसकामी ।
इस आर्य्यावर्त्त को रच्छक अन्तर्यामी,
निज आज्ञापालन भेज दियो घन नांमी ॥

॥ दोहा ॥

उदर ब्राह्मणी अवतर्‌यो, पद संन्यासी पाय ।
चतुर नरां चित में चढ्यो, दयानन्द गुरुदाय ॥
आनन्द कन्द चगवन्द चन्द उजियारी । आर्य्यन को० ॥१॥
गुजरात देश में जन्म लियो गुन ग्राही,
अवधीच वंश बिच अंशुमांन उमगाही ।
आठवें वर्ष उपनयन भयो अवगाही,
चुप बाल काल में विद्या चित से चाही ॥

॥ दोहा ॥

धन्य मात पितु धन्यधर, नाम धन्य निरधार ।
सरणायां साधार सुत, आतम को आधार ॥

जस छायो जायो आयो आंख अगारी ॥ आर्य्यन को० ॥२॥
शिवरात्रि में शिव दरशण गयो सुकेरो,
अवलोके आँखू शिव जब हुओ उजेरो।
यह अन्दा धुन्ध परिपाटी महा अन्धेरो
घर त्याग नीसर्यो घनानन्द को घेरो॥

॥ दोहा ॥

नैष्टिक ब्रह्मचारी निपुण, भयो संन्यासी भूर।
इकदम आर्य्यावर्त्त को, दुख कीनो सब दूर॥
अति उत्तम आयू अपनी आय उधारी। आर्यन को स्वां० ॥३॥
उद्धारक आर्यावर्त्त वीर अगवांनी,
गुरु विरजानन्द समीप गयो ब्रह्म ज्ञानीं।
प्रभु पाणनीय व्याकरण प्रमांण प्रमानी,
पढ महाभाष्य अभ्यास पिछांन पिछांनी॥

॥ दोहा ॥

पद पदार्थ सम्बन्ध पुनी, प्रत्यय आगम लोप।
आरस पोरस सुभ असुभ, ग्रन्थ हृदय धर गोप॥
वेदन की वेदन भेदन भली विचारी। आर्यन० ॥ ४ ॥
वेदोपवेद ब्राह्मण विधि युक्त विभ्यासे,
आगमरु निगम व्याख्यांन विधांन अभ्यासे।
पंडित हुय सत्यासत्य प्रमांन प्रकासे,
निजबलतें नित्या नित्य निदांन निकासे॥

॥ दोहा ॥

सांगोपांग हि स्वर सहित, अच्छर शुद्ध उचार ।
श्रोत स्मार्त सुधार किये, आर्यावर्त्त उद्धार ॥
वेदों की व्याख्या विमल करी बलिहारी । आर्यन को० ॥५॥
गोतम सोगरवो न्याय मांझ निरधारयो,
वेदान्त शास्त्र विच वेद व्यास सम सारयो ।
वैशेषिक में कण भुकसो बल विस्तारयो,
पातंजलि पाठ पतंजलि जेम प्रचारयो ॥

॥ दोहा ॥

सांख्य शास्त्र में कपिल सम, सृष्टिक्रम समझाय ।
मीमांसा में जैमिनी, करम कांड करवाय ॥
षट शास्त्रन शिच्या शिच्या सहित सुधारी । आर्यन० ॥ ६ ॥
सत वक्ता श्रद्धा शील शमिच्यक शूरो,
पुरुषार्थ पूरण प्रेम प्रतिज्ञा पूरो ।
दुरव्यसन दुराग्रह दूषण से दृढ दूरो,
अन भंग उतंग उमंग न अंग अधूरो ॥

॥ दोहा ॥

जग जीतन की जीव मैं, जगी अखंडित जोति ।
दयानन्द दिग विजय किये, अपनें बल उद्योति ॥
गम्भीर गिरा गुन हीन गाढ अब गारी । आर्यन० ॥ ७ ॥
पलभर पुराण सांमें डटणें नहिं पाई,
जैनन की जड़ता जड़तें गरज गमांई ।

बायबिल कर बटका २ विहंस बगाई,
अट बट कुरांन की छांनरु छार उडाई ॥

॥ दोहा ॥

एकहि वेद अनादि है, आधुनीं कहै अन्य ।
धर्म धुरन्धर धीर धर, धन्य २ तूं धन्य ॥
वसुधा बिच बंके बंकी बात बिथारी । आर्यन० ॥ ८ ॥
पाखंड खंड दव दंड अखंड पुजायो,
धरनी तल को बल बंड प्रचंड धुजायो ।
छल छंड वितंडन दंड वितंड छुडायो,
आर्यन कुल मंडन मंड अफंड उडायो ॥

॥ दोहा ॥

वरणांश्रम की विवस्था, बांधी बडे विचार ।
कंठी तिलक उथाप कियो, आदि धर्म आचार ॥
कुपि नास्तिक कां किये, आस्थिक कर किलकारी ।
आर्यन को स्वां० ॥ ९ ॥

(भजन घुडदोड़)

टेर—मूढ मन क्यूं घुड़ दोड़ मचावें,
खाली गोता खावे मूढ०
रात दिवस के रेस कोस में बाजी लाव बनावे,
जाकी पार कोई हुय जावे बेनिंग पोष्ट बतावे ॥ मूढ० ॥१॥

हिया फूट होवे नित हलको खूब धाप नहिं खावे,
भक्ष्या भक्ष विचार न भावत चाह रोज चढ टावे ॥ मूढ० ॥२॥
लोकलाज कुल रीत लोप के मस्तक मूंछ मुडावे,
लागी लगन नींद नहिं लेवे घोरे प्रात घुमावे ॥ मूढ० ॥३॥
पुरुष बडां सूं होयन प्रीती जोग पास नहिं जावे,
छके मोद छोरां में छैलो संगत नींच सुहावे ॥ मूढ० ॥ ४ ॥
लोभी लपक गोल कफ लेवण चक्कर अस्व चलावे,
वाटर जम्प उलंघ बावरो केईक टट्टी कुदावे ॥ मूढ० ॥ ५ ॥
रोके तुरंग वेग को राखे अपनी घात उपावे,
जीतन की जांनें वहु जुगती जन्म हार तो जावे ॥ मूढ० ॥६॥
जीत पोष्ट के पास जावतां चावक चोट चलावे,
लाख जतन कर दे ललकार जीत और लेजावे ॥ मूढ० ॥७॥
थेटम थेट तुरंगम थाके पेंड चलण नहिं पावे,
हार जुवा नित हय खरी दे गाफल दांम गमावे ॥ मूढ०॥८॥
देखे डाव पीठ दुसमण के धीमी चाल धपावे,
पूरे वेग करे जब पट्टी लखम मरेज लगावे ॥ मूढ० ॥ ९ ॥
घट में दोड़े घोड़ा घोड़ी और दाय नहिं आवे,
न्याय धर्म नीती निज न्यारी कांम सुद्ध छिटकावे ॥
मूढमन क्यूं घुर दोड़ मचावे ॥ खाली० ॥ १० ॥

(राग भैरव प्रभाती)

टेर—सैंनी में समजावे सत गुर । से० ॥
सुण समझे कोई सुघड़ सयाणों भोंदु सुण भमजावे ॥ सैंनी० ॥१॥

आयां साधन देवे उत्तर वान्छित वस्तु वतावे,
व्हेजेड़ी कर देवे हाजर पद ऊंचा जदपावे ॥ सैंनी० ॥ १ ॥
चतुर होय कोई चेला चेली ऊठ सँवारे आवे,
दरसण कर साधांरे दड़के पावां में पड़ जावे ॥ सैंनी० ॥ २ ॥
मिनख जन्म अमोलक मूरख पांवर फेरन पावे,
हिल मिल हँसणों वेवल वसणों ओ मोसर कद आवे ॥सैंनी० ॥३॥
काया कोट काच सो काचो जतन करन्तांजावे,
भण गुरु ज्ञान नफो इक भाया अरथ और के आवे
॥ सैंनी० ॥ ४ ॥
पसू खाल की वणें पगरखी पेर पेर सुख पावें,
अर्थ खाल थारी नहिं आवे लेवो अरथ लगावें ॥ सैंनी० ॥ ५ ॥
डहक्योड़ा डोले केई डोफा गाफल जन्म गमावे,
राजी भेख मात्र ने राखे सेजाहीं सुख पावे ॥ सैंनी० ॥ ६ ॥
देख कांमहे जमदूतां सूं जूतां सूं जरकावे,
अवधूतांरे सरणें आपद छूतांहीं छुटजावे ॥ सैंनी० ॥ ७ ॥
मांरो थांरो करमाया में उल्झ्योड़ा उलजावे,
कुलवेलगे गुरांरी कूंची खट ताला खुलजावे ॥ सेनी० ॥ ८ ॥
नाभ कवल में नाच नचावे सव रग २ सण जावे,
अनहद नाद वजे इकतारा गगन मंडल गणणावे ॥ सेनी० ॥ ९ ॥
जन्म भूमि में करे जातरा पाप प्रवल पिल जावे,
पून्न पाछला होवे पूरा आ मनमें जद आवे ॥ सेनी० ॥ १

जोई जुगत करमरी कीरत जपीन मुख सूं जावे,
सुघड़ सुणों साधांरो सूजस ऊमर दांन उडावे ॥ सेनी में समझावे० ॥ ११ ॥

(राग आसा)

टेर—समज सठ आतम ज्ञान अज्ञानी,
माया वादी गूढ मसकरा मूढ महा अभिमानी ॥ सम० ॥
काली कांणी कोभी कांमण अपणीं परणीं आछी,
अवछर आभ अवर अर धङ्का पद मण धरिये पाछी ॥ स० ॥ १ ॥
तीन दिनां सूं साक मिले तोई धोको हिय न धारो,
सूंक लेर पधरावे सीरो नहिं नीको निरधारो ॥ स० ॥ २ ॥
साच वोलियों टुकड़ा सूका मिल जावे सोई मींठां,
कूड वोल पकवांन करावे धूढ बराबर धीठा ॥ सम० ॥ ३ ॥
हाल कमाई घाट हरक सूं पतली गट २ पीणीं,
घोर रेत सम चेत घमन्डी चोर लियोड़ी चीणीं ॥ सम० ॥ ४ ॥
अंग दया घरघोर अन्धारो पूनम सी छविपावे,
दया हींण घर दीन दिवाली काली रात कहावे ॥ सम० ॥ ५ ॥
विसन विनां दस बीस वरस विच मरणों सुर्ग सिधाणों,
विसनी नर सो वरष जिय वपू पूगे नरक पयाणों ॥ स० ॥ ६ ॥
सुकृत लगन स्वाधीन सदाई सदा मगन सुख रासी,
सन मुख सम्पत लगत अग्नीसी परा धान दुख पासी ॥
॥ स० ॥ ७ ॥

बिभचारी वैरी वद वंचक छल वल कपटी छानों,
म्हा मोह हींसक मूरख सूं मरणों उत्तम मानों ॥ स० ॥ ८ ॥
कांमी क्रोधी कृपण कलंकी कुटिल कजाक कसाई,
चोर चुगल चालाक चतुर सूं भोलो आछा भाई ॥ संम० ॥ ६ ॥
ऊंच नींच अन्तर नहिं एको रांम भजे सोइ रूडो,
परमेश्वर ने नहीं पिछाणें चार वरण में चूडो ॥ समं० ॥ १० ॥
आतम अन्तर सार अहर निस तार निरन्तर तोफा,
पांणी पाहण में पर सातम वाहर दूढत वोफा ॥ स० ॥ ११ ॥
जोग जुगत जगदीश्वर जपणा अपणां जन्म उधारे,
ऊमर दांन अनूपम आशय विरला वात विचारे ॥ स० ॥ १२ ॥

(राग सारंग)

टेर—मना मान रे कह्यो,
जांन हे अजान में सुजान क्यूं रह्यो ॥ मना० ॥
साह हे असाह चाह दाह तें सह्यो,
राह छोड अहा तूं कुराह क्यूं गयो ॥ मना० ॥ १ ॥
राज कांज रीत नीत वूजतो रह्यो,
वाट आन्धरे कि पार सूजतो वह्यो ॥ मना० ॥ २ ॥
चेन को कुचेन सें गमावनों चह्यो,
सेन साथ नेंन को नसावनों रह्यो ॥ मना० ॥ ३ ॥
रांम नांम साजना में लाजनो रह्यो,
गाजनां गिंवार गोल भाजनो गयो ॥ मना० ॥ ४ ॥
कोर को सुधार ज्ञानी गोर तें कियो,
आपनों उधार पानीं घोर तें पियो ॥ मना० ॥ ५ ॥

कौ सवाल कीन जो जवाव दे दियो,
रांम को जवाब देन जाव ना रियो ॥ मना० ॥ ६ ॥
ओर की निहार अेव आजलूं जियो,
आपनें किये कि ओर फोर तें हियो ॥ मना० ॥ ७ ॥
आपनों ईं भायो ऊंमर काम तें कियो,
देव को सुहायो जहां पांव नां दियो ॥ मना० ॥ ८ ॥

(राग प्रभाती)

टेर—दोस नहीं थारा में दोसत, दोस तिहारी दाई ने ।
नाला साथे नाड़ न काटी, धाई रांड वधाई ने ॥ दोस० ॥
मात पिता में दोसण मोटो, प्रथम मिल्या सुखपाई नें ।
नंग दोनां मिल ओ निपजायो, हीया फूट हरखाई नें ॥ दोस० ॥१॥
पेट मांय खोटी पुल पड़ियो, मेटण कुल मगजाई नें ।
गिरियो हाय गजवरो गोलो, अेव गेव रो आई नें ॥ दो० ॥ २ ॥
कर दिल काठो दियो न दाटो, मन माठो मुरझाई नें ।
उरकां काठो आगे पड़ियो, ओ भाटो जद आई नें ॥ दो० ॥ ३ ॥
पेट कपूत सपूत परखियो, खोद न दीनो खाई नें ।
लख लांणत मिनकी नें लागी, उण वेला नहिं आई नें ॥ दो० ॥४॥
पढणीं वेला में पग फावे, पढ्यां विचे पोमाई नें ।
करे दलील जिकां सूं कोई, लादे स्यार लड़ाई नें ॥ दोस० ॥ ५ ॥
मारण २ समझे मूरख, तारण लखे न ताई नें ।
रात दिवस हिंसा सूं राजी, करदे मात कसाई नें ॥ दो० ॥ ६ ॥
महा कपूत मुलकरे मांहीं, लेण सपूत लड़ाई नें ।
पोल मांय ऊंमर पद पढियो, सुघड़ लेख सुघड़ाई नें ॥ दोस० ॥७॥

॥ ओ३म् ॥

॥ भिन्न २ विषय ॥

(कलदार करामात)

अब कलदार लियो अवतारा,
सब कलजुग को देन सहारा ।
तुरंत रेल अरु तार उतारा,
एक करण सब को आचारा ॥
भजकलदारम् भजकलदारम् कलदारम् भज मूढ मते ॥१॥
ओ कलदार पुरुष अविणासी,
पुन काटत यह जम की पासीं ।
क्यूं जाइये फिर मथुरा कासी,
वहां हीं हैं सब याके उपासी ॥ भज कल० ॥ २ ॥
भजन करे याको बड भागी,
भजे नहीं सो परम अभागी ।
लेवण लगन परम पद लागी,
रात दिवस रहिये अनुरागी ॥ भज कलदा० ॥ ३ ॥
भाई तुजे बता ऊंभेवा,
साचे तन मन करियो सेवा ।
मोज बनेंगी मिलिहें मेवा,
दोस देख बोलता देवा ॥ भज कल० ॥ ४ ॥

करहो कृपा अहो अविकारा,
अब नहिं लेन उधारा ।
पाकट बसहु प्रांन से प्यारा,
झलरि ज्यूं देती झणकारा ॥ भजक० ॥ ५ ॥
जोगी जंगम जोवत जत्ती,
साद सेवड़ा सेवत सत्ती ।
ग्यांनी गिणत इसी को गत्ती,
भगवत यही यही भगवत्ती ॥ भजकल० ॥ ६ ॥
जब कलदार पास वहे जावे,
दीन होय नहिं दांत दिखावे ।
चीणीं चावल घी चलि आवे,
आप अरोगे अनन्द उडावे ॥ भजक० ॥ ७ ॥
चेला गुरु चलते एक चीले,
हैं कलदार बटोरण हीले ।
पिरजाकां हाकम सब पीले,
बस कोहोलु कांनून बसीले ॥ भजकल० ॥ ८ ॥
माया ब्रह्म राधिका साधो,
सरगुण निरगुण सुमरण साधो ।
लोकां मिनक जमारो लाधो,
अष्ट पहर यह इष्ट अराधो ॥ भ० ॥ ९ ॥
जग सब दीसत आता जाता,
सब क़ामन इण मांय समाता ।

दुनियां मांय चतुर फल दाता,
विश्वम्भर विश्वेश विधाता ॥ भजकल० ॥ १० ॥
विन कलदार वृद्धि नहिं वंसा,
पुन या विन होत प्रसंसा ।
संकट हरण भजहु वेसंसा,
अह नर नार जगत अवतंसा ॥ भ० ॥११॥
सबका सेवक सबका स्वामी,
जग सबका है अन्तर जांमी ।
सोले कला सहित सत्कामी,
निकट निवास करहु घन नांमी भजकल० ॥ १२ ॥
को सुत विनता किस के भ्राता,
स्वारथ परमारथ सुख साता ।
मासा दस विन बारह मासा,
तोविन सब करे तमासा ॥ भज० ॥ १३ ॥
ऊंमर आज जमानां ऐसा,
को घरवार निभेगा कैसा ।
पास नहिं जब होवै पेसा,
जग में जीणां मरणें जैसा ॥
भजकलदारम् २ कलदारम् भजमूढमते ॥ १४ ॥

(करन्यास)

दोहा—कोडी विन कीमत नहीं सगानराखे साथ ।
हारज नांणों हाथ में वैरी बूजे वात ॥

ओ३म् वाक् वाक् ॥ १ ॥

दालद घर दोलो हुवे परणि न आवे पास ।
रुपिया होवे रोकड़ा सोरा आवे सास ॥

ओ३म् प्राणः प्राणः ॥ २ ॥

कल जुग में कलदार विन भायां पड़िया भेव ।
जिण घर माया जोर में दर सण आवे देव ॥

ओ३म् चक्षुः चक्षुः ॥ ३ ॥

रुपियां विन रागां करे हाजर जोड़े हाथ ।
एक अधेली आड में बोलो सुण ले वात ॥

ओ३म् श्रोत्रम् श्रोत्रम् ॥ ४ ॥

भांत २ रा सांग भर प्रभु सूं करेन प्रेम ।
सोधे लिछमीं साधडा नाभकवल रो नेम ॥

ओ३म् नाभिः ॥ ५ ॥

घर धारी घवराय नें भणिया मांगे भीक ।
नांणों ले प्रभु नावरो ठरे कालजा ठीक ॥

ओ३म् हृदयम् ॥ ६ ॥

करे कमाई कपट सूं दीन हांण कर दोर ।
कंठ दाव काडे कसर जमका लागे जोर ॥

ओ३म् कण्ठः ॥ ७ ॥

देवां रो ही देवता, रुपियां रो ही राज ।
अङ्गरेजां में आज दिन, सारांरा सिरताज ॥
॥ ओ३म् शिरः ॥ ८ ॥

दोलत सूं दोलत वधे, दोलत आवे दोर ।
जस होवे सब जगत में, जोबन आवे जोर ॥
ओं बाहुभ्यां यशो बलम् ॥ ९ ॥

धन्धो करणों धर्म सूं, लोकां लेणों लाव ।
पइसो आवे प्रेम सूं, दव के लेणों दाव ॥
इति कर्तलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ १० ॥

हक्क कमायो हाथ सूं, ठावो धरिये ठांम ।
लुच्चो आवे लेणने, दीजे एकन दांम ॥
इति अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ११ ॥

अन धन जिण घर आसरो, भला अरोगे भोग ।
पइसो हवेन पास में, लुलु करदे लोग ॥
इति अनामिकाभ्यां नमः ॥ १२ ॥

(छप्पय)

मधु माखी कर महर कह्यो नित महनत करणी,
मिन्नी सांमी मिली विवधविद हिम्मत वरणी ।
कराबू कृपा रीझ रमणी री झांणी,
चिड़ियां दियो चिताय लाख विध रोजी लांणीं ।
हित हिरण हूंत लागो हिय भागो अंरियां भीडियां,
जग पेट जमावण नें जतन कह्यो कमावण कीडियां ॥१॥

(ढूढाड़ का ढंग) ॥ मसकरी की मा ॥

(कवित्त)

येरे नादी दी यारां की लार कोड़ी ने चाली छे यांन,
नठोड़ी नगोडी रांड न माने री नीच ।
भेभी छां मुछाला मांक पाग छे माथा के माले,
माल जादी मानें क्ये मरचा जाग्यां मीच ।
न्यात छे जात छे मांके पांत छे वराजां नींकां,
हेड़ो कोको व्हेछ ल्यांछां लांयणां भी हेर ।
हरांमां की पिल्ली क्यूं हरांम जादी फूटयो हीयो,
वेरो कोन्यां नसे गोसे के दीनों सो वेर ॥ १ ॥

टूम टाम छल्ला वींटी छीन दारी काडयूंतो ढोल पड़े
चाड़यूंतो माजनोधिक्कार ।
भूटी खूसड़ी की खाली आंख ऊगड़ी कोन्या भांक
इसी रीस आवे लेल्यूं लूगड़ी उतार ।
इकी घाल्या कोड़ी नें जावां आवरू उडावे छेरी,
लुंगाड़ी कमाव छरी न आवछरी लाज ।
जीजी ये जीजी की जीजी मांकाला दादा की जीजी,
अरें थारे इस्युं खीयां जीती ज्येरें आज ॥ २ ॥

(जवाव औरत की तर्फ से)

क्यूंरे मोल्या उठ्यावड़ा वूज वालो कुण छरेंतू,
मांकी खसी होगी जंडे जावांगा हमेस ।

राम होतो गेवी लोडा जेल में खना दीज्येरे,
रांड्या रोरे राज में तू दला दीज्ये रेस ।
वाल्या वाल् डाडी का उपाड़ ल्यूंगी वापखाणां,
भोगनां का राल्या वांदा क्यूं सूजी रे भूंड ।
तकादो भेत घताड़े दांत से तुड़ावेगो तूं,
माजनां सूं रेज्ये देज्ये फुड़ावेगो मूंड ॥ ३ ॥

(लाचारी मर्द की तरफ से)

बोलवा की वांण छे बुरो मानजाली त्रावली छे,
अरे भांणकी तूं भारचो मांड्यो छे अन्याय ।
प्रांण प्यारी ओठी लेल्यूं गोध मांकी कोन्या पूंछ,
देल्ये गाली वाली मांनें खाण की छे दाय ।
थांकी ज्यो खसी छे जीमें मांकी बी खसी छे थेट,
मोटो पेट कीज्ये मूंनें दीज्ये गना माफ ।
तूं जिसी तो तूंई छेरी कालो मूंडो काडवा में,
सालो छे कसूर मांको जांणवा में साफ ॥ ४ ॥
आग लागी बुझा लेवो ईमें छे आंपा की आछी,
ध्यावसी तो आथ कोन्या वचारवो थोक ।
ओज्यूं ऊंडी सोचवा की ओरांको न दायो ईंठ,
लुगाई थे मांकी छोजी मेछां थांका लोक ।
रात की रात में ओठा आजाज्यो रांमकूंरांजी,
बात की बात में कांई बसांवांछां बेर ।

थमो तो तावड़ो थे दादा का पाछे मोज थांकी,
खूंसड़ी तो पेर जाज्यो पगां मांई खेर ॥ ५ ॥

(कवी ऊमर बोले)

जारे गोला गधेड़ा गिंवार गेली रांड जाया,
पूंछ विनां पड़ायो क्यूं माजनों पलीत ।
थारी मा नें छेड़ी क्यूं ही छेड़ी तो क्यूं छोडदी थें,
गई रांड लांठां लारे गारे वठो गीत ।

(जवाव जैपुरिया का)

जवानीं दीवांनी छे अमानीं में सुजांण छांजी,
नेकी वी निभावां छां अयांण ओछा नांय ।
खावा पीवा सोवा का खुसी का खेल खेल लेगी,
छोरा छोरी होला ज्यां भेल लेगी छांय ॥ ६ ॥
सरस्ते वगाड़ी अगाड़ी वावू जी साय,
राज माथे रोता डोलां डीलां हुया राड़ ।
मारवाड़ा कोन्यांछां विचारयां विनां मारां मरां,
ढंग सूं चाला छां ईंडे धरणयां की ढूंढाड़ ॥

(कवित्त)

लींग कां चडावे लाडू भाटे कां लगावे भोग,
भवें पुजावे भग स्वामी सेल सोधां की ।
मुरदे मनावे मूढ जसोदा जनावे जापो,
पिता को बनावे प्रेत खुसी खेल खोधां की ॥

थम्ब नरसिंघ थायो खींच करमां को खायो,
अवास्त्रां पधार आयो वात वेल वोदों की ।
गंगा गयां पाप गयो गया गयां भई गती,
ग्यानी को सुनाऊं गपें गपी गेल गोदों की ॥ १ ॥

(छप्पय)

तलनें सींचे तोय सदा तरवरनें सूको,
भाटा जड़नें भोग भला चेतननें भूको ।
मुर संडां नें माल गरीबां देसठ गारी,
आं मरदांरी आज बुद्धि नें हे वलिहारी ।
गुरु गरजी नर गेला निलज छिकमद मंसां छेड़ में,
धन धर्म सुकर्म खोयो धरा भाटां सिर भट भेड़ में ॥२॥

(दोहा)

देवी नह कोई देवता, सती नह कोई सूर ।
दाता रह्यो न देस में, कल जुग भयो करूर ॥ १ ॥

(अनार्य्यों के लक्षण)

(कवित्त)

कुटिल कुराही कांमी कातुर कलंकी कूरे,
जारी चोर जवारी जहांन में न जैसे हैं।
विटल विभचारी वांमी वेलज्ज विवादी वृथा,
वेदतें विहीन वाक वात के वके सेहैं।
परधन पराईदार पार वे पखंडी पूरे,
पापतें डरे नहीं पुकारे पैसे २ हे।
अधम अन्याई ईश आज्ञा के उलंधी अघी,
असेही जो आर्य्य तो अनार्य्य कहो कैसे हैं॥ १॥
साचे को सतावे झूठे मदत जतावे जान,
हिये वात आंन आंन लावत जवान में।
कहे कीन कांन स्यांन चूक सो वकांन वके,
तांन मांन आन ध्यांन राखत टकान में।
मान अपमान कोन ध्यान हे जिहांन वीच,
दांन वीर ताईकीन वांन हे वदांन में।
हिये आंख हेरो ईश करेगो निवेरो,
तव व्हेहे सुख मेरो सो कलम कहे कांन में॥ २॥

(दोहा)

रांडोलां रा राज में, रुलगी भूकां रेत।
सूंकां नित सीरा करे, चूकां दण्ड न देत॥ १॥

(सोरठा)

बेईजती बरतीह रही घणां विन राज में ।
धणियां सूं धरतीह जाती करे जवारड़ा ॥ १ ॥

(छप्पय)

खोला हूता खूब भिड़े भायां सूं भाई,
लेणां में दे लोल् वरष कटि में बोलाई ।
मौरी सालो मांन खूब खर्चे अरु खावे,
दे आगो तर दांन करे दस खत निर दावे ।
लेवे वौरा लाटनें भोग लावरा भोग,
जुग पांचू मिलिया जबर जमी जांणरा जोग ॥ १ ॥

(दोहा)

जावणरा जोवे जतन, आवण रो नहिं एक ।
जमी जमाई जावतां, दहे कालजो देख ॥ १ ॥
वणिक भगत वेश्या विदर, धसे पञ्जौली धीस ।
धन इज्जत विद्या धर्म, विगड़े विसवा वीस ॥ २ ॥

(किसनिया रा सोरठा)

केईक नर केई नार हट वाड़े भेला हुवे ।
सपनां ज्यूं शंशार किसी विहांणों किसनिया ॥ १ ॥
आवे वस्तु अनेक हदनांणों गांठे हुवे ।
अकलन आवे एक क्रोड़ां रुपयां किसनिया ॥ २ ॥
हाथी हींडत देख लख कुकर लव २ मरे ।
वड पण तणों विवेक क्रोधन आंणों किसनियां ॥ ३ ॥

लावां तीतर लार हेडाऊ हांके घणां ।
सिघांतणी सिकार केईक खेले किसनियां ॥ ४ ॥
हिकमत करो हजार गढ पतिया जाचो घणां ।
धीरज मिलसी धार कर्म प्रमांण किसनिया ॥ ५ ॥
सोनो घड़े सुनार कन्दोई खाजा करे ।
भोगे भोगण हार कर्म प्रमाणें किसनिया ॥ ६ ॥

(राजिया रा सोरठा)

गुण ओगण जिण गांव सुणें न कोई सांभले ।
मच्छ गला गल मांह रहणों मुसकल राजिया ॥ १ ॥
किनोड़ा उपकार नालायक जांणें नहीं ।
लोकां उणरी लार रंजी उडावो राजिया ॥ २ ॥
मुख पर मींठी बात घट माहें खोटा घड़े ।
इसड़ां सूं इकलास राखीज्ये नहिं राजिया ॥ ३ ॥
पल में करले प्यार पल २ में पलटे परा ।
यह मतलबरा यार रांम बचावे राजिया ॥ ४ ॥
केईक कीनां कांम आछोड़ी आंणी उखत ।
दमड़ां लोभी दांम रंजे न बातां राजिया ॥ ५ ॥
अदभुत घसक अपार अण दींठी आंणें इसी ।
उड़ती फिरे अकाश रंजन लागे राजिया ॥ ६ ॥
गह वरियो गज राज मद छकियो चाले मते ।
कुकरिया विन काज रोय भुसे क्यूं राजिया ॥ ७ ॥

मतलबरी मनवार चुप के लावे चूरमां ।
मतलब विन मनवार राव न पावे राजिया ॥ ८ ॥
खोदा अन जल खाय खल तिणरी खोटी करे ।
जड़ा मूल सूं जाय राम न राखे राजिया ॥ ९ ॥
जण २ रो मुख जोय नहचे दुख कहणों नहीं ।
काडन दे वित कोय रीरायां सूं राजिया ॥ १० ॥
हिम्मत किम्मत होय विन हिमत किमत नहीं ।
आदर करेन कोय रद कागद ज्यूं राजिया ॥ ११ ॥
नभ चर विहंग निरास विन हीमत लाखां वहे ।
वाज त्रिस कर वास रजपूती सूं राजिया ॥ १२ ॥

(दानियारा सोरठा)

सब से बुरो सुनार वांणियो तो उण सूंई बुरो ।
दरजी दांनस दार दीठोन कोई दांनियां ।
पाखंडी अण पार घर कर धर लुटे घणा ।
स्वार्थ विन संसार दीठो न साधू दांनियां ॥ २ ॥

(कविवर देथा जुगती दांन जी कृत्य)

(महाराजा श्री १०८ ईडर नरेश की प्रशंसा में)

॥ दोहा ॥

बखता जसा अंजा विजा, मांन गुमन मा बाप।
तारस कुल तखतेसरे, पारस तूं परताप ॥ १ ॥
दूजा कारस देखिया, एक सुधारस आप।
मरुधर वारस जन मियो, पारस तूं परताप ॥ २ ॥
छतरी चरावे छारियां, धांन न खावे धाप।
मोरां रा वटण लगावे, पातल रो परताप ॥ ३ ॥
पी दारू पर वारता, करजा में कल काप।
ठेको हूतां ठीक हुई, पातलरो परताप ॥ ४ ॥

(छप्पय)

बाप बिगाड़े बिस्व डीकरो जगत डबोवे,
दोनूं मिलियां दुष्ट हांण एकणारी होवे।
एक हीन्दवां अधिक एक नेडो नहिं आयो,
अंगरेजां मिल उभय जगत में लाभ जणायो।
भल संग नहीं संग हे भलो धरा देन धन धांन रो,
नर चतुर होय जाणे निपट आशय ऊंमर दांनरो ॥ १ ॥

(चारणां रो धर्म)

मानें समजे माय वेंन नें समजे बाई
भूवा २ भाव भाव जो निज भोजाई।

मासी २ मांन कंन्यां नें समजे कंन्यां,
ओ चारण आचार धर्म धारे बुध धन्यां ।
बिरदाय विखे में वार घस तिका प्राण सम तांण णीं,
रजपूत तणी परणीं रसा जगतम्बा ज्यूं जांण णीं ॥२॥
गिण पृथ्वी में गन्ध पवन में जेम स्परसण,
शीतल रस जल साथ अगन में रूप ऊंनां पण ।
सुन्न माय ज्यूं शब्द शब्द में अर्थ हलेश्वर,
पिण्ड मांय ज्यूं प्राण प्राण में ज्यूं परमेश्वर ।
रग २ हि रगत छायो रहे देह रगां ज्यूं दारुणां,
छत्रियां साथ नातो छितां चोली दांवण चारुणां ॥ ३ ॥

(ईश्वर की महिमां)

जिकण चितरणी जोर गोर गुण मोर गुणायो,
सूवा मैंनां साद नियन्ता आदि सुणायो ।
रिचा पाठ अनुराग दाग दादुर दरसायो,
कर पद विन करतार सर्प सुभ सार सुझायो ।
पुनः अतः उपाधितें अदभुत अनुभव आणियों,
जग रचना जगदीशरी जुगत जुगति हम जांणियो ॥ ४ ॥

(दोहा)

करलेवे पुस्तक कुकव, छपे छिपे थल छंड ।
किल दोहा दोहा करे, दन्डक धांमें दन्ड ॥ १ ॥
जंचो फिर २ जगत में, खंचो बूडी खोर ।
वांणीं वंचो बापड़ा, ओतो संचो ओर ॥ २ ॥

(कवित्त)

पारस के परसे तैं कुदात होत सोव्रन ही,

गुटका तें नभ माय उडचो बखानें हैं ।
खञ्जन की शिखा आंजे आंन के न दृष्ट आवें,
परत हि माऊ छाँह राजा व्हे निधानें हैं ।
देवता के पूजन तें होत उग्र भागी महा,
छित्र वेलहू तें वस्तु घटयो न जानें हैं ।
जिनकी अबूझता है ऐसी ही जगत माह,
ऐसीही असत्य बातें सत्य कर मानें हैं ॥ १ ॥

भूत, प्रेत, तन्त्र, मन्त्र, जन्त्र, सबे इन को प्रभाव अती ग्रन्थन में गायो है, मैं तो वार २ यों विचार निरधार कियो कोउ व्हे अदृष्ट वातां नाह देखायो है । अपनीं प्रशंसा हेत लोकन भ्रमायवे को स्वर्गादिक लोव भय नर्क को बतायो है, मेरे तो न खञ्ज कछु झूठ न बखांनूं रञ्च सबे परपञ्च यो पण्डितन को बनायो है ॥२॥

(इति भ्रम भञ्जन)

॥ नृपमांन रचित ॥

(छप्पय)

कँवला लम्बा केस जुगत सूं पटी जमावे,
दांतां चूप दिराय भूँह जुत आंख भमावे ।
तेल फूल तम्बोल अतर फूँवो अटकावे,
खांगा पेच झुकाय लार छोगो लटकावे ।
नख चख श्रृंगार साजे निलज रांचे गलियां रातस,
परनार भोग भोगी पुरुष पग धोवे परबातरा ॥

(कवित्त)

विद्या को अधार हास्य रस को विचित्र चित्र सभा-को श्रृंगार आज सुन्य सौंन करगो। वघी रांमनन्दन थो चारण कुल तारन को मित्रता को गोरक है कोट ही वि-खरगो। बाहू युद्ध सिंहन तें जूटो केऊ वेर धीर नैंक कण्ठ पीरहू तें भूमी शीश गिरगो। गुनको जहाज कवि-राज ऊमरेस आज सबे संग लेके भवसिंधु पार तिरगो ॥१॥

यह कवित्त श्रीयुत बारहठ कविया गोरखदांनजी नें कवि के अन्त्येष्टी संस्कार के पश्चात् कहा था ॥

(विज्ञापन)

सब श्रीमान् व साधारण श्रोतागणों से सविनय निवेदन है कि कविवर ऊंमरदांनजी रचित काव्य इस पुस्तक के सिवाय किसी विषय में किसी के पास होवे वह महाशय कृपा करके आर्य्यसमाज जोधपुर के पते से भेज देवें सो द्वितीयावृत्ति में शामिल कर छपा दी जावे। और भेजने वाले सज्जनों का नाम भी धन्यवादसहित उसी के साथ प्रका-शित किया जावेगा ॥

॥ इति शम् ॥

पता—अर्जुनसिंह वर्म्मा—
आर्य्यसमाज
जोधपुर (मारवाड़)